देश विदेश की लोक कथाऐं — खट्टा मीठा जैक ः

खट्टा मीठा जैक

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Khatta Meetha Jack (Savour and Sweet Jack)
Cover Page picture : Jack Climbing the Beanstalk
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5
खट्टा मीठा जैक 7
1 आलसी जैक 9
2 जैक और उसका सोने का सुँघनी का बक्सा 15
3 जैक और बीन्स का पेड़ 33
4 जैक ने अपनी किस्मत कैसे बनायी 53
5 जैक और उसकी आश्चर्यजनक मुर्गी 58
6 साबुन साबुन साबुन 66
7 चालाक चोर जैक 72
8 आलसी जैक 96
9 मैं अगली बार ज़्यादा अक्लमन्द रहूँगा 105
10 जैक और उसके साथी 112
11 जैक और उसका मालिक 126
12 बिना आत्मा का शरीर 141

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

खट्टा मीठा जैक

बच्चों तुम लोगों ने जैक नाम के चरित्र की कई कहानियॉ पढ़ी होंगी जैसे जैक और बीन्स का पेड़, आलसी जैक आदि आदि। जैक की ऐसी कई कहानियॉ हैं। हमने जैक की ऐसी ही कुछ कहानियॉ यहॉ एक जगह इकट्ठा कर के रखी हैं। इनको पढ़ें और देखें कि जैक अपनी ज़िन्दगी में क्या क्या करता है। बहुत सारी कहानियॉ इसकी बेवकूफियों वाली हैं तो कुछ कहानियॉ अक्लमन्दी की भी हैं। तो लो पढ़ो खट्टे मीठे जैक की खट्टी मीठी कहानियॉ।

ये कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

1 आलसी जैक[1]

ब्रिटेन की यह कहानी एक बहुत ही मजेदार और हॅसी की कहानी है। इस कहानी में देखो कि एक बेवकूफ लड़का किस तरह एक अमीर आदमी की बेटी को हॅसा कर उससे शादी कर के खुद अमीर बन जाता है।

एक गॉव में एक स्त्री अपने एकलौते बेटे जैक के साथ रहती थी। जैक बहुत ही आलसी था। न तो वह घर में ही मॉ की कोई सहायता करता था और न वह बाहर ही कोई काम करता था। उसकी इस आदत से उसकी मॉ बहुत दुखी थी।

एक दिन गुस्से मे आ कर उसने जैक से कहा — "अगर कल से तुमने कोई काम शुरू नहीं किया तो मैं तुम्हें घर से बाहर निकाल दूॅगी।"

अब जैक तो यह सुन कर घबरा गया सो अगले दिन ही वह कुछ काम ढूॅढने चल दिया।

काम ढूॅढते ढूॅढते वह एक किसान के पास पहुॅचा और उसके पास उसने एक पैंस के लिये पूरे दिन काम करने का निश्चय किया।

[1] Lazy Jack – a folktale from England, Europe.
[It is listed by Mike Lockette on his page http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=41 as a Natie American folktale from Appalachian Region, USA]

शाम को बड़ी खुशी के साथ जैक ने वह पैंस का सिक्का किसान से लिया और घर चला।

आज वह बहुत खुश था। आज उसने पहली बार पैसा अपनी मेहनत से कमाया था। पहले उसने पैसा कभी रखा नहीं था सो उसको पैसा रखना आता भी नहीं था इसलिये वह उस पैनी को उछालता हुआ चला आ रहा था।

चलते चलते वह एक पुल पर से गुजरा जो एक नदी के ऊपर बना हुआ था। पैनी उछल कर नदी में जा गिरी और नदी में खो गयी। वह दुखी दुखी अपने घर आया।

जब उसने अपनी मॉ को यह बताया तो वह बोली — "तुमको वह पेनी जेब में रख कर लानी चाहिये थी बेटा।"

जैक कुछ दुखी आवाज में बोला — "अच्छा, अबकी बार मैं ऐसा ही करूँगा।"

अगले दिन वह एक ग्वाले के पास काम करने के लिये गया। शाम को ग्वाले ने जैक को उसके काम के बदले में एक जग भर कर दूध दिया। उसने अपनी मॉ की सलाह के अनुसार उसको अपनी जैकेट की बड़ी जेब में भर लिया।

जाहिर है कि घर पहुँचने से पहले पहले ही वह दूध बिखर चुका था। घर पहुँचने पर जब उसकी मॉ ने पूछा कि "आज तुमको क्या मिला?"

तो उसने उसको बताया कि आज उसको दूध मिला। मॉ ने पूछा कि "दूध कहॉ है?"

तो उसने उसको बताया कि वह उसके कहे अनुसार अपनी जेब में रख कर लाया था पर अब वह पता नहीं कहॉ है।

उसकी मॉ ने कहा — "बहुत ही बेवकूफ हो तुम, तुमको वह दूध सॅभाल कर सिर पर रख कर लाना चाहिये था।"

जैक बोला "अच्छा मॉ, अगली बार से मैं ऐसा ही करूॅगा।

अगले दिन वह फिर किसी खेत पर काम करने गया। वहॉ सारा दिन काम करने के बाद मजदूरी के रूप में उसे क्रीम चीज़ मिली। तो अपनी मॉ के कहे अनुसार उसे अपने सिर पर रख लिया।

लेकिन यह क्या? उस दिन कड़ी धूप होने की वजह से घर आते आते वह सारी क्रीम चीज़ पिघल गयी और उसका चेहरा, बाल और कपड़े सभी खराब हो गये।

उसकी मॉ ने गुस्से में कहा — "जैक, तुम्हें अक्ल कब आयेगी। उसको तुम्हें हाथों में सॅभाल कर लाना था।"

जैक ने फिर वायदा किया कि अगले दिन से वह वैसा ही करेगा।

अगले दिन वह एक डबल रोटी बनाने वाले के पास गया। शाम को काम के बदले में उसे एक बिल्ली मिली। वह उसे सॅभाल

कर हाथों में ला रहा था कि रास्ते ही में उसने कुलमुलाना शुरू कर दिया और वह इतना ज़्यादा कुलमुलाई कि उसके हाथों से छूट कर भाग गयी।

खाली हाथ जब वह घर पहुँचा तो उसकी माँ फिर बहुत नाराज हुई और बोली — "तुम कैसे आदमी हो, वह बिल्ली थी तुमको उसे उसके गले में रस्सी बाँध कर लाना था।"

जैक फिर बोला — "माँ, कल से मैं ऐसा ही करूँगा।"

अगले दिन वह काम करने के लिये एक कसाई की दूकान पर गया। उस दिन शनिवार था इसलिये रविवार को खाने के लिये उसने उसको बकरे का एक बहुत ही बढ़िया कन्धा दिया।

जैक उसको देख कर बहुत ही खुश हुआ कि आज उसको बहुत बढ़िया खाना मिलेगा।

उसने अपनी माँ के कहे अनुसार बकरे के उस कन्धे में एक रस्सी बाँधी और उसे खींचता हुआ घर की तरफ चल दिया।

जाहिर है जब तक वह उसे ले कर घर पहुँचा वह टुकड़ा बिल्कुल ही बेकार हो चुका था।

अबकी बार उसकी माँ ने उसे बहुत डाँटा और कहा — "बेवकूफ लड़के, तुम बहुत ही बेकार आदमी हो। रोज कमाते हो और रोज ही किसी न किसी तरीके से उसे बेकार कर देते हो।

अब केवल बन्द गोभी ही रखी है मेरे पास कल के लिये, वही खाना तुम कल। तुमको यह गोश्त अपने कन्धे पर रख कर लाना था।"

जैक बहुत ही शर्मिन्दा हो कर बोला — "अच्छा मॉ, अगली बार मैं ऐसा ही करूँगा।"

सोमवार को जैक फिर ग्वाले के पास काम के लिये गया। अबकी बार उसे अपने काम के बदले में एक गधा मिला।

काफी परेशानी के बाद वह उस गधे को अपने कन्धे पर रखने में कामयाब हो सका। वह उसे ले कर धीरे धीरे सॅभाल कर चलने लगा।

उसके घर के रास्ते में एक बहुत ही अमीर आदमी का घर पड़ता था। उसके एक इकलौती बेटी थी। अमीर की बेटी बहुत सुन्दर थी पर वह गूँगी थी।

अपने जीवन में वह कभी नहीं हॅसी थी। डाक्टरों का कहना था कि यदि दूसरा कोई उसे हॅसा सके तो शायद वह बोलने लायक हो सके।

उस अमीर के घर में उसको हॅसाने के लिये रोज ही कोई न कोई नाच, हॅसी के नाटक, मजाकिया कहानियॉ, मजाकिया गाने आदि होते रहते थे परन्तु उस लड़की के चेहरे पर अभी तक एक हल्की सी मुस्कुराहट भी नहीं आयी थी।

आखिर उस अमीर ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो कोई उसकी बेटी को हॅसा देगा वह उसी से अपनी बेटी की शादी कर देगा और उसी को अपनी सारी धन दौलत भी दे देगा।

और दिनों की तरह से उस शाम को भी वह लड़की खिड़की में उदास बैठी बाहर की ओर देख रही थी कि उसको एक अजीब चीज़ देखने को मिली।

एक जवान लड़का एक ज़िन्दा गधे को अपने कन्धों पर रख कर ले जा रहा था। यह देखते ही वह लड़की ज़ोर से हॅस पड़ी और तब तक हॅसती रही जब तक कि उसकी ऑखों से ऑसू नहीं निकल पड़े।

जब अमीर ने अपनी बेटी की हॅसी की आवाज सुनी तो वह तुरन्त भागा भागा आया और जैक को अन्दर बुलाया।

वायदे के मुताबिक उसने अपनी बेटी की शादी जैक से कर दी और अपनी सारी धन सम्पत्ति उसको दे दी। जैक अपनी ससुराल चला गया और अब उसे काम करने की कोई जरूरत नहीं थी।

वहॉ जा कर उसने अपनी मॉ को भी बुला लिया और सब आराम से रहने लगे।

2 जैक और उसका सोने का सुँघनी का बक्सा[2]

एक बार की बात है, बड़ा अच्छा समय था वह, हालाँकि वह न तो तुम्हारा समय था न मेरा समय था और न किसी और का समय था बस एक समय था कि कहीं एक बूढ़ा और उसकी बुढ़िया रहते थे। उनके एक बेटा था।

वे एक बहुत बड़े जंगल में रहते थे। उनके बेटे ने अपने माता पिता के अलावा अपनी ज़िन्दगी में कोई और आदमी नहीं देखा था। पर उसे मालूम था कि उसके माता पिता और उसके खुद के अलावा भी दुनियाँ में और बहुत सारे लोग रहते थे। क्योंकि उसके पास बहुत सारी किताबें थीं जिनमें वह उनके बारे में पढ़ता रहता था।

एक दिन जब उसका पिता लकड़ी काट रहा था तो उसने अपनी माँ से कहा कि वह कहीं दूसरी जगह जा कर अपनी कमाई खुद करना चाहता है। इसके अलावा वह उन दोनों के अलावा दुनियाँ के दूसरे लोगों से भी मिलना चाहता है।

उसने आगे कहा — "यहाँ तो मुझे इन पेड़ों के अलावा और कुछ दिखायी नहीं देता। मुझे लगता है कि अगर मैंने कुछ और नहीं देखा तो मैं पागल हो जाऊँगा।"

---

[2] Jack and His Golden Snuff-Box – a folktale Taken from the book "English Fairy Rales " collected by Joseph Jacobs, 1892. Book available at : https://www.worldoftales.com/English_fairy_tales.html

जब वह यह सब बातें अपनी मॉ से कर रहा था उस समय उसका पिता घर से बाहर था।

बुढ़िया ने अपने बच्चे से उसके वहॉ से जाने से पहले कहा — "मेरे बच्चे अगर तुम जाना ही चाहते हो तो यह तुम्हारे लिये अच्छा ही है। भगवान हमेशा तुम्हारे साथ रहे।" जब उसने यह सब उससे कहा तो वह तो उसके बारे में अच्छा ही अच्छा सोच रही थी।

"पर हॉ एक मिनट रुको। तुम रास्ते के लिये कौन सा केक ले जाना पसन्द करोगे – एक छोटा केक मेरे आशीर्वाद के साथ या एक बड़ा केक मेरी बद्दुआ के साथ।"

"ओह मेरी प्यारी मॉ। मेरे लिये एक बड़ा केक बना देना क्योंकि क्या पता रास्ते में मुझे बहुत भूख लगे।"

सो मॉ ने एक बड़ा केक बना कर उसे दे दिया। फिर वह अपने घर के ऊपर गयी और जहॉ तक वह उसको देख सकी वहॉ तक उसको बद्दुआ ही देती रही।

रास्ते में उसको उसका पिता मिल गया तो उसने पूछा — "अरे तुम कहॉ जा रहे हो मेरे बेटे?"

जब लड़के ने अपने पिता को भी वही बात बतायी जो उसने अपनी मॉ से कही थी तो उसके पिता ने कहा — "मुझे तुम्हें जाते हुए देख कर बहुत दुख हो रहा है पर जब तुमने जाने की ठान ही ली है तो तुम्हारे लिये यही अच्छा है कि तुम चले जाओ।"

लड़का अभी ज़्यादा दूर नहीं गया था कि उसके पिता ने उसको आवाज लगायी। उसने अपनी जेब से सोने का एक सुँघनी का बक्सा निकाला और उसे देते हुए कहा — "लो यह बक्सा लो और इसे अपनी जेब में रख लो। तुम इसको तब तक किसी हालत में नहीं खोलना जब तक तुम मरने की हालत तक न पहुँच जाओ।"

सुँघनी का बक्सा उसने अपने पिता से ले कर अपनी जेब में रखा और वहाँ से चल दिया। वह चलता रहा चलता रहा जब तक कि वह थक नहीं गया और भूखा नहीं हो गया। उसने अपनी सारी केक तो सड़क पर ही खा कर खत्म कर ली थी।

अब तो रात होने वाली थी। उसको आगे का रास्ता भी ठीक से दिखायी नहीं दे रहा था। पर दूर उसने एक रोशनी चमकती देखी।

वह वहाँ तक पहुँच गया। उसको उस मकान का पिछला दरवाजा मिल गया सो उसने वह दरवाजा खटखटाया। एक नौकरानी दरवाजा खोलने आयी और उसने उससे पूछा — "क्या बात है। क्या चाहिये तुम्हें?"

लड़के ने कहा — "चलते चलते मुझे रात हो गयी है। रात को सोने की जगह चाहिये।"

नौकरानी उसको अन्दर आग के पास ले गयी। वहाँ ले जा कर उसने लड़के को भर पेट खाना दिया – मॉस रोटी मक्खन बीयर।

जब वह खाना खा रहा था तो उसने देखा कि एक नौजवान लड़की वहॉ उसको देखने के लिये आयी। उन दोनों को देखते ही एक दूसरे से प्यार हो गया। यह बताने के लिये वह लड़की अपने पिता के पास भागी गयी।

उसने उससे कहा — "पिता जी। एक सुन्दर नौजवान लड़का पीछे वाले रसोईघर में बैठा है।" तुरन्त ही उसका पिता वहॉ आया। उससे कुछ सवाल किये और उससे पूछा कि वह क्या कर सकता था। जैक बोला "कुछ भी।"

वह आदमी उससे बोला — "अगर तुम कुछ भी कर सकते हो तो कल सुबह तक मुझे अपने घर के सामने एक झील चाहिये और उस झील में तैरते हुए कुछ लड़ाई वाले बड़े वाले पानी के जहाज़ चाहिये जो मुझे सुबह सुबह शाही सलामी दें।

और उसमें जो आखिरी तोप छूटे उससे मेरी बेटी के पलंग की एक टॉग टूट जानी चाहिये। अगर तुमने यह नहीं किया तो तुमको अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

जैक बोला — "ठीक है।" और सोने चला गया। बिना कुछ बोले मन ही मन में अपनी प्रार्थना की और सो गया। वह सुबह आठ बजे तक सोता रहा। अब तो उसके पास सोचने का भी समय नहीं था। अब वह क्या करे।

कि तभी उसे अपने पिता के दिये हुए सोने के सुँघनी के बक्से की याद आयी। उसने सोचा "मैं तो मौत के कभी इतनी पास नहीं था जितना कि मैं अब हूँ।"

सो इसने अपनी जेब में हाथ डाला सोने का सुँघनी का बक्सा निकाला और उसे खोला तो उसमें से तीन लाल छोटे आदमी निकल पड़े और जैक से पूछा — "हमारे लिये क्या हुक्म है।"

जैक बोला — "मुझे इस घर के सामने एक बहुत बड़ी झील चाहिये उसमें कुछ बड़े वाले लड़ाई के जहाज़ चाहिये। और उसमें से एक सबसे बड़ा जहाज़ शाही सलामी दे और उसके आखिरी तोप की आवाज से लड़की के पलंग की एक टॉग टूट जानी चाहिये।"

तीनों ने कहा "ठीक है। तुम सोओ।"

जैक के मुँह से अभी ये शब्द निकले ही थे कि उन्हें क्या करना है कि उसने सबसे बड़े लड़ाई के जहाज़ से उसने धड़ाम धड़ाम की आवाजें सुनी।

जैक तो अपने बिस्तर से कूद कर उछल गया। वह बाहर देखने के लिये खिड़की पर पहुँचा तो सामने का दृश्य देख कर हैरान रह गया। ऐसा दृश्य तो उसने अपने माता पिता के साथ रहते हुए पहले कभी नहीं देखा था।

जब तक जैक कपड़े पहन कर तैयार हुआ और अपनी प्रार्थना की और मुस्कुराता हुआ नीचे आया क्योंकि उसको अपने ऊपर

बहुत गर्व हो रहा था क्योंकि जो उसने कहा था वह सब इतनी अच्छी तरह से किया गया था।

लड़की का पिता वहाँ आया और उसने उससे कहा — "मुझे यह देख कर बहुत अच्छा लगा कि तुम यह सब कर सके और मैं अब यह कह सकता हूँ कि तुम बहुत होशियार हो। आओ चले कुछ नाश्ता कर लो। फिर इसके बाद दो काम तुम्हें और करने हैं। तब तुम मेरी बेटी से शादी कर सकते हो।"

जैक उसके साथ नाश्ता करने चला गया। वहाँ उसने नाश्ता किया एक पल लड़की को देखा लड़की ने भी उसे देखा।

दूसरा काम उस आदमी ने जैक से करने के लिये कहा कि वह अगले दिन सुबह के आठ बजे तक उसके घर के आसपास के चारों तरफ मीलों तक बड़े बड़े पेड़ों को गिरवा दे। यह काम भी हो गया। इस काम से भी वह आदमी बहुत खुश था।

आदमी आगे बोला — "अब तीसरा काम यह है कि तुम मेरे लिये एक बहुत बड़ा महल बनवाओ जो बारह सोने के खम्भों पर खड़ा हो और उसमें कई फौजें ड्रिल कर रही हों। सुबह आठ बजे उनका औफीसर कहे "शोल्डर अप।"[3]

जैक ने कहा — "ठीक है।"

[3] "Shoulder Up"

जब तीसरी और आखिरी सुबह हुई तो आदमी का बताया हुआ तीसरा काम भी खत्म हो गया था। उसके बाद उस आदमी की बेटी से उसकी शादी हो गयी।

पर यही सब कुछ नहीं था इससे बुरा तो अब आने वाला था।

लड़की के पिता ने शिकार की एक पार्टी बनायी और देश के सारे लोगों को शिकार के लिये बुलाया। साथ में अपने महल के लोगों को भी। उन सबके साथ जाने के लिये इस समय तक उसके पास एक नया घोड़ा भी आ गया था और एक लाल रंग की पोशाक भी।

उस दिन उसके नौकर ने शिकार पर जाने के लिये उसको कपड़े पहनाने के बाद उसके कोट की एक जेब में हाथ डाल दिया। उस जेब में उसका सुँघनी का बक्सा रखा था। उस आदमी ने वह निकाल लिया। जैक उसको गलती से पीछे छोड़ गया था।

अब उस आदमी ने उस बक्से को खोला तो तीन लाल रंग के छोटे आदमी उसमें से निकल आये और बोले — "हमारे लिये क्या हुक्म है।"

नौकर ने उनसे कहा — "मैं यह चाहता हूँ कि यह महल यहाँ से हट कर दूर समुद्र के उस पार चला जाये।"

तीनों आदमियों ने कहा "ठीक है। क्या तुम भी इसके साथ ही जाना चाहते हो।"

"हाँ।"

"तो उठो।" और वे सब उस महल को ले कर समुद्र के उस पार बहुत दूर चले गये।

जब शिकारी पार्टी शिकार से वापस आयी तो उनको बारह सोने के खम्भों पर खड़ा महल कहीं दिखायी नहीं दिया। वह तो गायब हो चुका था। जो लोग उसको देखने के लिये आये थे क्योंकि वे भी उसको नहीं देख पाये थे सो सब बहुत निराश हुए।

अब उस बेवकूफ जैक को धमकी दी गयी कि लड़की के पिता को इस परेशानी में डालने के लिये उसकी सुन्दर पत्नी को उससे ले लिया जायेगा। लेकिन फिर पिता ने जैक से एक समझौता किया।

उसने जैक को उसको ढूँढने के लिये बारह महीने और एक दिन दिया कि वह उसको उतने समय में ढूँढ निकाले... ।

जैक अपने घोड़े पर सवार हुआ कुछ पैसे लिये और महल ढूँढने चल दिया।

अब बेचारा जैक महल ढूँढने जा रहा है। वह पहाड़ियों पर चढ़ा घाटियों में उतरा जंगलों से गुजरा जानवरों के चरागाहों से गुजरा। वह बढ़ता चला गया बढ़ता चला गया कि आखीर में वह एक ऐसी जगह आ पहुँचा जहाँ दुनियाँ भर के चूहों का छोटा सा चूहा राजा रहता था।

महल के दरवाजे पर एक बहुत छोटा सा चूहा सन्तरी की जगह खड़ा था। जब जैक अन्दर जाने लगा तो उसने उसे रोका। जैक ने पूछा — "राजा साहब कहाँ रहते हैं। मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।"

इस चूहे ने उसको एक दूसरे चूहे के साथ अन्दर भेज दिया। राजा ने जब जैक को देखा तो उसने उसे अन्दर बुलाया और उससे पूछा कि इस रास्ते से वह कहाँ जा रहा था।

जैक ने उसे सब सच सच बता दिया। कि उसका एक बहुत बड़ा महल खो गया है और वह उसी को ढूँढने के लिये निकला है। इस काम के लिये उसके पास बारह महीने और एक दिन है। जैक ने फिर पूछा "क्या आपको पता है कि वह कहाँ है।"

राजा चूहा बोला — "नहीं मुझे तो नहीं पता है पर मैं दुनियाँ भर के चूहों का राजा हूँ। मैं कल सुबह सब चूहों को बुलाऊँगा हो सकता है कि वे इस बारे में कुछ जानते हों।"

उसके बाद जैक ने वहाँ बहुत अच्छा खाना खाया और आराम से सो गया। सुबह उठ कर वह और राजा दोनों मैदान में गये। वहाँ पहुँच कर राज चूहे ने अपने सारे चूहों को बुलाया और उनसे पूछा कि क्या वे किसी ऐसे महल को जानते थे जो सोने के बारह खम्भों पर खड़ा हो।" छोटे छोटे चूहों ने मना कर दिया कि उन्होंने ऐसा कोई महल नहीं देखा।

तब राजा चूहे ने कहा कि उसके दो भाई और हैं। उनमें से एक मेंढकों का राजा है और दूसरा भाई जो सबसे बड़ा है वह चिड़ियों का राजा है। अगर तुम वहाँ जाओ तो वे शायद तुम्हें उसके बारे में कुछ बता सके।"

राजा चूहे ने आगे कहा — "जब तक तुम वापस आते हो अपना घोड़ा यहीं छोड़ जाओ और हमारा बहुत बढ़िया वाला घोड़ा ले जाओ। और यह केक लो मेरे भाई को दे देना। इसको देख कर वह जान जायेगा कि इसे तुम्हें किसने दिया है। उससे यह कहने की ध्यान रखना कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ उसे याद करता हूँ और उससे मिलना चाहता हूँ।"

जैक ने राजा चूहे से हाथ मिलाया केक ली तेज़ घोड़े पर बैठा और अपने रास्ते चल दिया। जब जैक महल के फाटक से गुजर रहा था तो सन्तरी चूहे ने पूछा कि क्या वह भी उसके साथ चले।

जैक ने कहा — "नहीं। फिर मैं राजा के साथ परेशानी में पड़ जाऊँगा।"

छोटा चूहा बोला — "तुम्हारे लिये यह ज़्यादा अच्छा रहेगा अगर तुम मुझे अपने साथ ले चलो तो। हो सकता है कि मैं तुम्हारे लिये तुम्हारे बिना जाने तुम्हारा ही कुछ भला कर दूँ।"

"ठीक है आ जाओ।"

चूहा कूद कर घोड़े की टाँगों पर चढ़ कर जैक तक पहुँच गया और जैक ने उसे अपनी जेब में रख लिया। अब जैक सन्तरी चूहे को अपने जेब में ले कर चल दिया। उसको तो बहुत दूर जाना था और आज तो उसका पहला दिन था।

आखिर उसको राजा चूहे के राजा मेंढक भाई की जगह मिल गयी। वहा उसको एक मेंढक सन्तरी की जगह खड़ा मिल गया। उसके कन्धे पर बन्दूक रखी हुई थी।

उसने भी जैक को अन्दर जाने से रोका पर जैक ने जब कहा कि उसको राजा से मिलना है तो उसने उसको जाने दिया।

जैक अन्दर के दरवाजे तक गया राजा मेंढक उससे मिलने के लिये बाहर तक आया और उससे पूछा कि उसे उससे क्या काम है। जैक ने उसको अपनी सारी कहानी शुरू से ले कर आखीर तक बता दी।

राजा मेंढक ने उसको अन्दर बुला लिया। उस रात उसने जैक के लिये एक पार्टी का इन्तजाम किया।

अगले दिन सुबह उसने एक अजीब सी आवाज निकाली और दुनियॉ भर के सारे मेंढकों को वहॉ इकट्ठा कर लिया। उसने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने कोई ऐसा महल देखा है जो सोने के बारह खम्भों पर खड़ा हो।

उन्होंने अजीब सी आवाज में टर्र टर्र बोल दिया – नहीं।

वहॉ से जैक को दूसरा घोड़ा मिल गया और एक और केक मिल गयी तीसरे भाई के लिये जो सब चिड़ियों का राजा था। जब जैक उस महल के फाटक से बाहर जा रहा था तो सन्तरी मेंढक ने उससे पूछा कि क्या वह उसके साथ चल सकता है।

जैक ने पहले तो उसे मना कर दिया पर फिर उसे भी साथ में ले लिया। उसको उसने दूसरी जेब में रख लिया और अपनी लम्बी यात्रा पर फिर से चल दिया। जितनी दूर वह पहले दिन चला था इस बार वह उससे तीन गुना दूर चला।

खैर उसको वह जगह मिल गयी जहॉ चिड़ियों का राजा रहता था। वहॉ सन्तरी की जगह एक बहुत सुन्दर चिड़िया बैठी थी। उसने जैक को अन्दर जाने से रोकने की कोई कोशिश नहीं की उसने उसको अन्दर जाने दिया।

अन्दर जा कर उसने चिड़ियों के राजा से बात की और उसे अपने महल खोने की पूरी कहानी सुना दी। राजा चिड़े ने उसे खाना खिलाया और सोने भेज दिया। अगले दिन उसने एक आवाज निकाल कर सब चिड़ियों को बुलाया।

उसने उनसे पूछा कि क्या उनमें से किसी ने कोई ऐसा महल देखा है जो सोने के बारह खम्भों पर खड़ा हो। सब चिड़ियों ने मना कर दिया कि उन्होंने ऐसा कोई महल नहीं देखा।

फिर राजा ने चारों तरफ देखा और पूछा — "और वह बड़ी चिड़िया कहॉ है?"

उस बड़ी चिड़िया गरुड़[4] के लिये उन लोगों को काफी इन्तजार करना पड़ा।

[4] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

राजा ने दो छोटी चिड़ियों को उसके पास भेज कर उससे जल्दी आने के लिये कहा। और जब वह आया तो उसको बहुत पसीना आ रहा था।

राजा चिड़े ने उससे भी वही सवाल पूछा कि क्या उसने कोई ऐसा महल देखा है जो बारह सोने के खम्भों पर खड़ा हो। गरुड़ बोला — "हॉ सरकार। मैं अभी वहीं से आ रहा हूँ।"

राजा चिड़ा बोला — "वह महल इस भले आदमी का है। तुम इसको ले कर तुरन्त वहॉ वापस चले जाओ। पर ठहरो पहले कुछ खाते जाओ।"

उन्होंने एक चोर को मारा और उसका सबसे अच्छा हिस्सा गरुड़ के खाने के लिये भेज दिया जो वह रास्ते में खाता। उसको जैक को अपनी पीठ पर बिठा कर ले जाना था।

जब उन्हें वह महल दिखायी दिया तो अब उन्हें यह पता नहीं था कि वह सोने के बक्से को कैसे लें। उसे कैसे हासिल करें। चूहा बोला — "आप लोग मुझे नीचे उतार दें तो मैं उस बक्से को आपके पास ले आऊँगा।"

सो उन्होंने चूहे को नीचे उतार दिया। चूहा महल में घुस गया और वह बक्सा अपने कब्जे में कर लिया। किसी ने उसे देख लिया था तो एक बार तो वह गिर ही गया। और जब वह सीढ़ियों से नीचे आ रहा था तब तो बस वह पकड़े जाने ही वाला था। खैर वह किसी तरह से अपने काम पर हॅसता हुआ बक्सा ले कर आ गया।

जैक ने पूछा — "क्या तुम्हें वह मिल गया।"

"हॉ मिल गया। यह रहा।"

और वे सब महल को वहीं छोड़ कर वापस आ गये। जब वे चारों वापस आ रहे थे और हरा समुद्र पार कर रहे थे उनमें झगड़ा हो गया कि उस बक्से को कौन लाया और इस झगड़े में वह बक्सा समुद्र में गिर पड़ा। ऐसा जब हुआ जब सब उस बक्से को एक दूसरे के हाथों से छीन रहे थे।

मेंढक बोला — "मुझे मालूम है कि मुझे क्या करना है सो आप लोग मुझे पानी में जाने दें।"

और उन्होंने उसको पानी में जाने दिया। वह पानी में तीन दिन तीन रात रहा फिर वह बाहर आया उसकी छोटी सी नाक और मुँह बाहर दिखायी दिया।

ऊपर से तीनों ने पूछा — "क्या तुमको बक्सा मिला।"

उसने कहा "नहीं।"

"तो फिर तुम वहॉ क्या कर रहे हो।"

वह बोला "कुछ नहीं। मैं तो केवल अपनी सॉस लेने के लिये बाहर निकला था। मैं अब फिर जा रहा हूँ।" कह कर वह छोटा सा मेंढक फिर से पानी में चला गया। इस बार वह वहॉ एक दिन और एक रात रहा और उसे निकाल लाया।

इस तरह से चार दिन और चार रात वहॉ रह कर वे चिड़ियों के के राजा के घर वापस आ गये। चिड़ियों के राजा को उन सबको

देख कर बहुत खुशी हुई। उसने उनका दिल खोल कर स्वागत किया और उनसे बहुत देर तक बातें कीं।

जैक ने बक्सा खोला और उन छोटे आदमियों से वापस जा कर उस महल को वहॉ लाने के लिये कहा। और उनसे कहा कि वे इस काम को जितनी जल्दी हो सकें कर दें।

तीनों छोटे लोग वहॉ से चले गये पर जब वे महल के पास आये तो उसके अन्दर जाने से डरने लगे क्योंकि वह आदमी उसकी पत्नी और नौकर चाकर सब नाच देखने गये हुए थे। कोई भी आदमी वहॉ नहीं था सिवाय एक रसोइये और उसकी नौकरानी के।

तीनों छोटे आदमियों ने उनसे पूछा कि वे कहॉ जाना पसन्द करेंगे – यही रहना पसन्द करेंगे या उनके साथ जाना पसन्द करेंगे। उन्होंने कहा कि वे उनके साथ जाना ज़्यादा पसन्द करेंगे। तो उन्होंने कहा कि ठीक है वे जल्दी से ऊपर भाग जायें।

जैसे ही वे ऊपर पहुॅचे तो उनको वह आदमी उसकी पत्नी और नौकर चाकर आते दिखायी दिये पर तब तक देर हो चुकी थी। महल तो अपनी पूरी रफ्तार से उड़ कर चल दिया था। खिड़कियों से स्त्रियॉ हॅस रही थीं। हालॉकि उन्होंने उनको रोकने की बहुत कोशिश की पर सब बेकार।

वे नौ दिन की यात्रा पर थे। इस यात्रा में उन्होंने रविवार को पवित्र दिन रखने की पूरी पूरी कोशिश की। उन तीनों छोटे आदमियों में से एक आदमी पादरी बना दूसरा क्लर्क बना और तीसरे

ने औरगैन सँभाला। स्त्रियाँ गाने वाली बनीं। क्योंकि उस महल में एक सुन्दर सा चर्च भी था।

पर औरगैन में दो सुर गड़बड़ हो रहे थे और वे साफ पता चल रहे थे। सो एक छोटा आदमी दौड़ कर औरगेन पर गया यह देखने के लिये कि यह गड़बड़ कहाँ हो रही थी। उसने पाया कि दो स्त्रियाँ उस छोटे आदमी पर हँस रही थीं। वह बास पाइप पर अपनी टाँगें फैलाये था और अपनी दोनों बाँहें भी।

उसने छोटी से लाल सोने वाली टोपी भी पहन रखी थी जिसको पहनना वह कभी भूलता नहीं था और जो उन्होंने पहले कभी देखी नहीं थी। इसी वजह से वह महल एक बार तो समुद्र के बीच में डूबने के बहुत करीब आ गया था।

हँसी खुशी वे जैक और चिड़ियों के राजा के पास आ गये थे।

राजा तो महल देख कर बहुत ही आश्चर्यचकित रह गया।

वह सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर देखने गया। वह उसे देख कर बहुत खुश हुआ। पर जैक के बारह महीने और एक दिन खत्म होने के बहुत करीब थे। वह जल्दी से जल्दी अपनी पत्नी के पास पहुँचना चाहता था।

उसने उन तीनों छोटे आदमियों को अगले दिन आठ बजे जल्दी से जल्दी राजा के दूसरे भाई के पास चलने का हुक्म दिया। उसने कहा वहाँ वह एक रात रुकेगा। उसके अगले दिन फिर वह सबसे छोटे भाई के पास जायेंगे जो सारी दुनियाँ के चूहों का राजा था।

वहीं वह अपना वह महल उसकी रक्षा में छोड़ जायेगा जब तक उसको बुलाया न जाये। जैक ने राजा से विदा ली और उसकी मेहमाननवाजी और सहायता के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

जैक और महल फिर वहॉ से चले गये। एक रात दूसरे भाई के घर रुके। फिर वहॉ से गये तो तीसरे भाई के घर पहुँचे जहॉ उसने अपना घोड़ा छोड़ा था जब वह वहॉ से चला था।

यहा जैक ने अपना महल छोड़ा और घर चल दिया। तीन दिन रात तक तीनों भाइयो के साथ खुशी खुशी बिताने बाद अब जैक को नींद आ रही थी सो वह घोड़े पर सोया सोया हो रहा था। वह तो रास्ता भी खो जाता अगर उसको एक छोटे आदमी ने न बताया होता।

वह बहुत थका हुआ घर पहुँचा पर उन्होंने उसका बिल्कुल भी प्यार से स्वागत नहीं किया क्योंकि वह चोरी किया गया महल नहीं ढूँढ पाया था। और इससे ज़्यादा बुरी बात तो यह थी कि उसकी प्यारी पत्नी भी उसको मिलने नहीं आयी। असल में उसके माता पिता ने उसे वहॉ जाने से रोक दिया था।

पर वे उसको बहुत समय तक नहीं रोक सके। जैक ने अपनी पूरी ताकत लगा कर उन तीनों छोटे आदमियों से वह महल मॅगवा लिया।

जैक ने राजा से हाथ मिलाया और उसके शाही मेहरबानियों के लिये बहुत धन्यवाद दिया चाहे वह उसको महल देने की वजह से ही

क्यों न हो। फिर जैक ने तीनों छोटे आदमियों को हुकुम दिया कि वे उस उसके घर जल्दी से जल्दी पहुँचा दें।

जब उसकी पत्नी एक छोटे बच्चे को ले कर जैक के माता पिता से मिली तो उसके माता पिता भी बहुत खुश हुए। और फिर सब हमेशा हँसी खुशी रहे।

3 जैक और बीन्स का पेड़[5]

यह कहानी ब्रिटेन की बहुत ही मशहूर और लोकप्रिय कहानी है आशा है तुम लोगों ने इसे अपने बचपन में जरूर ही सुना या पढ़ा होगा। अगर नहीं पढ़ा या सुना तो लो इसे अब पढ़ो हिन्दी में।

यह राजा अल्फ्रेड के समय की बात है कि एक गरीब स्त्री लन्दन से दूर एक गॉव में एक झोंपड़ी में रहती थी। वह कई सालों से विधवा थी और उसके केवल एक ही बेटा था जिसका नाम था जैक।

अकेला बेटा होने की वजह से वह उसको बहुत प्यार करती थी और उसके इसी प्यार ने उसको बिगाड़ दिया था। वह किसी भी तरफ ध्यान नहीं देता था, बहुत ही लापरवाह था और जितना पैसा उसके पास होता था वह सब खर्च कर देता था।

इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी। उसकी मॉ ने ही उसको कभी नहीं रोका। धीरे धीरे सिवाय एक गाय के उसके घर की सभी चीज़ें बिक गयीं।

एक दिन वह स्त्री जैक से ऑखों में ऑसू भर कर बोली — "बेटा, तुम्हारी वजह से मुझे आज यह गरीबी के दिन देखने पड़ रहे हैं। आज मेरे पास खाने के लिये बिल्कुल भी पैसे नहीं हैं केवल यह गाय ही रह गयी है।

[5] Jack and the Beanstalk – a folktale of England, Europe.

मैं उसे अपने से अलग नहीं करना चाहती पर क्या करूँ भूखा भी नहीं रहा जाता। पर उसको बेचते हुए मुझे बड़ा दुख होता है।

यह सुन कर कुछ पल के लिये तो जैक का मन भी पिघल गया पर जल्दी ही वह ठीक हो गया। उसने अपनी माँ को अपनी गाय को पड़ोस के गाँव में बेचने की सलाह दी।

जब वह अपनी गाय को दूसरे गाँव ले जा रहा था तो उसे रास्ते में एक कसाई मिला। कसाई ने पूछा — "तुम यह गाय कहाँ ले जा रहे हो?"

जैक बोला — "मैं इसे बेचने के इरादे से ले जा रहा हूँ।"

कसाई के पास कई रंगों की कुछ अजीब सी बीन्स थीं। जैक को वे बीन्स ब्हुत अच्छी लगीं। कसाई ने ताड़ लिया कि जैक को वे बीन्स बहुत अच्छी लगीं हैं सो उसने सोचा कि जैक जैसे सीधे आदमी को ठगने का यह अच्छा तरीका है सो उसने जैक से गाय का दाम पूछा और वे बीन्स के सारे दाने जैक के हाथ पर रख दिये।

वह मूर्ख लड़का इस प्रस्ताव पर बहुत खुश हुआ। सौदा तय हो गया और जैक ने बीन्स के कुछ दानों के बदले उस कसाई को अपनी गाय बेच दी। खुशी खुशी वह घर आया और बाहर से ही माँ को आवाज देने लगा ताकि वह उसको चकित कर सके।

मॉ बाहर आयी और जब उसने बीन्स देखीं और जैक से पूरा हाल सुना तो गुस्से में भर कर उसने वे सारी की सारी बीन्स घर के बाहर फेंक दीं और अपनी किस्मत पर रो पड़ी।

बीन्स के वे दाने उड़ कर चारों ओर बिखर गये। कुछ उनमें से बागीचे में फैल गये।

स्त्री को अपनी गाय के इस तरह चले जाने का बड़ा दुख हुआ और वह बहुत निराश हुई। उनके घर में तो खाने के लिये पहले से ही कुछ नहीं था सो उस दिन वे दोनों बिना खाना खाये ही सो गये।

जैक सुबह जल्दी ही उठ गया। उसने अपने सोने के कमरे की खिड़की से कुछ अजीब सा दृश्य देखा तो तुरन्त ही भागा भागा बागीचे में गया।

उसने देखा कि बीन्स के कुछ दानों में छोटी छोटी जड़ें फूट आयी हैं और वे आश्चर्यजनक गति से बढ़ रहीं हैं। उसकी डंडियॉ बहुत मोटी हैं और देखने में उन्होंने सीढ़ी जैसी शक्ल बना रखी है।

और उसने ऊपर अपना सिर उठा कर जो देखा तो उन पौधों का तो उसे कोई ओर छोर ही नजर नहीं आ रहा था। वह कहीं बादलों में छिपा था। उसने डंडियों को हिला कर देखा तो वे काफी मजबूत थीं। वे तो हिल भी नहीं रहीं थीं।

उसने तुरन्त ही ऊपर जाने का विचार बना लिया कि शायद उसकी किस्मत कहीं ऊपर ही उसका इन्तजार कर रही हो। सो यह बताने के लिये वह मॉ के पास दौड़ा गया।

वह सोच रहा था कि यह सब सुन कर उसकी मॉ बहुत खुश होगी पर हुआ इसका उलटा। उसकी मॉ यह सब सुन कर बहुत नाराज हुई और उसने उसको ऊपर जाने से मना किया। उसने उसको धमकी भी दी पर सब बेकार।

जैक को तो जाना था सो वह चला गया। कई घंटों तक चढ़ने के बाद वह उस पेड़ की चोटी तक पहुॅच गया। थका थका सा वह चारों तरफ देखने लगा।

उसे लगा कि वह किसी अनजाने देश में आ गया है। वहॉ तो उसे सारी की सारी जगह रेगिस्तान सी नजर आयी जहॉ न कोई झाड़ी थी न कोई पेड़ था, न कोई लता थी और न कोई घास। सब कुछ उजाड़ पड़ा था।

किसी आदमी की सूरत भी नहीं दिखायी देती थी। केवल पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े इधर उधर पड़े थे सो वह एक पत्थर पर बैठ गया और अपनी मॉ के बारे में सोचने लगा।

उसे अपनी मॉ का कहना न मानने पर बहुत दुख हो रहा था पर अब क्या हो सकता था। अब उसे भूख भी लग आयी थी और वह भूख से मरना नहीं चाहता था।

कुछ खाने पीने की उम्मीद में वह वहॉ से उठ कर चल दिया कि शायद कहीं कोई मकान आदि उसे दिखायी दे जाये। तुरन्त ही उस को एक औरत दिखायी दी जो बहुत बूढ़ी थी। उसके सारे शरीर पर झुर्रियॉ पड़ी थीं। उसके फटे कपड़े साफ बता रहे थे कि वह कितनी गरीब है।

उसने जैक से पूछा — "तुम यहॉ कैसे आये?"

जैक ने उसे बीन्स के बारे में सब कुछ बताया तो वह बोली — "क्या तुम्हें अपने पिता की याद है?"

"नहीं, पर कुछ याद जरूर है क्योंकि जब मैंने अपने पिता के बारे में पूछा तब मेरी मॉ रो पड़ी थी। वह मेरे पिता के बारे में बताने से कतराती है।"

बुढ़िया बोली — "मैं तुम्हें तुम्हारे पिता के बारे में सब कुछ बताती हूॅ लेकिन कहने से पहले तुमसे यह वायदा लेना चाहती हूॅ कि जो कुछ भी मैं कहूॅगी तुम वही करोगे क्योंकि मैं एक परी हूॅ। अगर तुमने मेरे कहे अनुसार काम नहीं किया तो तुम और तुम्हारी मॉ दोनों का बुरा होगा।"

जैक यह सुन कर डर गया और उसका कहा मानने को तैयार हो गया।

तब परी ने कहा — "तुम्हारे पिता एक बहुत ही अमीर आदमी थे और नेक स्वभाव के थे। वे गरीबों की सहायता करते थे और उनको सदा खुश रखने की कोशिश में लगे रहते थे।

उनका यह एक नियम सा बन गया था कि बिना भलाई किये उनका कोई दिन ही नहीं जाता था। हफ्ते में एक दिन उनका घर गरीबों के लिये खुला रहता था। अमीर और बड़े लोग वहॉ नहीं बुलाये जाते थे।

नौकर चाकर सभी उनसे खुश थे और सदा अपने मालिक की भलाई चाहते थे। तुम्हारे पिता राजाओं की तरह अमीर थे पर उनको घमंड बिल्कुल भी नहीं था। ऐसा आदमी चर्चा का कारण बन जाता है सो वह भी बन गये।

एक राक्षस बहुत दूर रहता था वह उतना ही खराब था जितने तुम्हारे पिता अच्छे थे। वह बहुत ही ईर्ष्यालु और बेरहम था। वह बहुत गरीब था और हमेशा अमीर बनने के सपने देखता था।

तुम्हारे पिता के बारे में सुन कर उसने उनसे मिलने का विचार किया और उनके पड़ोस में आ कर बस गया। उसने तुम्हारे पिता को बताया कि वह एक भला आदमी था और एक भूचाल में अपना सब कुछ खो चुका था।

तुम्हारे पिता ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया और उसे अपने ही घर में एक अच्छा सा कमरा रहने के लिये दे दिया और उसकी काफी देखभाल भी की।

पर उस राक्षस के दिमाग में तो कुछ और ही चल रहा था। कुछ दिनों तक तो सब कुछ ठीक सा चलता रहा पर राक्षस को चैन

कहाँ? वह तो अपना काम पूरा करने की योजना बना रहा था। आखिर वह समय भी आ गया।

तुम्हारे पिता का घर समुद्र के किनारे से कुछ दूर था परन्तु किसी अच्छी दूरबीन की सहायता से उसका किनारा बखूबी देखा जा सकता था।

एक दिन वह राक्षस दूरबीन से समुद्र की ओर देख रहा था कि उसे एक जहाज़ी बेड़ा दिखायी दिया। हवा बहुत तेज़ थी और वह जहाज़ी बेड़ा बहुत परेशान था।

राक्षस ने तुम्हारे पिता को बुलाया और उन दुखियों की सहायता करने को कहा। सारे नौकर चाकर उनकी सहायता के लिये तुरन्त ही भेज दिये गये।

केवल तुम्हारे पिता, तुम्हारी माँ, तुम और तुम्हारी आया ही घर में रह गये। उस समय वह राक्षस तुम्हारे पिता के पढ़ने वाले कमरे में पहुँच गया। तुम्हारे पिता ने उसको एक किताब पढ़ने के लिये दी।

राक्षस को उनको वहाँ अकेला देख कर मौका मिल गया और उसने उनको दबोच लिया। वह तुरन्त ही मर गये। राक्षस ने उनके मरे हुए शरीर को वहीं छोड़ दिया और वहाँ से जाने लगा तो रास्ते में तुम्हारी आया मिल गयी। उसने उसको भी रफा दफा कर दिया।

उस समय तुम केवल तीन महीने के थे। तुम्हारी माँ तुमको गोद में लिये घर के किसी दूसरे हिस्से में बैठी थी। घर में क्या हो रहा था उसको कुछ पता ही नहीं था।

वह जब पढ़ाई वाले कमरे में गयी तो यह देख कर सन्न रह गयी कि तुम्हारे पिता मरे पड़े थे और उनके शरीर से खून बह रहा था। तुम्हारी मॉ दुख और डर से पागल सी हो गयी, हिल डुल भी न सकी।

राक्षस उसको भी खोज रहा था। उसको इस हाल में देख कर वह उसका भी वही हाल करने को तैयार हुआ जो उसने तुम्हारे पिता का किया था परन्तु तुम्हारी मॉ उसके पैरों पर गिर पड़ी और उससे अपनी ज़िन्दगी की भीख मॉगने लगी।

उस बेरहम राक्षस ने तुम दोनों को छोड़ तो दिया पर तुम्हारी मॉ से यह वायदा ले लिया कि वह कभी तुम्हें तुम्हारे पिता के बारे में नहीं बतायेगी। अगर उसने बताया तो वह तुम दोनों को बेरहमी से मार डालेगा। तुम्हारी मॉ तुमको गोद में लिये हुए जितनी जल्दी हो सका वहॉ से भाग गयी।

बाद में राक्षस को पछतावा हुआ कि उसने तुम्हारी मॉ को जाने ही क्यों दिया पर उसको जल्दी ही नौकरों के आने से पहले भाग जाना था।

उसको खजाने के बारे में सब कुछ मालूम था सो तुरन्त ही उसने और उसकी पत्नी ने वह खजाना उठाया, घर में कई जगह आग लगायी और वहॉ से भाग लिया। जब तक नौकर वापस आये सारा घर जल कर खाक हो चुका था।

तुम्हारी गरीब मॉ मीलों तक इधर उधर मारी मारी फिरती रही। डर उसके रोम रोम में बस गया था। किसी तरह उसने एक घर बनाया और उसमें रह कर तुमको पाला पोसा।

यह केवल उस राक्षस का डर था जो उसने तुमको तुम्हारे पिता के बारे में एक शब्द भी नहीं बताया।

मैं तुम्हारे पिता की उनके जन्म से ही रक्षक थी परन्तु जैसे धरती पर रहने वालों के कुछ नियम होते हैं वैसे ही हमारे भी कुछ नियम हैं।

राक्षस के तुम्हारे पिता से मिलने से कुछ दिन पहले ही मुझे कुछ सजा मिली थी और उस सजा में मेरी ताकत छीन ली गयी थी इसलिये मैं कुछ नहीं कर सकी पर जिस दिन तुम गाय बेचने जा रहे थे और तुम कसाई से मिले तब तक मेरी ताकत मुझे वापस मिल चुकी थी।

मैंने ही तुम्हारे मन में बीन्स के दाने लेने की इच्छा जगायी। मेरी ही ताकत से वे बीन्स के दाने इतने ऊॅचे उगे और उनमें सीढ़ी सी बन गयी। और अब यह कहने की भी जरूरत नहीं कि उस सीढ़ी पर चढ़ने की इच्छा भी तुम्हारे मन में मैंने ही जगायी।

वह राक्षस इसी देश में रहता है और तुम ही उसको उसके इस जुर्म की सजा दोगे। खतरे और मुश्किलें तो तुम्हारे रास्ते में आयेंगी मगर तुमको अपने पिता की हत्या का बदला जरूर लेना है नहीं तो तुम कभी फल फूल नहीं सकोगे और हमेशा दुखी रहोगे।

राक्षस के पास जो कुछ भी है वह सब तुम्हारा है क्योंकि वह सब उसने तुम्हारे पिता से लिया था।

एक बात का ख्याल रखना कि अपने यहॉ आने जाने के बारे में अपनी मॉ को न बताना क्योंकि वह बेचारी तो केवल इस घटना के बारे में सोच कर ही मर जायेगी। अभी तक उसके मन से तुम्हारे पिता की हत्या का डर निकला नहीं है।

यह सड़क सीधी राक्षस के घर को जाती है। तुम इसी सड़क से चले जाओ। मेरा कहा नहीं माना तो सख्त सजा के लिये भी तैयार रहना।"

यह कह कर परी गायब हो गयी और जैक परी के बताये रास्ते पर चल पड़ा।

जैक चलता रहा, चलता रहा, वह गये रात तक चलता रहा और अन्त में एक बड़े महल के सामने आ पहुॅचा। एक मामूली सी औरत महल के दरवाजे पर खड़ी थी। जैक ने उसको नमस्ते की और उससे कुछ खाना और रात को रहने की जगह मॉगी।

वह जैक को देख कर आश्चर्य में पड़ गयी और बोली कि उसने इस घर के आस पास कभी कोई आदमी नहीं देखा था क्योंकि सभी लोग उसके पति के बारे में जानते थे कि वह एक बड़ा ताकतवर राक्षस है और इसी लिये कोई भी उधर आने की हिम्मत तक नहीं करता था तो फिर वह वहॉ कैसे आ गया।

दूसरी बात यह थी कि वह राक्षस केवल आदमियों का ही मॉस खाता था और आदमी की खोज में रोज पचास पचास मील तक जाया करता था। इसलिये भी कोई आदमी उस महल के आस पास आने की हिम्मत नहीं करता था।

यह हाल सुन कर तो जैक के हाथों के तोते उड़ गये फिर भी उसने साहस से काम लिया। उसने उस औरत से दोबारा कुछ खाना और रात भर ठहरने की जगह मॉगी।

उस औरत ने उसे भट्टी में छिप जाने के लिये कहा तो वह भट्टी में छिपे रहने पर तैयार हो गया। वह नेक औरत उसको अन्दर ले गयी और उसे भर पेट खाना खिलाया।

पहले वे एक बड़े कमरे में पहुॅचे जो बहुत सुन्दर सजा हुआ था फिर वे कई बड़े कमरों से होते हुए एक गैलरी में पहुॅचे। जैक ने देखा कि सभी कमरे उतनी ही सुन्दरता से सजे हुए थे जितना कि पहला कमरा।

गैलरी में एक तरफ लोहे की जाली लगी थी जिसके दूसरी तरफ वे आदमी थे जिनको उस राक्षस ने अपना पेट भरने के लिये रखा हुआ था।

यह सब देख कर जैक की तो जान ही निकलने लगी। वह सोचता रहा कि अब शायद वह अपनी मॉ को कभी नहीं देख पायेगा।

गैलरी के आखीर में एक गोल चक्करदार सीढ़ी थी जो रसोईघर में जाती थी। वह रसोईघर खूब बड़ा था। वह अपना डर भूल गया और वहॉ जलती हुई आग तापने लगा।

इतनी देर में महल के मुख्य दरवाजे पर ज़ोर की भड़भडाहट हुई। राक्षस घर वापस आ गया था। राक्षस की पत्नी ने उसे फिर भट्टी में छिपा दिया और फिर वह तुरन्त ही पति की अगवानी के लिये दरवाजे पर जा पहुॅची।

जैक ने सुना राक्षस अपनी पत्नी से कह रहा था —"प्रिये, मुझे ताजा आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है।"

पत्नी बोली — "प्रिय, यह तो तुम्हारे उन्हीं पुराने आदमियों की खुशबू है जिनको तुमने पहले से ही कैद कर रखा है।"

राक्षस ने उसका विश्वास कर लिया और रसोईघर में आ गया। राक्षस को देख कर जैक इतना डर गया जितना वह अपनी ज़िन्दगी में कभी किसी से नहीं डरा था।

वह राक्षस वहीं आग के पास बैठ गया और उसकी पत्नी खाना बनाने लगी। धीरे धीरे जैक की जान में जान आयी और अब वह राक्षस को पूरी तरह देखने लगा।

उसको राक्षस का खाना देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसे लगा वह खुद तो खाना ही नहीं खाता था क्योंकि उसका अपना खाना तो राक्षस के खाने से बहुत ही कम था।

खाने के बाद उसने अपनी पत्नी से मुर्गी लाने के लिये कहा। पत्नी ने एक बहुत सुन्दर मुर्गी मेज पर ला कर रख दी।

जैक सोचने लगा कि देखें अब क्या होता है। उसने देखा कि जब भी राक्षस कहता "अंडा दे" तो वह मुर्गी एक सोने का अंडा दे देती। इस तरह राक्षस काफी देर तक उस मुर्गी से अपना मन बहलाता रहा।

राक्षस की पत्नी सोने चली गयी थी। काफी देर के बाद राक्षस भी वहीं बैठा बैठा ऊँघने लगा। कुछ ही देर में वह सो गया और ज़ोर ज़ोर से खर्राटे भरने लगा।

तड़के ही जैक अपनी जगह से उठा, उसने मुर्गी को पकड़ा और उसे ले कर भाग निकला। जैक को रास्ता खोजने में थोड़ी कठिनाई हुई पर अन्त में उसने अपना रास्ता खोज ही लिया और वह सीधा बीन्स की बेल से होता हुआ तुरन्त ही नीचे उतर गया।

उसकी माँ उसे देख कर इतनी खुश हुई कि खुशी के मारे उसकी आँखों में आँसू आ गये।

जैक उस मुर्गी को अपनी माँ को दिखाने के लिये बेचैन हो रहा था। वह बोला — "माँ, आज मैं एक ऐसी चीज़ ले कर आया हूँ जो हमें जल्दी ही अमीर बना देगी। मुझे पूरी आशा है कि इस चीज़ को पाने के बाद तुम मेरे दिये हुए सब दुखों को भूल जाओगी।"

इतना कह कर उसने अपनी माँ को वह मुर्गी दिखायी और उन्होंने उस मुर्गी से जितने चाहे उतने सोने के अंडे निकाले। उन

अंडों को बेच कर उन्होंने बहुत धन कमाया और फिर वे खूब अमीर हो गये।

कुछ समय तक वे लोग खूब सुख से रहे लेकिन बाद में जैक के मन में फिर उधर जाने की इच्छा जाग उठी सो वह वहॉ जाने के लिये तैयार हो गया ताकि वह फिर से वहॉ से और खजाना ला सके।

क्योंकि जब वह पहली बार राक्षस के घर गया था तो वह राक्षस और उसकी पत्नी के बीच हुई बातों से यह जान गया था कि राक्षस के घर में मुर्गी के अलावा और भी कई अनोखी चीज़ें थीं।

सो एक दिन हिम्मत कर के उसने अपनी मॉ से कहा कि वह फिर बीन्स की बेल पर चढ़ना चाहेगा। मॉ ने उसे बहुत समझाया कि वह वहॉ जाने की सोचे भी नहीं क्योंकि अब तक राक्षस को अपनी मुर्गी खोने का पता चल गया होगा और वह उसके बदले में उसकी जान भी ले सकता है।

जैक ने देखा कि मॉ से बहस करना बेकार था सो उसने एक ऐसी पोशाक सिलवायी जिसमें कोई उसे पहचान न पाये और एक सुबह वह मॉ को धोखा दे कर उस बीन्स की बेल पर फिर से चढ़ गया।

ऊपर पहुॅचते पहुॅचते वह बहुत थक गया था और उसे भूख भी लग आयी थी। कुछ देर एक पत्थर पर बैठ कर वह फिर उसी राक्षस के घर की तरफ चल दिया। वहॉ पहुॅचते पहुॅचते उसे रात हो

गयी। उसने देखा कि वह औरत उस महल के दरवाजे पर उसी तरह खड़ी है जैसे पहले खड़ी थी।

जैक ने उसे नमस्ते की और कोई बनायी हुई कहानी उसे सुन कर उससे फिर कुछ खाने और रात को ठहरने की जगह देने की प्रार्थना की। उसने भी जैक को वही पहले वाला ही जवाब दिया।

उसने साथ ही यह भी कहा कि उसने पहले एक आदमी के ऊपर दया कर के एक आदमी को ठहराया था पर वह तो उसकी मुर्गी ले कर ही भाग गया तब से राक्षस का स्वभाव बहुत खराब हो गया है क्योंकि वह समझता है कि उसकी मुर्गी की चोरी में मेरा हाथ है।

जैक ने काफी मुश्किल से उसको विश्वास दिलाया कि वह चोर नहीं है और वह पहला आदमी भी नहीं है। आखिर राक्षस की पत्नी मान गयी।

वह फिर राक्षस की पत्नी के पीछे पीछे गया। सब कुछ पहले जैसा ही था। इस बार राक्षस की पत्नी ने जैक को रसोईघर की एक बड़ी अलमारी में छिपा दिया।

राक्षस अपने समय पर घर आया और बोला — "मुझे आज ताजा आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है।"

पत्नी ने कहा — "कुछ कौए कहीं से आदमी के मॉस का एक टुकड़ा छत पर फेंक गये हैं तुमको यह उसी की खुशबू आ रही है।"

जब राक्षस की पत्नी खाना बना रही थी तो राक्षस बहुत जल्दी में लग रहा था क्योंकि वह बार बार अपनी पत्नी से पूछ रहा था कि खाना जल्दी क्यों नहीं तैयार हो रहा। और वह जितनी देर वहॉ बैठा रहा उतनी देर तक वह अपनी पत्नी को मुर्गी की चोरी के लिये डॉटता ही रहा।

राक्षस ने जैसे तैसे अपना खाना खत्म किया और फिर पत्नी से बोला — "अब मेरे मन बहलाव के लिये या तो मेरे पैसों का थैला लाओ या फिर मेरा बाजा।" काफी देर तक पत्नी को तंग करने के बाद उसने अपना सोने चॉदी वाला थैला मॅगवाया।

पत्नी दो बहुत बड़े बड़े थैले ले आयी। राक्षस ने उसे वे थैले देर से लाने के लिये डॉटा तो पत्नी बोली कि वे बहुत भारी थे इसलिये उनको लाने में उसे देर लग गयी और अब वह उनको नीचे भी नहीं ले जा पायेगी।

राक्षस ने इस जवाब को सुन कर गुस्से में उसे मारने के लिये हाथ उठाया पर वह उसकी मार से बच कर सोने चली गयी।

सबसे पहले उस राक्षस ने अपना चॉदी वाला थैला खाली किया। उस थैले के चॉदी के सिक्के बाहर मेज पर रखे हुए थे। जैक की ऑख चॉदी की चमक से चौंधिया रहीं थीं। वह सोच रहा था, काश यह धन उसका होता। राक्षस उन सिक्कों को बार बार गिन रहा था और उन्हें थैले में भरता जा रहा था।

फिर उसने सोने वाला थैला खोला और सोना बाहर निकाला। उस सोने को देख कर तो जैक की ऑखें बिल्कुल ही खुली की खुली रह गयीं। फिर राक्षस ने वह सोना भी देखभाल कर उसी थैले में डाल दिया और कुछ ही देर में ऊँघ कर खर्राटे भरने लगा।

जब जैक को विश्वास हो गया कि वह राक्षस पूरी तरीके से सो गया तो वह उठा और थैले उठाने लगा।

जैसे ही उसने पहले थैले को हाथ लगाया कि एक कुत्ता राक्षस की कुर्सी के नीचे से बड़े ज़ोर से भौंका। जैक डर गया और बजाय भागने के वहीं का वहीं खड़ा रह गया। उसे लगा राक्षस जैसे अब जगा और अब जगा।

कुत्ता लगातार भौंके जा रहा था। इतने में उसे एक मॉस का टुकड़ा दिखायी दे गया। वह उसने उठा कर कुत्ते की तरफ फेंक दिया। कुत्ता उसे ले कर आलमारी की तरफ चला गया।

राक्षस अभी तक जागा नहीं था सो जैक ने वे दोनों थैले उठाये और वहॉ से चल दिया।

बाहर जा कर देखा तो काफी दिन निकल आया था। अब कठिनाई यह थी कि वह उन दोनों भारी थैलों को बीन्स की बेल तक ले कर कैसे जाये। वे थैले वास्तव में बहुत भारी थे मगर खुशी खुशी में वह चलता चला गया और बीन्स की बेल के नीचे भी आ गया।

वहॉ पहुँच कर यह देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि झोंपड़ी में उसकी मॉ नहीं थी। उसने मॉ को सब जगह तलाश किया, पड़ोसियों से भी पूछा पर उसका कोई पता नहीं चला। आखिर एक बुढ़िया ने उसको उसकी मॉ के मिलने का पता बताया।

जब वह वहॉ पहुँचा तो उसे बड़ा दुख हुआ कि वहॉ उसकी मॉ तो वहॉ मरे हुए के समान पड़ी थी। पर अपने बेटे के लौटने की खबर सुन कर वह कुछ कुछ होश में आने लगी। जैक ने उसे वे दोनों थैले दिये।

फिर वे लोग कुछ दिन सुख से रहे। उन्होंने अपने लिये एक महल बनवा लिया और फिर जैक ने तीन साल तक बीन्स की बेल की कोई सुध न ली।

पर वह उस बेल को भूल भी नहीं सकता था क्योंकि उसे परी की सब बातें याद थीं। सो उसने एक बार फिर से ऊपर जाने की तैयारियॉ शुरू कर दीं।

एक दिन सुबह सुबह वह उस बेल पर चढ़ कर फिर ऊपर पहुँचा, शाम को राक्षस के घर पहुँचा और पहले की ही तरह उसने उसकी पत्नी को वहॉ खड़े पाया।

जैक ने अपने आपको कुछ इस तरह छिपा रखा था कि राक्षस की पत्नी उसे पहचान ही नहीं पायी। उसने फिर एक झूठी कहानी उसको सुना कर उससे खाना और रात भर सोने की प्रार्थना की।

इस बार बड़ी कठिनाई से वह राक्षस के घर में घुस सका और एक बार फिर से वह भट्टी में छिप गया।

राक्षस आया और बोला — "मुझे आज फिर ताजा आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है।"

जैक ने सोचा कि यह सब पहले की ही तरह हो रहा है इसलिये उसने इस सब पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। पर यह क्या? अबकी बार तो वह राक्षस उठा और चारों तरफ घूम घूम कर देखने लगा।

वह भट्टी की तरफ भी आया और भट्टी के ढक्कन पर हाथ रखा तो जैक को अपनी मौत सामने खड़ी नजर आयी परन्तु वह ढक्कन बिना खोले ही चला गया। जैक ने सन्तोष की सॉस ली।

आखिर राक्षस ने खाना खाया और फिर उसने अपनी पत्नी से बाजा लाने को कहा। जैक ने झॉक कर देखा बाजा बहुत सुन्दर था। राक्षस बोला "बजो" तो उसने तुरन्त बजना शुरू कर दिया।

उसका संगीत बहुत ही मीठा था कि जैक उस संगीत को सुन कर मोहित सा हो गया और उसे पाने का कोई तरीका सोचने लगा। कुछ ही देर में राक्षस सो गया।

राक्षस के सो जाने के बाद जैक तुरन्त भट्टी में से बाहर निकला और बाजा उठाने लगा।

जैसे ही उसने बाजा छुआ बाजा बोला — "स्वामी स्वामी, मालिक मालिक।" वास्तव में वह बाजा एक परी थी। बाजे की आवाज सुन कर राक्षस जाग गया।

जैक बाजे को उठा कर भाग लिया। अब क्या था जैक आगे आगे और राक्षस उसके पीछे पीछे। जैक ने जैसे ही बीन्स की बेल पर पैर रखा कि उसने कुल्हाड़ी माँगी, तुरन्त ही एक कुल्हाड़ी उसके हाथ में आ गयी।

जैक तो बहुत जल्दी ही नीचे उतर गया और राक्षस अब नीचे उतरने की तैयारी में था सो जैक ने उस कुल्हाड़ी से वह बेल काट दी। बेल के कटते ही राक्षस नीचे गिर गया और मर गया।

जैक की माँ को बड़ी खुशी हुई जब उसने बीन्स की बेल को कटते हुए देखा। इसी समय परी भी प्रगट हो गयी।

उसने जैक की माँ को सारा हाल सुनाया और जैक को सलाह दी कि उसे अपनी माँ का हमेशा ख्याल रखना चाहिये और उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिये।

इसके अलावा उसको अपने पिता जैसा बनना चाहिये और वह चली गयी। जैक और उसकी माँ बहुत सालों तक आनन्द से रहे।

4 जैक ने अपनी किस्मत कैसे बनायी[6]

यह बहुत पुरानी बात है कि कहीं एक लड़का रहता था। उसका नाम था जैक। एक सुबह उसने सोचा कि चल कर अपनी किस्मत बनायी जाये। सो वह अपनी किस्मत बनाने चल दिया।

वह अभी बहुत दूर नहीं गया था कि रास्ते में उसको एक बिल्ला मिला। बिल्ले ने पूछा — "जैक तुम कहाँ जा रहे हो?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूँ।"

बिल्ले ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ?"

जैक बोला — "क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही आनन्द रहेगा।"

सो वे दोनों उछलते कूदते चल दिये। अभी वे कुछ दूर ही गये होंगे तो उन्हें एक कुत्ता मिला।

कुत्ते ने पूछा — "कहाँ चल दिये जैक?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूँ।"

कुत्ते ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूँ?"

जैक ने कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही ज़्यादा आनन्द रहेगा।"

[6] How Jack Went to Seek His Fortune – a folktale Taken from the book "English Fairy Rales " collected by Joseph Jacobs, 1892. Book available at : https://www.worldoftales.com/English_fairy_tales.html

सो कुत्ता भी उनके साथ चल दिया। अब तीनों उछलते कूदते चल दिये। वे कुछ ही दूर और गये थे कि उनको एक बकरा मिला।

बकरे ने पूछा — "कहॉ जा रहे हो प्यारे जैक?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूॅ।"

बकरे ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूॅ?"

जैक ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही ज़्यादा आनन्द रहेगा।"

फिर वे सब साथ साथ चल दिये। अब चार हो गये थे – जैक बिल्ला कुत्ता बकरा। वे लोग कुछ दूर और आगे चले तो उनको एक बैल मिला।

बैल ने पूछा — "जैक भाई कहॉ चले?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूॅ।"

बैल ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूॅ?"

जैक ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही ज़्यादा आनन्द रहेगा चलो तुम भी चलो।"

सो अब पॉच लोग चल दिये। अभी वे ज़्यादा दूर नहीं गये थे कि उनको एक मुर्गा मिल गया।

मुर्गे ने भी पूछा — "जैक कहॉ चल दिये?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूॅ।"

मुर्गे ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूँ?"

जैक ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही ज़्यादा आनन्द रहेगा। तुम भी चलो हमारे साथ।"

सो अब छह लोग चल दिये। सब इसी तरह से चलते रहे चलते रहे कि अब शाम होने आयी। अब उन्हें कोई ऐसी जगह चाहिये थी जहॉ वे आराम से अपनी रात बिता सकें।

तभी उनको एक घर दिखायी दिया। जैक ने उनसे कहा कि वे सब वहीं चुपचाप खड़े रहें वह ज़रा घर को अन्दर से देखता है। उसने खिड़की से झॉका तो उसने देखा कि कुछ डाकू उसमें बैठे बैठे अपने पैसे गिन रहे थे।

जैक वापस गया और जा कर उन सबसे कहा कि थोड़ा ठहरो। जब मैं कहूँ तब तुम लोग बहुत ज़ोर का शोर मचाना। सो जब सब तैयार हो गये तो जैक ने इशारा किया तो बिल्ले ने म्याऊँ बोला, कुत्ते ने ज़ोर से भौंका, बकरे ने "मैं मैं" कहा, बैल रॅभाया और मुर्गे ने ज़ोर से कुकड़ूँ कू की आवाज लगायी।

ये सब आवाजें मिल कर इतना शोर कर रही थीं कि डाकू बेचारे बहुत डर गये और घर छोड़ कर भाग गये। तब मुर्गा अन्दर गया और उसने सारा घर सॅभाल लिया।

जैक को डर लग रहा था कि डाकू रात में घर वापस आयेंगे। सो जब रात हो गयी तो उसने बिल्ले को तो झूलने वाली कुर्सी पर

बिठा दिया। कुत्ते को मेज के नीचे बिठा दिया। बकरे को उसने ऊपर चढ़ा दिया।

बैल को उसने नीचे वाले कमरे में भेज दिया। मुर्गा घर की छत पर बैठ गया। जैक खुद बिस्तर पर सोने चला गया।

जैक का सोचना ठीक था। धीर धीरे जब रात हो गयी तो डाकुओं ने घर लौटना चाहा तो उन्होंने एक आदमी को यह देखने के लिये घर भेजा कि वह यह देख कर आये कि घर ठीकठाक है या नहीं।

थोड़ी ही देर में वह वापस आ गया और उसने अपने साथियों को बताया — "मैं जब वापस घर पहुँचा तो मैं अन्दर गया और अपनी झूलती हुई कुर्सी पर बैठने की कोशिश की तो वहाँ तो एक बुढ़िया कुछ बुन रही थी। उसने अपनी बुनाई की सलाइयाँ मेरे शरीर में चुभो दीं। यह बिल्ला था।

फिर मैं पैसे देखने के लिये मेज के पास गया तो उसके नीचे एक जूता बनाने वाला बैठा था उसने अपने जूता सिलने वाला औजार मुझे मारा। यह कुता था।

फिर मैं ऊपर गया तो वहाँ एक आदमी था जो कुछ पीट रहा था उसने अपने पीटने वाले हथियार से मुझे मारा। यह बकरा था।

फिर मैंने नीचे वाले कमरे में जाने की कोशिश की तो वहाँ कोई लकड़ी काट रहा था उसने मुझे अपनी कुल्हाड़ी से मारा। यह बैल था।

पर मुझे इन सबकी चिन्ता नहीं होती अगर वह छोटा आदमी घर की छत पर न मिलता तो। वह बस बोले जा रहा था "कुकड़ूँ कू। कुकड़ूँ कू।" और यह तो मुर्गा था।

5 जैक और उसकी आश्चर्यजनक मुर्गी[7]

एक बार की बात है कि एक लड़का जिसका नाम जैक था कैनेडा के किसी दूर हिस्से में रहता था। उसके कोई भाई या बहिन नहीं था। वह अपने माता पिता का अकेला बच्चा था। उसके माता पिता बहुत गरीब थे। उनके पास केवल एक बकरी थी जिससे उनको दूध मिलता था।

जब जैक थोड़ा बड़ा हुआ तो उसने घर से बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया ताकि उसके माता पिता अपनी बड़ी उम्र में ज़्यादा आराम से रह सकें।

सो एक दिन वह अपने माता पिता से बोला — "मैं बाहर जाना चाहता हूँ ताकि आपको अच्छा खाना खिला सकूँ आपकी बड़ी उम्र के लिये कुछ पैसा इकट्ठा कर सकूँ।"

जैक के माता पिता जैक को अपने पास से कहीं जाने नहीं देना चाहते थे क्योंकि वही उनकी खुशी का अकेला सहारा था। पर वह उनकी बातों को बिल्कुल नहीं सुन रहा था। सो वह बिना पैसा लिये भारी मन से घर से चला गया।

उन दिनों देश में गर्मी का मौसम था। चलते चलते जब वह खुले मैदान में आ गया तो उसने देखा कि लोग मैदान में भूसे के ढेर

[7] Jack and His Wonderful Hen – a folktale from Canada, North America. Taken from the Web Site : https://fairytalez.com/jack-wonderful-hen/ . A Canadian Native American North American folktale.

बना रहे हैं। जल्दी ही वह एक बड़े खेत के पास आ गया जहॉ बहुत सारे लोग काम कर रहे थे।

उसने उस आदमी से बात की जो काम देता था तो आदमी ने उससे पूछा — "तुम यहॉ कितने दिन काम करना चाहते हो।"

जैक बोला — "एक हफ्ता।"

आदमी ने उसे काम पर रख लिया और वह काम करने चला गया। वह एक बहुत अच्छा काम करने वाला था। एक हफ्ते में उसने इतना काम कर लिया था जितना कोई एक साल में करता। आदमी उसके काम से बहुत खुश था।

हफ्ता बीत जाने के बाद जैक ने अपनी तनख्वाह मॉगी तो आदमी ने उसको कुछ पैसे दिये और एक बूढ़ी मुर्गी दी। जैक यह देख कर बहुत नाराज हुआ। वह बोला कि "मुझे पैसे चाहिये मुर्गी नहीं। यह बूढ़ी मुर्गी मेरे किस काम की।"

पर आदमी उसको और ज़्यादा पैसे देने के लिये तैयार नहीं था। वह बोला — "यह मुर्गी तुम्हें अंडे देगी। यह दो दर्जन अंडे रोज देती है – हर घंटे एक अंडा।"

अब तो जैक कुछ कर नहीं सकता था सो उसको वह मुर्गी लेनी ही पड़ी। मुर्गी और पैसे ले कर वह घर चला गया जब उसके माता पिता ने उसको और उसके कमाये हुए पैसे और मुर्गी को देखा तो वह बहुत खुश हो गये। पर इस मुर्गी को देख कर वह हॅस पड़े।

पर जब दिन भर के बाद उसने दो दर्जन अंडे दिये तो वे बहुत खुश हुए।

एक हफ्ते बाद जैक फिर बोला कि में पैसा कमाने के लिये फिर से बाहर जा रहा हूँ। इस बार उसके माता पिता को ज़्यादा परेशानी नहीं हुई क्योंकि उनको पता चल गया था कि अब उनका बेटा अपनी देख भाल अपने आप कर सकता है। उसने कहा कि इस बूढ़ी मुर्गी को मैं अपने साथ लिये जाता हूँ मैं इसको बेच कर और ज़्यादा पैसा कमा कर लाऊँगा।

सो एक सुबह वह जाने के लिये तैयार हो गया। उसने अपनी बूढ़ी मुर्गी अपनी बगल में दबायी और जंगल के रास्ते चल दिया। वह फिर से मैदान में काम करते हुए लोगों के सामने से गुजरा। वे वहाँ भूसा बना रहे थे। पर आज उसने उनसे काम के बारे में कुछ नहीं पूछा।

जब वह उनके सामने से गुजर कर रहा रहा था तो लोग उसकी मुर्गी पर हँस रहे थे पर उसने उनके हँसने पर कोई ध्यान ही नहीं दिया। धीरे धीरे वह एक शहर में आ पहुँचा जहाँ इज़्ज़त वाले लोग रहते थे।

वहाँ पहुँच कर वह एक घर में चला गया जिसमें उसने खाना खाया और अपने और अपनी मुर्गी के रहने के लिये जगह भी ढूँढ ली थी। वह उसके यानी घर के मालिक से कहा कि उसके पास एक बहुत ही बढ़िया मुर्गी है जिसे वह बेचना चाहता है।

मालिक बोला "ठीक है पहले तुम मुझे अपनी चिड़िया तो दिखाओ।"

पर जब जैक ने अपनी बूढ़ी मुर्गी उसको दिखायी ता वह भला आदमी तो उस मुर्गी को देख कर बहुत गुस्सा हुआ "यह छोटी बूढ़ी मुर्गी मेरे किस काम की।"

पर जब जैक ने कहा कि वह मुर्गी उसको चौबीस घंटे में चौबीस अंडे देगी तो वह बोला "तो तुम इसकी अपनी कीमत बोलो। हम इसको एक दिन रखेंगे और तुम्हारे कहे की जॉच करेंगे।"

सो उन्होंने एक दिन तक मुर्गी को बन्द रखा एक दिन में उसने चौबीस अंडे दिये। वह भला आदमी तो यह देख कर बहुत खुश हो गया।

उसने जैक से पूछा — "तुम्हें इसके कितने पैसे चाहिये।"

जैक बोला — "जो आप चाहें वह दे दीजिये।"

भले आदमी ने उसको मुर्गी के काफी सारे पैसे दे दिये। जैक भी अपने इस सौदे से बहुत खुश था। वह पैसे ले कर घर वापस चला गया।

उसके माता पिता उसके वापस आने से बहुत खुश हुए। इससे भी ज़्यादा वह इस बात से खुश थे कि उनके बेटे को मुर्गी के अच्छे पैसे मिल गये थे। अब वे आराम से रह रहे थे।

कुछ हफ्ते ऐसे ही बीत गये कि एक दिन जैक फिर बोला कि "अब मैं फिर बाहर जाना चाहता हूँ। इस बार मैं अपनी बूढ़ी बकरी

ले जाऊँगा और उसे बेच कर आऊँगा। हम लोग उसके दूध के बिना भी रह सकते हैं।"

जैक ने सोचा कि अब तक मैंने बहुत अच्छे अच्छे सौदे किये हैं सो मैं इस बकरी को भी अच्छे दामों पर बेच पाऊँगा। उसके माता पिता राजी हो गये।

एक दिन उसने अपनी बकरी को रिबन और फूलों से सजाया बहुत सारे रंगों का एक कम्बल ओढ़ाया और चल दिया – वह आगे आगे और उसकी बकरी उसके पीछे पीछे। वह जंगल से हो कर जा रहा था।

उन दिनों फसल काटने का समय था। रास्ते में सारे लोग अपने अपने खेतों में पीला पीला अन्न काट रहे थे। पर उसने उनसे काम नहीं माँगा। लोग जो उसको देख रहे थे वे उसकी बकरी को बड़े आश्चर्य से देख रहे थे पर उसने किसी से बात नहीं की।

जल्दी ही वह शहर में आ गया जहाँ भले लोग रह रहे थे। वह एक भले आदमी के पास पहुँचा और उससे कहा कि वह अपनी बकरी बेचना चाहता है।

भले आदमी ने उसकी वह बकरी उससे खरीद ली और उसको काफी पैसा दे कर विदा किया। फिर उसने उसको अपने दूसरे जानवरों के रखने की जगह में बाँध दिया। उस जगह की उसके दो आदमी रखवाली करते थे।

जैक ने सोचा कि वहाँ से वह तुरन्त ही अपने घर नहीं जायेगा।

उसने सोचा कि वह किसी समय अपनी बकरी को वहाँ से चुरा ले जायेगा और तब उसको साथ ले कर ही अपने घर जायेगा। इस तरह से उसके पास उसकी बकरी भी वापस आ जायेगी और पैसा भी रहेगा।

यह सोच कर उसने बहुत सारा खाना खरीदा एक टोकरी में रखा और उसको जानवरों के रहने की जगह ले गया। उन दोनों पहरेदारों ने उसको जानवरों के रखने की जगह जाते देखा तो वे उसे बाहर निकालने के लिये उसकी तरफ दौड़े क्योंकि रात को वहाँ किसी को भी जाने की इजाज़त नहीं थी।

पर जैक बोला — "रात ठंडी है और लम्बी है। तुम्हारे मालिक ने मुझे तुम्हारे लिये यह इतना सारा खाना ले कर तुम्हारे पास भेजा है।"

पहरेदार तो खाना देख कर बहुत खुश हो गये। वे सब लोग खाना खाने बैठे। उन्होंने खूब पेट भर कर खाया। लोगों को नींद आने लगी तो जैक बोला — "अगर तुम लोग एकाध घंटे के लिये सोना चाहते हो तो सो लो। मैं यहाँ तुम्हारी जगह पहरा दे दूँगा। मुझे तो चाँदनी में बैठना बहुत अच्छा लगता है।"

दोनों पहरेदारों को यह सुन कर बहुत अच्छा लगा। उन्होंने जैक को उसकी इस मेहरबानी के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहीं लेट गये। पेट भरा होने की वजह से तुरन्त ही गहरी नींद सो गये।

बस यह समय ठीक था। सारा शहर सो रहा था। कहीं से एक आवाज भी नहीं आ रही थी। उसने अपनी बकरी खोली और उसको ले कर वहॉ से चल दिया। जल्दी ही वह बाहर के खुले मैदान में निकल आया।

फिर उसने खेत पार किये और जंगल में आ गया। फिर वह चमकीली चॉदनी रात में जंगल के रास्ते पर चलता रहा। सुबह होने से पहले पहले ही घर पहुॅच गया।

उसके माता पिता उसको इतनी जल्दी आया देख कर और इतने सारे पैसे देख कर फिर से बहुत खुश हो गये। पर जब उसने उनको यह बताया कि उसने वह बकरी बेच दी थी पर फिर उसको चुरा लिया वे दोनों बहुत नाराज हुए।

उन्होंने कहा — "तुम्हारी यह हरकत हमारे लिये कुछ अच्छा ले कर नहीं आयेगी। यह बूढ़ी बकरी तुम्हारे लिये कुछ न कुछ दुख ही ले कर आयेगी।"

कुछ दिन बाद जैक ने फिर से बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया। वह अपनी चोरी की गयी बकरी को अपने साथ ले गया। जंगल से बाहर निकलने से पहले ही उसको वहॉ एक आदमी मिला जिसने वहॉ पेड़ों के नीचे कैम्प लगाया हुआ था।

आदमी ने पूछा — "तुम कौन हो।"

जैक बोला — "मैं एक भले आदमी का नौकर हूँ। मैं उसकी सुन्दर बकरियों की देख भाल करता हूँ। उसने यह बकरी मुझे दे दी है।"

आदमी को वह बकरी बहुत अच्छी लगी तो उसने जैक से पूछा कि वह उसको उसे कितने पैसे में बेचेगा। जैक ने मना कर दिया कि वह उसको नहीं बेचेगा।

तब जैक ने उस आदमी से पूछा — "तुम कौन हो।"

आदमी बोला — "मैं डाकू हूँ। अगर तुम मेरे साथ मिल जाओ तो हम लोग बहुत जल्दी ही अमीर हो जायेंगे।"

जैक इस बात पर राजी हो गया। कुछ दिनों तक तो वे साथ साथ रहे पर उस डाकू की निगाह हमेशा जैक की बकरी पर ही लगी रहती।

एक रात जब वे एक नदी के किनारे सो रहे थे डाकू ने जैक को एक ही वार में मार दिया। फिर उसकी वह बूढ़ी बकरी उठायी और वहाँ से चला गया।

इस तरह से जैक की चुरायी हुई बकरी उसकी मौत की वजह बन गयी।

6 साबुन साबुन साबुन[8]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार एक लड़का था उसका नाम जैक था। वह बहुत ही भुलक्कड़ था। उसको कुछ याद ही नहीं रहता था।

एक दिन उसकी मॉ को कुछ कपड़े धोने थे। उसके पास कपड़े धोने के लिये पत्थर था और उसने कुॅए से पानी भी खींच लिया था। उसने उस पानी से तीन चौथाई बैरल भी भर लिया था। पर तभी उसने देखा कि उन कपड़ों को धोने के लिये उसके पास साबुन तो बहुत कम था।

सो उसने जैक को आवाज दी और कहा — "बेटा ज़रा दूकान जा कर थोड़ा कपड़े धोने का साबुन तो ले आओ।"

उसको मालूम था कि उसका बेटा भुलक्कड़ है सो उसने उससे कहा कि वह बार बार साबुन साबुन दोहराता हुआ बाजार जाये ताकि वह भूले नहीं कि उसको बाजार से क्या लाना है।

जैक यह सुन कर साबुन साबुन दोहराता हुआ बाजार चल दिया। उस दिन तभी तभी बारिश पड़ कर चुकी थी सो सब जगह कीचड़ हो रही थी। जब वह बाजार जा रहा था तो वह गीली मिट्टी में फिसल गया।

---

[8] Soap, Soap, Soap – a folktale from Native Americans, from Appalachian Tribe, North America. Adapted rom the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=27

उठ कर उसने आपको पोंछा और फिर आगे चल दिया। जब वह वहॉ से चला तो वह भूल गया कि वह दूकान क्या लाने के लिये जा रहा था।

सो वह फिर वहीं वापस आया जहॉ वह गिरा था और बोला "यहॉ तक तो मुझे याद था और यहॉ के बाद मैं भूल गया। यहॉ तक तो मुझे याद था और यहॉ के बाद मैं भूल गया।"

एक बूढ़ा जैक के दूसरी तरफ से अपनी बिब वाली पैन्ट पहन कर उसी की तरफ चला आ रहा था। वह जैक को इधर से उधर घूमते हुए देख कर रुक गया और उससे पूछा कि यह तुम क्या कह रहे हो कि तुम्हारे पास यहॉ क्या था और फिर यहॉ के बाद क्या खो गया।

वह उससे बार बार यही पूछता रहा पर जैक कुछ भी जवाब नहीं दे सका सिवाय इसके कि "यहॉ तक तो मुझे याद था और यहॉ के बाद मैं भूल गया। यहॉ तक तो मुझे याद था और यहॉ के बाद मैं भूल गया।"

जैसे ही वह बूढ़ा जैक के पास तक आया तो वह भी उसी जगह फिसल कर अपने पिछवाड़े के बल गिर पड़ा। इससे वह बूढ़ा इतना गुस्सा हो गया कि उसने जैक को ज़ोर से झकझोरते हुए कहा — "तुमको बोलना चाहिये "मुझे अफसोस है कि यह मैंने किया। अब मैं आगे से ऐसा कभी नहीं करूॅगा।"

जैक बोला — "मुझे अफसोस है कि यह मैंने किया। अब मैं आगे से नहीं करूँगा। मुझे अफसोस है कि यह मैंने किया। अब मैं आगे से ऐसा कभी नहीं करूँगा।"

अब वह यह बार बार कहता हुआ आगे चल दिया कि "मुझे अफसोस है कि यह मैंने किया। अब मैं आगे से ऐसा कभी नहीं करूँगा। मुझे अफसोस है कि यह मैंने किया। अब मैं आगे से ऐसा कभी नहीं करूँगा।"

यह कहते हुए वह आगे चलता जा रहा था कि उसको एक स्त्री मिली जिसको किसी ने दूकान से घर जाते समय धक्का मार दिया था। वह इससे इतनी गुस्सा थी कि वह यह जानना चाहती थी उसे किसने धक्का मारा।

कि तभी जैक उसके सामने आ गया। वह अभी भी यही दोहराता जा रहा था "मुझे अफसोस है कि यह मैंने किया। अब मैं आगे से ऐसा कभी नहीं करूँगा। मुझे अफसोस है कि यह मैंने किया। अब मैं आगे से ऐसा कभी नहीं करूँगा।"

उस स्त्री ने समझा कि यही वह आदमी है जिसने उस धक्का मारा था सो उसने उसको बॉह से पकड़ लिया और बिना सोचे समझे कि वह क्या कर रही है उसने उसको कीचड़ में गिरा दिया।

फिर वह बोली — "तू अबसे यह बोल "अब मैं बाहर और तू अन्दर।" कह कर उसने अपना राशन वहीं कीचड़ में छोड़ा और अपने रास्ते चल दी।

जैक भी उस कीचड़ में से उठा और फिर वही कहता आगे चल दिया जो उस स्त्री ने कहा था "अब मैं बाहर और तू अन्दर।"

पर जब वह दूकान की तरफ जा रहा था तो उसको एक और बूढ़ा मिला जो एक पुरानी दो पहियों की गाड़ी को धक्का दे कर ले जा रहा था।

उसके दो पहियों में से एक पहिया कीचड़ में फॅस गया था कि उसी समय जैक यह कहता हुआ उसके सामने आ गया "अब मैं बाहर और तू अन्दर। अब मैं बाहर और तू अन्दर।"

उस बूढ़े ने सोचा कि शायद वह लड़का यह उसी से कह रहा था तो यह सुन कर वह बहुत गुस्सा हुआ और उससे बोला — "तुमको यह नहीं कहना चाहिये कि "अब मैं बाहर और तू अन्दर।" बल्कि यह कहना चाहिये "एक तो बाहर है दूसरे को भी बाहर निकालो।"

और यही जैक ने किया। वह दूकान तक फिर यही कहता चला गया "एक तो बाहर है दूसरे को भी बाहर निकालो। एक तो बाहर है दूसरे को भी बाहर निकालो।"

अब वह बस यही कहता चला जा रहा था "एक तो बाहर है दूसरे को भी बाहर निकालो। एक तो बाहर है दूसरे को भी बाहर निकालो।" कि इत्तफाक से उसको एक ऐसी स्त्री आती दिखायी दी जिसके एक ही ऑख थी।

जैसे ही उसने जैक को यह कहते सुना "एक तो बाहर है दूसरे को भी बाहर निकालो।" तो वह तो बहुत ज़ोर से गुस्सा हो गयी। वह जैक के सामने आती हुई बोली — "तुम यह कह कर कोई तरीके की बात नहीं कर रहे हो। तुमको तो यह कहना चाहिये "चलो एक है तो वही ठीक है।"

सो जैक फिर यही दोहराता दूकान की तरफ चल दिया "चलो एक है तो वही ठीक है। चलो एक है तो वही ठीक है।"

अब अगर बात यहीं तक रहती तब तक भी ठीक था पर इसके बाद भी उसको याद नहीं आया कि वह दूकान किसलिये जा रहा था।

पर जब वह यह कहते हुए जा रहा था तो उसको एक नाला पार करना था। यह नाला उस दूकान के पास ही था जिस दूकान पर वह जा रहा था। अब ऐसा हुआ कि दो लड़के उस नाले के पुल की रेलिंग से खेल रहे थे।

तुम्हारा अन्दाज ठीक निकला। उनमें से एक लड़का उस नाले में गिर पड़ा और तभी जैक यह दोहराता हुआ वहॉ आ पहुॅचा "चलो एक है तो वही ठीक है।"

इत्तफाक से उन लडकों की मॉ भी वहीं थी वह अपने बच्चे की सहायता करना चाह रही थी कि उसने जैक को यह कहते सुना "चलो एक है तो वही ठीक है। चलो एक है तो वही ठीक है।"

वह उससे यह कहने ही वाली थी कि "तुमको यह कहना चाहिये।" पर उसने देखा कि वह तो इतने समय तक कीचड़ में सना हुआ कितना गन्दा लग रहा था। उसको तो इस समय नहाने की जरूरत थी।

सो वह बोली — "तुम तो बहुत गन्दे हो रहे हो तुमको तो नहाने की जरूरत है। ध्यान रखना साबुन अच्छी तरह से लगा कर नहाना।"

जैक बोला — "साबुन साबुन साबुन।"

बस उसके पास ही दूकान थी सो वह साबुन साबुन कहता कहता दूकान में चला गया और वहॉ से साबुन खरीद कर घर वापस आ गया। आ कर उसने साबुन अपनी मॉ को दिया।

फिर वह खुद भी बहुत सारा साबुन लगा कर नहाया धोया और उसकी मॉ ने भी अपने कपड़े धोये।

पर उसकी मॉ तो यह सोचती ही रह गयी कि जैक को कैसे याद रहा कि उसको क्या लाना था।

7 चालाक चोर जैक[9]

एक बार की बात है कि एक गरीब किसान था जिसके तीन बेटे थे। उसके तीनों बेटे एक ही दिन अपनी किस्मत आजमाने के लिये घर से चले।

दोनों बड़े भाई समझदार और मेहनती नौजवान थे। पर सबसे छोटे ने घर में कभी कोई ऐसा काम नहीं किया जो किसी के काम का हो।

उसको खरगोशों के लिये जाल बिछाना बहुत अच्छा लगता था। या फिर बर्फ में उनके पीछे पीछे भागना अच्छा लगता था। या फिर लोगों के ऊपर नयी नयी चाल खेलना अच्छा लगता था। वह अपनी ऐसी ही चालों से पहले तो लोगों को परेशान करता था फिर उनको हॅसाता था।

तीनों भाई एक चौराहे पर आ कर अलग अलग हो गये। जैक ने ऐसा रास्ता लिया जो अकेला सा था। उस दिन बारिश हो रही थी तो वह थोड़ा भीग भी गया था और कुछ थक भी गया था। चलते चलते रात को वह सड़क से कुछ दूरी पर बने एक अकेले मकान के पास आया।

---

[9] Jack the Cunning Thief. A folktale from Ireland. From the Book "Fireside Stories from Ireland". By Patrick Kennedy. 1870. 200 p.
[My Note : This story resembles a story "Master Chor" told and heard in Slav countries. It is given in my book "Lok Kathaon Mein Chor".

वहाँ एक धुँधली नजर वाली बुढ़िया आग के पास बैठी थी।

उसने पूछा — "कहो तुम्हें क्या काम है।"

वह बोला — "शाम का खाना और रात को सोने के लिये एक बिस्तर।"

वह बोली — "वह तो तुम्हें यहाँ नहीं मिल सकता।"

जैक बोला — "पर इसमें परेशानी क्या है।"

बुढ़िया बोली — "यहाँ इस घर के छह ईमानदार मालिक हैं जो सुबह तीन चार बजे से पहले नहीं आयेंगे। अगर उन्होंने तुम्हें देख लिया तो वे तुम्हें ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे।"

जैक बोला — "मुझे ऐसा लगता है कि वह घर से बाहर रात बिताने से ज़्यादा बुरा नहीं होगा। सो इसलिये मेहरबानी कर के मुझे जल्दी से आलमारी में से निकाल कर कुछ खाना दीजिये क्योंकि मैं आज की रात यहीं ठहरने वाला हूँ।

खाल छिलवा कर मरना इतना बुरा नहीं है जितना कि ऐसी रात में किसी गड्ढे में ठंड खा कर मर जाना या किसी पेड़ के नीचे जम जाना।"

बुढ़िया यह सुन कर कुछ डर सी गयी। उसने उसको अन्दर बुलाया बहुत अच्छा खाना खिलाया। जब वह सोने जा रहा था तो उसने बुढ़िया से कहा — "अगर उसने उन छह ईमानदार आदमियों में से किसी को भी उसे परेशान करने दिया जब वे घर आये तो वह बहुत पछतायेगी।"

जब वह सुबह सवेरे उठा तो उसने देखा कि छह बदसूरत लोग उसकी चारपाई के चारों तरफ खड़े हुए थे।

वह अपनी कोहनी के सहारे बैठा और उसने उनकी तरफ बड़े गुस्से से देखा जैसे उन्होंने कोई बहुत बड़ा जुर्म कर दिया हो।

उनके सरदार ने पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ क्यों आये हो?"

वह बोला — "मेरा नाम "कौन गोधी"[10] है। इस समय मैं अपने लिये कुछ सहायक ढूँढ रहा हूँ। अगर तुममें से किसी को इस लायक पाता हूँ तो मैं उसको ट्रेनिंग देने को तैयार हूँ।"

यह सुन कर वे कुछ नाराज से हो गये कि उनका सरदार बोला — "ठीक है। अभी तुम उठो नाश्ते के बाद हम देखेंगे कि कौन मास्टर बनता है और कौन सहायक।"

उन्होंने अपना नाश्ता खत्म ही किया था कि उन्होंने क्या देखा कि एक किसान एक बहुत बड़ा बकरा हाँक कर बाजार ले जा रहा था। उसे देख कर जैक ने कहा — "क्या तुम लोगों में से कोई इसके जंगल में से बाहर निकलने में और इस बकरे को चुराने का काम अपनी जिम्मे ले सकता है और वह भी बिना किसी मार पीट के।"

एक बोला — "मैं तो यह काम नहीं कर सकता।"

दूसरा बोला — "मैं भी यह काम नहीं कर सकता।"

[10] A Ceann Ghoduidhe – pronouncesdas "Caun Godhi" means "Master Thief".

जैक बोला — "तब मैं तुम्हारा मास्टर हूँ। मैं यह काम कर सकता हूँ।"

वह तुरन्त ही वहाँ से पेड़ों में से हो कर भाग गया। वह सड़क पर एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ से सड़क मुड़ती थी वहाँ उसने अपना एक दाँये पैर का सुन्दर सा जूता सड़क के बीच में रख दिया।

उसके बाद वह आगे भागा गया और दूसरे मोड़ पर जा कर रुक गया। वहाँ उसने अपने बाँये पैर का वैसा ही जूता रखा और जा कर छिप गया।

जब किसान ने पहला जूता देखा तो अपने मन में कहा "यह जूता तो बड़े काम का हो सकता था अगर इसके साथ का दूसरा जूता भी होता तो पर यह अकेला जूता तो बिल्कुल ही बेकार है।"

सो वह उस जूते को वहीं छोड़ कर आगे बढ़ गया। पर कुछ दूर जाने पर उसको वैसा ही एक और जूता दिखायी दिया। अबकी बार उसने सोचा "अरे मैं भी कितना बेवकूफ था जो मैंने उस पहले जूते को नहीं उठाया। मैं उसको ले कर अभी वापस आता हूँ।"

कह कर उसने अपने बकरा एक पेड़ से बाँधा और पहला वाला जूता लाने के लिये वापस लौट पड़ा पर जैक जो एक पेड़ के पीछे छिपा खड़ा था उसने उसे पहले ही वहाँ से हटा दिया था। सो जैसे ही वह आदमी सड़क के मोड़ से ओझल हुआ उसने अपना दूसरा

जूता उठा लिया और उसके बकरे को खोल लिया। वह उसको ले कर जंगल की तरफ भाग निकला।

उफ़। कितनी बुरी बात है कि वह किसान जब पहला जूता लेने के लिये पहले मोड़ पर पहुँचा तो वहाँ उसे कोई जूता नहीं दिखायी दिया। वहाँ कोई जूता न पाने पर वह बहुत दुखी हुआ और तुरन्त ही वापस लौट पड़ा। पर जब वह लौट कर आया तो न तो वहाँ दूसरा जूता था और न ही उसका बकरा।

"उफ़ अब मैं क्या करूँ। मैंने जोआना[11] को जो शाल खरीदने का वायदा किया अब उसका क्या होगा। मुझे घर वापस जाना चाहिये और उससे छिपा कर एक दूसरा जानवर ले कर बाजार जाना चाहिये। अगर जोआना को यह पता चल गया कि मैं कितना बड़ा बेवकूफ बन गया हूँ तो फिर मेरा क्या होगा।"

जैक बकरा ले कर घर पहुँचा तो छहों चोर उस बकरे को देख कर बहुत खुश हुए। वे जानना चाहते थे कि उसने उस किसान के साथ क्या किया जो वह उसका बकरा चुरा सका पर जैक ने उन्हें कुछ नहीं बताया।

कुछ देर बाद ही उन लोगों ने देखा कि अबकी बार वही किसान एक मोटी भेड़ ले कर जा रहा है। जैक ने उनसे पहले की तरह कहा कि कौन बिना किसी लड़ाई झगड़े के उसे चुरा कर

[11] Joaana – name of the farmer's wife

दिखायेगा। सभी ने मना कर दिया तो वह बोला "ठीक है मैं लाता हूँ। मुझे एक बढ़िया सी रस्सी दो।"

बेचारा किसान कूदता हुआ और अपनी बदकिस्मती पर दुखी होता हुआ चला जा रहा था कि उसने एक पेड़ की शाख से लटका एक आदमी देखा। उसको देखते ही उसके मुँह से निकला — "हे लौर्ड मेरी रक्षा करो। अभी एक घंटा पहले ही तो मैं यहीं से हो कर गया था। तब तो यह लाश यहाँ नहीं थी।"

फिर कुछ सोच कर वह आगे चल दिया कि उसने एक लाश और पेड़ से टँगी दिखायी दी। उसको देख कर उसके मुँह से निकला — "हे भगवान। यह क्या। अभी तो मैं एक लाश पीछे देख कर आया हूँ और अब यह दूसरी लाश। कहीं मेरा दिमाग तो खराब तो नहीं हो गया है।"

कुछ सोच कर वह फिर आगे बढ़ गया। अरे यह क्या। कुछ दूर जाने पर ही उसको एक तीसरी लाश पेड़ से लटकी हुई दिखायी दी। "हे भगवान। लगता है मैं तो पागल हो गया हूँ। यह कैसे हुआ कि तीन लाशें मुझे इतनी पास पास लटकी हुई कैसे दिखायी दीं। मैं अभी जा कर देखता हूँ कि बाकी की दो लाशें अभी भी वहाँ हैं या नहीं।"

उसने अपनी भेड़ एक पेड़ से बाँधी और लाशों को देखने के लिये पीछे लौट पड़ा। पर जैसे ही वह मोड़ से ओझल हो गया तो वह लाश पेड़ से उतरी और उसकी भेड़ खोल कर वहाँ से भाग

ली। वह जैक था। वह जंगल से होता हुआ सीधा डाकुओं के घर जा कर ही रुका।

आप सब सोच सकते हैं कि उस किसान को कैसा लग रहा होगा जब उसको पीछे वाले पेड़ों पर कोई लाश ही दिखायी नहीं दी होगी। और न ही वापस आने पर अपनी भेड़ ही मिली होगी। और न वह रस्सी ही जिससे वे लाशें लटक रही थीं। कुछ ही देर में उसका एक बकरा और एक भेड़ दोनों ही इस तरह से चोरी हो गयी थीं।

"आज कैसा बदकिस्मत दिन है। जोआना मुझसे क्या कहेगी। मेरी सुबह तो बर्बाद हो ही गयी मेरी बकरी और भेड़ भी चली गयीं हैं। मुझे कुछ न कुछ तो बेचना ही पड़ेगा उसके शाल की कीमत निकालने के लिये। मोटा बैल पास के खेत में है शायद उसको वह न देख सके। मैं उसको ले जाता हूँ।"

जब जैक भेड़ के साथ घर में घुसा तो डाकू लोगों को बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं हुआ। लेकिन जल्दी ही उन्होंने उस किसान को एक मोटा सा बैल ले जाता हुआ देखा।

जैक फिर बोला — "अच्छा अब बताओ कि इस किसान से यह बैल बिना किसी लड़ाई झगड़े के कौन ले कर आयेगा।"

एक बोला — "मैं तो नहीं ला सकता।"

दूसरा बोला — "मैं भी नहीं।"

जैक बोला — "ठीक है मैं कोशिश कर के देखता हूँ।"

कह कर वह उस किसान के पीछे पीछे चल दिया। किसान उस जगह पहुँचने ही वाला था जहाँ जैक ने पहले अपना पहला वाला जूता छोड़ा था। वहाँ उसने अपने दाँये हाथ को एक बकरा मैं मैं करता सुना।

तो उसके तो कान खड़े हो गये। तभी उसने एक भेड़ को भी बोलते सुना। उसके मुँह से निकला — "अरे ये तो ज़िन्दा हैं। हो सकता है कि ये वही बकरा और भेड़ हों जो मैंने खोये थे।"

वे आवाजें फिर से आने लगीं तो उसको लगा कि उसको जा कर देखना चाहिये कि वे उसी का बकरा और भेड़ हैं या नहीं।

सो उसने अपना बैल एक पेड़ से बाँधा और जंगल में अन्दर की तरफ चल दिया। जब वह वहाँ पहुँचा जहाँ से आवाजें आ रही थीं तो उसने फिर से थोड़ी थोड़ी आवाजें सुनीं तो उसने उनका पीछा किया।

जब वह उस जगह से जहाँ उसने अपना बैल बाँधा था आधा मील दूर पहुँच गया तब वे आवाजें आना बिल्कुल बन्द हो गयीं। वह उन्हें ढूँढता रहा ढूँढता रहा। ढूँढते ढूँढते वह थक गया तो वापस अपने बैल के पास लौटा। पर यह क्या वहाँ बैल तो क्या बैल का भूत तक नहीं था। उसने उसको दूसरी जगहों पर भी ढूँढा वह उसको वहाँ भी नहीं मिला।

इस बार चोरों ने जब जैक को बैल के साथ आते देखा वे चिल्लाये बिना न रह सके — "जैक तुम्हीं हमारे सरदार हो।" बस फिर क्या था सारा दिन खूब खाना पीना और आनन्द चलता रहा।

सोने जाने से पहले उन्होंने जैक को वह गुफा दिखायी जहॉ उनका पैसा छिपा हुआ था। उन्होंने उसको एक और गुफा भी दिखायी जिसमें उनका रूप बदलने वाली चीज़ें रखी हुई थी। उन्होंने उसकी वफादारी की कसम भी खायी।

करीब एक हफ्ते बाद एक दिन जब वे सुबह नाश्ता कर रहे थे उन्होंने जैक से कहा — "हम लोग आज मौशुरी[12] के मेले जा रहे हैं क्या तुम हमारे लिये आज घर की देखभाल कर लोगे। हम लोग बहुत दिनों से बाहर नहीं गये हैं। तुमको भी तुम्हारी बारी मिल जायेगी जब तुम चाहोगे।"

जैक बोला — "बस। इसे दोबारा कहने की जरूरत नहीं है।"

और वे चले गये। उनके जाने के बाद जैक उस नीच नौकरानी के पास गया जो उन चोरों के घर का काम करती थी और उससे पूछा — "क्या इन नीच लोगों ने तुम्हें कभी कुछ दिया है?"

"ओह कभी नहीं।"

"तब तुम आओ मेरे साथ आओ मैं तुम्हें एक अमीर आदमी बनाता हूँ।" कह कर वह उसे उस खजाने वाली गुफा में ले गया। वहॉ जा कर तो नौकरानी की ऑखें बड़ी बड़ी हो गयीं। जब वह

[12] Mochurry Fair

सोने चॉदी के ढेर को घूर रही थी तो जैक ने अपनी दोनों जेबें थैला और भी कई चीज़ें पैसों से भर लीं और वहॉ से चला गया।

बाहर जाते समय वह गुफा का दरवाजा बन्द कर के उसमें ताला लगा गया पर चाभी ताले में लगी छोड़ गया।

फिर उसने नया बढ़िया सूट पहना बकरा भेड़ और बैल लिया और उनको ले कर किसान के घर के सामने से निकला। जोहाना और उसका पति दोनों घर के दरवाजे पर ही बैठे थे। जब उन्होंने वे जानवर देखे तो खुशी से ताली बजा कर हॅसने लगे।

जैक ने पूछा — "ओ पड़ोसियों क्या आपको मालूम है कि ये जानवर किसके हैं।"

"क्या कहा कि हम नहीं जानते कि ये जानवर किसके हैं? यकीनन ये हमारे ही हैं।"

"मुझे ये जंगल में इधर उधर घूमते हुए मिले। और यह दस गिनी भरा थैला जो बकरे की गर्दन में लटका हुआ क्या यह भी आप ही का है।"

"नहीं यह थैला हमारा नहीं है।"

"पर आप इसे भी भगवान का दिया समझ कर रख लीजिये। मुझे यह नहीं चाहिये।"

पति पत्नी बोले — "ओ भले आदमी भगवान तुम्हारी सड़क पर रक्षा करे।"

जैक चलते चलते शाम को अपने पिता के घर आया। वह घर के अन्दर गया और बोला — "भगवान यहॉ सबकी रक्षा करे।"

"भगवान आपकी भी रक्षा करे सर।"

"क्या मुझे यहॉ रात को ठहरने की जगह मिल सकती है।"

"सर यह जगह आप जैसे भले आदमियों के रहने लायक नहीं है।"

"ओह पिता जी क्या आप अपने बेटे को भी नहीं पहचान पा रहे हैं?"

यह सुन कर उन्होंने अपनी ऑखें खोली। इससे पहले कि वे उसको पहचान पाते जैक तो उनकी बॉहों में गिर पड़ा था।

"पर जैक तुम्हें ये इतने बढ़िया कपड़े कहॉ से मिले?"

"और आप यह नहीं पूछ रहे कि मुझे इतना पैसा कहॉ से मिला।" कह कर उसने अपनी जेबें और थैला आदि सब वहीं मेज पर उलट दिये।

यह देख कर वे तो बहुत ही डर गये पर जब उसने उनको अपने कारनामे बताये तब उनको थोड़ा आराम मिला। फिर सब लोग आराम से सोने चले गये।

अगली सुबह जैक ने अपने पिता से कहा कि वह अपने जमींदार के पास जायें और उनसे कहें कि मैं उनकी बेटी से शादी करना चाहता हूँ।

पिता डर कर बोला — "हे भगवान। यह सुन कर तो वह मेरे ऊपर अपने कुत्ते छोड़ देगा। अगर उसने मुझसे यह पूछा कि मैंने यह पैसा कैसे पाया तो मैं क्या जवाब दूँगा।"

जैक बोला — "उससे कहियेगा कि मैं मास्टर चोर हूँ और तीनों राज्यों में मुझसे बड़ा और कोई चोर नहीं है। उससे कहियेगा कि मेरी कीमत एक हजार पौंड है। और जो चोरों से मैंने लिया है वह अलग। और हाँ यह सब बातें आप उनसे तब कीजियेगा जब उनकी बेटी उनके पास हो।"

जैक का पिता बोला — "यह किस तरह का सन्देश है जो तुम मुझसे भिजवा रहे हो। मुझे डर है कि इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा।"

जैक का पिता दो घंटे में ही वापस आ गया।

जैक ने पूछा — "पिता जी। क्या खबर?"

पिता बोला — "यह अजीब खबर काफी थी। लड़की ने तो ज़रा सी भी अपनी अनिच्छा नहीं दिखायी। मुझे लगता है कि यह पहली बार नहीं था जब तुमने उससे बात की थी। स्क्वाइर तो बहुत ज़ोर से हँस पड़ा। उसने कहा है कि अगले रविवार को तुम उसके रसोईघर के गड्ढे में से एक बतख चुरा कर दिखाओ तब वह इस बारे में कुछ सोचेगा।"

जैक बोला — "यह तो कोई बड़ी बात नहीं है।"

अगले रविवार को जब सब लोग चर्च से वापस आ गये और स्क्वाइर और उसके परिवार के दूसरे लोग रसोईघर में थे बतख आग पर घुमा घुमा कर भून रहे थे कि रसोईघर का दरवाजा खुला कि एक दुखी सी दिखायी देने वाले भिखारी अपनी पीठ पर एक थैला लिये अन्दर घुसा।

"योर औनर। क्या घर की मालकिन जब घर का खाना निबट जायेगा तो मुझे कुछ देंगी?"

स्त्री ने कहा — "अभी तो हमारे पास यहॉ तुम्हारे लिये कोई जगह नहीं है। अभी तुम बाहर पोर्च में जा कर बैठो।"

जैक बोला — "भगवान आपका और आपके परिवार का भला करे योर औनर।" तभी जैक ने एक खरगोश अपने थैले से बाहर निकाल कर छोड़ दिया।

जल्दी ही एक जो खिड़की के पास बैठा हुआ था चिल्लाया — "वह देखो एक बड़ा खरगोश इस घर के चारों तरफ चक्कर काट रहा है। हम इसके पीछे जाते है इसको पकड़ने के लिये।"

"खरगोश पकड़ना तुम्हारे बस का नहीं है। तुम जहॉ बैठे हो वहीं बैठे रहो।"

इतने में खरगोश बागीचे में भाग गया पर जैक ने जो भिखारी के वेश में था अपने थैले में से एक और बड़ा खरगोश बाहर निकाल दिया।

पहला आदमी फिर बोला — "अरे देखो न। यह बड़ा खरगोश फिर यहीं घूम रहा है। इस बार यह बच कर नहीं जा सकता। मैं इसके पीछे जाता हूँ। कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द है और मिस्टर जैक अन्दर नहीं आ सकता।"

"मैं कह रहा हूँ चुपचाप बैठे रहो।"

कुछ मिनट बाद ही वह फिर चिल्ला पड़ा कि वह बड़ा खरगोश अभी भी वहीं घूम रहा है। पर यह तीसरा बड़ा खरगोश था जो जैक ने अपने थैले से बाहर निकाला था। क्योंकि कानून के अनुसार उनको इससे ज़्यादा देर के लिये अन्दर बन्द करके भी नहीं रखा जा सकता था। उस तीसरे बड़े खरगोश को देख कर घर में से सब बाहर निकल आये – स्क्वाइर भी।

भिखारी ने सोचा "यह समय ठीक है मुझे अब बतख लेने के लिये उस गड्ढे की तरफ जाना चाहिये जबकि सभी लोग घर से बाहर हैं।"

जाओ और किसी और को अपनी ज़िन्दगी में मत आने दो। वह तीसरा खरगोश भी इधर उधर चला गया। जब वे सब उसको ढूँढ कर वापस आये तो न तो उनको खरगोश ही मिला न वहाँ वह भिखारी था और न वहाँ वह बतख थी।

जमींदार के मुँह से निकला — "सत्यानाश हो तुम्हारा जैक। इस बार तुम मुझसे जीत गये।"

कुछ समय बाद वे फिर खाना बना रहे थे कि जैक के पिता का भेजा हुआ एक आदमी वहॉ आया और बोला कि जैक के पिता ने आपको, आपकी पत्नी को और बिटिया को घर बुलाया है और कहा है कि आप उसमें उनका हिस्सा बॅटाऐं जो उन्हें भगवान ने दिया है।

इसमें परिवार का कोई गन्दा नीच उद्देश्य नहीं दिखायी दे रहा था सो वे सब वहॉ चले गये। वहॉ पहुॅच कर उन सबने भुनी हुई तीतर और भुनी हुई गाय और अपनी वाली भुनी हुई बतख खायी। स्क्वाइर के तो इस चाल पर हॅसते हॅसते पेट में बल पड़ गये।

जैक के बढ़िया कपड़े और उसके ढंग चाल उस लड़की की पसन्द को प्रभावित नहीं कर सके जो उसके दिल में पहले से ही थी। क्योंकि वह तो उसको पहले ही से पसन्द करती थी।

जब वे लोग रेत से ढके फर्श पर पड़ी ओक की मेज पर बैठ कर शर्बत पी रहे थे तो स्क्वाइर बोला — "तुम मेरी बेटी को इतनी आसानी से नहीं ले सकते जब तक कि तुम मेरे छह घोड़े जिन पर छह सवार बैठे होंगे और जो कल रात मेरी घुड़साल में उनकी पहरेदारी कर रहे होंगे नहीं चुरा लोगे।"

जैक मुस्कुरा कर बोला — "इस नौजवान लड़की के लिये तो कल मैं इससे भी ज़्यादा करूॅगा।" यह सुन कर नौजवान लड़की के गाल शर्म से आग जैसे लाल हो गये।

सोमवार को छह घोड़े छह सवारों के साथ स्क्वाइर की घुड़साल में बन्द थे। उन सब सवारों के कोट की जेब में एक एक बोतल

बढ़िया शराब की थी। घुड़साल का दरवाजा जैक के आने के लिये खुला छोड़ दिया गया था।

काफी देर तक वे खुशी मनाते रहे मजाक करते रहे गाने गाते रहे और उस बेचारे जैक पर दया दिखाते रहे। समय बीतता रहा। शराब का असर कम होता रहा वे ठंड के मारे कॉपने लगे और सुबह का इन्तजार करने लगे। काश सुबह जल्दी हो जाये।

इतने में एक बुढ़िया जिसके पास छह थैले थे और जिसकी ठोढ़ी पर आधी इंच की दाढ़ी थी दरवाजे पर आयी।

आ कर वह बोली — "ओ भले ईसाइयो। क्या तुम लोग मुझे अन्दर आने की इजाज़त दोगे। थोड़ी सी जगह उस भूसे के ऊपर देंगे। मैं इस ठंडी रात में थोड़ी गर्मी ले लूँगी नहीं तो बाहर तो मैं जम ही जाऊँगी अगर तुम लोगों ने मुझे शरण नहीं दी तो।"

सबने आपस में विचार किया कि इसको अन्दर आने देने में कोई हर्जा नहीं है सो उन्होंने उसको अन्दर बुला लिया। वह भी अन्दर आ कर ठंड में सिकुड़ी सी बैठ गयी।

कुछ देर बाद ही उन्होंने देखा कि उस बुढ़िया ने अपनी एक बड़ी सी शराब की बोतल निकाली और उसमें से एक बड़ा सा घूँट भरा। वह खॉसी और फिर उसने अपने होठ चाटे। उन छह सवारों को ऐसा लगा कि जैसे शराब के घूँट को पीकर वह कुछ ज़्यादा ही आराम महसूस करने लगी है।

ऐसा दिखा कर बुढ़िया ने उनसे पूछा कि क्या वे भी उसमें से कुछ शराब पीना पसन्द करेंगे। उन्होंने आपस में कहा "अरे अपना घमंड छोड़ो और इससे शराब ले लो।" सो उन्होंने कहा कि "हॉ ठीक है हम भी पी लेंगे। बहुत बहुत धन्यवाद।"

बुढ़िया ने बोतल उन लोगों को दे दी और वह बोतल अब उनके हाथों में घूमने लगी। आखिरी आदमी ने तौर तरीके से उसमें आधा गिलास शराब बुढ़िया के लिये छोड़ दी। उन्होंने बुढ़िया को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि वह सबसे अच्छी शराब थी जो उन्होंने कभी अपनी ज़िन्दगी में पी थी।

बुढ़िया ने कहा — "मैं भी तुम सबकी बहुत आभारी हूँ कि तुम लोगों ने इतनी ठंड में मुझको यहॉ रख कर मेरी ठंड से रक्षा की। मेरे पास शराब की एक बोतल और भी है सो तुम लोग आपस में बॉट पी कर मुझे बोतल वापस कर देना ताकि उसकी बाकी बची शराब मैं पी सकूँ। उस बोतल से उन्होंने जो शराब पी तो वह उनको और अच्छी लगी।

जब तक आखिरी आदमी ने वह शराब खत्म की तब तक पहला आदमी घेड़े पर बैठा बैठा गहरी नींद में सो चुका था क्योंकि उस बोतल में कुछ सुलाने की दवा भी मिली हुई थी।

भिखारिन ने हर आदमी को घोड़े पर से उतारा और उसे नीचे लिटा दिया। हर घोड़े के खुरों पर उसने मोजे पहना दिये। और

वहॉ से उनको बिना कोई आवाज किये लेकर बाहर जैक के पिता के घर ले गयी।

जब सुबह हुई तो स्क्वाइर सबसे पहले अपनी घुड़साल में यह देखने गया कि उसके घोड़े वहॉ सुरक्षित थे या नहीं। जैसे ही वह घर से बाहर निकला तो उसने देखा कि एक घोड़े पर सवार जैक उसी की तरफ चला आ रहा है और उसके पॉच घोड़े उस घोड़े के पीछे पीछे आ रहे हैं।

"आश्चर्य जैक आश्चर्य। और आश्चर्य उनका भी जिन्होंने तुम्हें अन्दर आने दिया।" फिर वह घुड़साल में गया तो उसने उनको जबरदस्ती जगाया। उसको देख कर उसके छहों सवारों ने शर्म से अपने अपने सिर झुका लिये।

जब वे सब नाश्ता करने बैठे तो स्क्वाइर ने कहा — "इतने बेकार के आदमियों को बेवकूफ बना कर घोड़े चुराना कोई खास बात नहीं है।

मैं एक जंगल में एक बजे से तीन बजे तक घोड़े पर सवार हो कर घूमूॅगा। अगर तुम मुझे धोखा दे कर मुझसे मेरा घोड़ा ले लोगे तब मैं जानूॅगा कि तुम मेरी बेटी से शादी करने के अधिकारी हो।"

जैक बोला — "अगर इसमें प्यार नहीं होता तो मैं इससे ज़्यादा करता।" यह सुन कर लड़की ने अपना चेहरा चाय के प्याले के नीचे रखी प्लेट से ढक लिया।

अपने कहे अनुसार स्क्वाइर जंगल में घोड़े पर सवार घूमता रहा। घूमते घूमते वह थक गया पर अभी तक जैक का कोई पता नहीं था। वह यह सोच कर कि अब तो जैक हार गया घर जाने ही वाला था कि उसने अपने घर की तरफ से अपना एक नौकर भागता आता देखा। ऐसा लग रहा जैसे वह पागल सा हो गया हो।

वह पास आते ही बोला — "मालिक मालिक। अगर आप अपनी पत्नी को ज़िन्दा देखना चाहते हैं तो घर जल्दी से जल्दी चलिये। मैं डाक्टर को बुलाने जा रहा हूँ। वह दो ज़ीनों[13] से नीचे गिर पड़ी हैं। उनकी गरदन का पिछला हिस्सा और दोनों बाँहें टूट गये हैं। वह कुछ बोल भी नहीं पा रही हैं। अगर आप उनको ज़िन्दा देख पाये तो भगवान की बहुत बड़ी कृपा होगी। जितनी जल्दी हो सके आप घर चलिये।"

स्क्वाइर बोला — "तुम यह घोड़ा ले जाओ। डाक्टर यहाँ से डेढ़ मील दूर है।"

"जैसा आप कहें मालिक। हे भगवान मुझे यह दिन भी देखना था – आपका यह बिगड़ा हुआ शरीर।"

"ज़्यादा शोर मत मचाओ। जाओ जल्दी जाओ जैसे जंगली आग चलती है। ओह मेरी प्यारी। यह हमारा कौन सा इम्तिहान है।"

[13] Translated for the words "Flight of stairs"

स्क्वाइर वहॉ से तुरन्त ही घर पहुँचा पर वहॉ पहुँच कर तो वह आश्चर्यचकित रह गया। वहॉ तो कोई हलचल नहीं थी। और जब वह कमरे में पहुँचा तो उसने देखा कि उसकी पत्नी और बेटी तो मेज पर बैठी सिलाई कर रही थीं। बल्कि वे उसके इतने शोर से आने पर और उसका बदहवास चेहरा देख कर चिल्ला पड़ीं।

जब वह कुछ बोलने लायक हुआ — "ओह मेरी प्यारी। यह सब कैसे हुआ? क्या तुमको कुछ तकलीफ पहुँची? मुझे तो पता ही नहीं था कि तुम सीढ़ियों से नीचे गिर गयी हो। क्या कुछ हो गया मुझे बताओ तो।"

"भगवान का धन्यवाद है कि जबसे आप यहॉ से गये हैं मुझे तो कुछ नहीं हुआ। और आपका घोड़ा कहॉ है।"

कोई भी उस हालत को नहीं बता सकता जो अगले **15** मिनट तक दोनों पति पत्नी की रही – जैक पर गुस्सा, पत्नी के ठीक होने की खुशी और स्क्वाइर का छला जाना।

उसने जल्दी ही घोड़े को सड़क पर आते देखा। उसकी गद्दी पर वह नौजवान बैठा हुआ था। नौकर का एक हफ्ते तक पता नहीं चला। पर वह नौकर किसी बात की चिन्ता क्यों करता जब जैक ने उसे **10** गिनी दे दी थीं।

जैक भी फिर अगली सुबह तक नहीं आया और अगली सुबह जब वह आया तो उसका बड़ा अजीब सा स्वागत हुआ।

स्क्वाइर बोला — "यह सब तुम्हारा गन्दा खेल था जो तुमने खेला। तुमने मेरे दिल को जो धक्का पहुँचाया मैं उसके लिये तुम्हें कभी माफ नहीं करूँगा। पर मैं तुमसे बहुत खुश हूँ और अपनी बेटी की शादी तुमसे करने से पहले मैं तुम्हारा एक इम्तिहान और लेना चाहता हूँ।

अगर तुम आज की रात मेरे और मेरी पत्नी के नीचे से मेरे बिस्तर की चादर निकाल लो तो मैं कल तुम्हारे साथ अपनी बेटी की शादी कर दूँगा।"

जैक बोला — "मैं कोशिश करूँगा। पर अगर इसके बाद आप मेरी दुलहिन को मुझे नहीं देंगे तो मैं उसको भी चुरा कर ले जाऊँगा चाहे वह कितने भी ड्रैगन से सुरक्षित क्यों न हो।"

सो जब स्क्वाइर और उसकी पत्नी बिस्तर में थे और चाँद खिड़की से चमक रहा था तो उसने एक सिर खिड़की से ऊपर उठते देखा जैसे वह कमरे में झाँक रहा हो। और फिर उसे नीचे जाते देखा।

स्क्वाइर ने सोचा "यह तो जैक है। मैं उसको थोड़ा चौंकाता हूँ।"

उसने अपनी बन्दूक निकाली और उसे खिड़की के नीचे के हिस्से की तरफ साधा। उसकी पत्नी यह देख कर बोली — "हे भगवान। मुझे यकीन है कि आप उस बहादुर आदमी को नहीं मारेंगे।"

"यकीनन। मैं तो उसे एक राज्य के लिये भी नहीं मारूँगा। इसमें केवल पाउडर है।"

एक बार फिर सिर ऊपर आया और स्क्वाइर ने गोली चला दी। शरीर नीचे गिर गया। नीचे पत्थरों पर एक बहुत जोर की आवाज हुई।

पत्नी चिल्लायी — "ओह बेचारा जैक या तो मारा गया या फिर ज़िन्दगी भर के लिये अपाहिज हो गया।"

स्क्वाइर बोला — "ऐसा कुछ नहीं हुआ है।"

और वह सीढ़ियों से नीचे दौड़ा। उसने दरवाजा बन्द करने की भी कोशिश नहीं की और बाहर बागीचे में चला गया।

तभी इससे पहले कि वह खिड़की के नीचे तक पहुँचता और वहाँ से वापस आता उसकी पत्नी ने उसकी आवाज कमरे के दरवाजे पर सुनी — "प्रिये प्रिये। मुझे बिस्तर की चादर दो। वह अभी मरा नहीं है पर उसका खून तो बहुत बह रहा है। मुझे उसको पोंछना चाहिये और फिर किसी को बुलाना चाहिये ताकि वह मेरे साथ इसको उठाने में सहायता कर सके।"

पत्नी ने तुरन्त ही बिस्तर की चादर खींची और दरवाजे की तरफ फेंक दी। वह तुरन्त ही बिजली की गति से वहाँ से भाग गया। जब स्क्वाइर अन्दर आया तो वह केवल कमीज पहने था जो वह पहन कर बाहर गया था।

"ओह जैक इस तरह की बदतमीजी के लिये मैं तुम्हें ऊँचा टॉग दूँगा।"

"क्या कहा आपने पक्का रोग? क्या वह घायल नहीं हुआ?"

"मुझे कोई चिन्ता नहीं अगर वह हुआ भी हो तो। क्या तुम्हें मालूम है कि खिड़की से ऊपर नीचे क्या आ जा रहा था? और इतनी आवाज के साथ क्या नीचे गिरा? एक आदमी के कपड़े जिनमें भूसा और कुछ पत्थर भरे हुए थे।"

"तो आपने बिस्तर की उस चादर का क्या किया जो आप मुझसे उसे बॉधने के लिये ले गये थे? क्या आपने उससे उस भूसा भरे आदमी का खून पोंछा?"

"चादर? मुझे तो कोई चादर नहीं चाहिये थी।"

"मुझे नहीं मालूम कि आपको चादर चाहिये थी या नहीं पर आपने यहॉ दरवाजे पर खड़े हो कर मॉगी और मैंने उसको आपके ऊपर फेंका।"

"ओ जैक जैक जैक। तुम बहुत ही बड़े धूर्त हो। तुमसे टक्कर लेने का कोई फायदा नहीं। अब हमको एक रात बिना चादर के ही सोना पड़ेगा। इस मुसीबत से छुटकारा पाने के लिये अब हम कल ही तुम्हारी शादी कर देंगे।"

सो अगले दिन जैक की शादी हो गयी। जैक एक बहुत अच्छा पति साबित हुआ। स्क्वाइर और उसकी पत्नी अपने दामाद की तारीफ करते नहीं थकते थे।

8 आलसी जैक[14]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक राजा और रानी अपनी बेटी के साथ रहते थे। राजकुमारी बहुत सुन्दर थी। राजा और रानी अपनी बेटी को इतना प्यार करते थे कि उन्होंने उसको वह सब दे रखा था जो वे उसको दे सकते थे।

उसके पास हाथों के कंगन थे, गले के हार थे जिनमें बहुत सारे जवाहरात जड़े हुए थे। उसके पास बहुत कीमती कीमती पोशाकें थी जिनमें मोती से कढ़ाई की गयी थी।

उसका पूरा कमरा खिलौनों से भरा हुआ था। उसके पास खेलने के लिये एक काला कुत्ता भी था और एक सफेद छोटा घोड़ा था सवारी के लिये। उसके पास कई नौकर थे जो उसकी सफाई करते थे और उसके लिये बहुत स्वादिष्ट खाना बनाते थे।

इतना सब होते हुए भी क्या तुम सोचते हो कि राजकुमारी खुश थी? नहीं, वह खुश नहीं थी।

जैसे जैसे वह बड़ी होती गयी उसके खिलौने आलमारी के अन्दर जाते गये। कुत्ते को अब नौकर घुमाने के लिये ले कर जाते थे और उसका छोटा घोड़ा घुड़साल में खड़ा खड़ा मोटा होता जा रहा था।

[14] Lazy Jack – a folktale adapted from a book “English Folktales” edited by Dan Keding and Amy Douglas

उसका कहीं मन ही नहीं लगता था। उसके पास कुछ करने के लिये ही नहीं था। वह अपने कमरे में बैठी बैठी रोती रहती और कोई भी चीज़ उसको आकर्षित नहीं कर पाती।

उसके माता पिता यह सोच ही नहीं पा रहे थे कि वह उसके लिये क्या करें। उन्होंने हर मुमकिन कोशिश कर ली ताकि उनकी बेटी हॅस सके पर कुछ भी नहीं हो पा रहा था।

वे मदारी ले कर आये, उन्होंने कई तमाशा दिखाने वाले बुलवाये, जादूगर, हॅसाने वाले, गवैये, जोकर बुलवाये पर राजकुमारी को कोई हॅसा नहीं पाया। वह इन सबको देखती, एक आह भरती और फिर अपने कमरे में चली जाती।

उन्होंने उसके लिये बहुत सारी नयी नयी पोशाकें खरीदीं, गहने खरीदे, टैडी बेयर खरीदे, कछुए खरीदे, पर राजकुमारी न हॅसी।

तो अब वे क्या करें। अन्त में उन्होंने अपने सारे देश में चारों तरफ सन्देश ले जाने वाले भेज दिये कि जो कोई उनकी बेटी को हॅसायेगा उसको एक बहुत बड़ा इनाम मिलेगा – सोने से भरा हुआ थैला।

यह घोषणा सुन कर बहुत सारे लोग राजकुमारी को हॅसाने आये। उन्होंने बहुत सारे चुटकुले सुनाये, अपने मुॅह बनाये, एक टॉग पर कूद कूद कर गिर पड़े पर इनमें से कुछ भी राजकुमारी को न हॅसा सका।

जहॉ राजा का महल था और जहॉ ये तीनों रहते थे वहॉ से कुछ दूरी पर एक लड़का रहता था। उसका नाम जैक था।

जैक की एक खासियत थी कि वह कभी उकताता नहीं था। वह हमेशा खुश रहता पर बस तभी तक जब तक कि वह आग के पास बैठा रहता और कोई काम नहीं करता।

पहले वह अपने हाथों की हथेलियों को आग के सामने फैला कर गर्म करता फिर जब वे गर्म हो जातीं तो हाथ के पीछे के हिस्से को गर्म करता। जब हाथ के पीछे के हिस्से गर्म हो जाते तो वह फिर से हाथों के आगे के हिस्सों को गर्म कर लेता।

सो जैक तो बस हर समय यही करता रहता पर उस समय में उसकी मॉ घर के काम में लगी रहती। वह कपड़े धोती, उनको सुखाती फिर उन पर इस्तरी करती।

वह खाना बनाती, मेज लगाती, बर्तन साफ करती, घर की सफाई करती। फिर अपने दोनों के लिये पैसा कमाने के लिये कुछ सूत कातती और सिलाई करती।

यह सब क्या ठीक था? नहीं, वह खुद भी यही सोचती थी। एक दिन जब वह इस सबसे थक गयी तो एक दिन जैक से बोली — "जैक अब बहुत हो गया। मैं अपने हाथों से कितना काम करती हूॅ और तुम यहॉ बस आग के पास ही बैठे रहते हो। चलो उठो और जा कर कोई काम ढूॅढो।"

"काम ढूॅढू मॉ? और मैं?"

"हॉ काम ढूँढो और तुम काम ढूँढो। यहॉ से कुछ दूरी पर एक किसान रहता है उसको सहायता की जरूरत है। सो उठो और उसके पास जाओ और जा कर उसके पास जा कए कुछ काम करो।

अब हमारे पास पैसे भी नहीं है और कुछ खाने को भी नहीं है। अगर तुमको काम नहीं मिला तो आज रात को हम में से किसी को भी रात की चाय भी नहीं मिलेगी।"

जैक ने अपनी मॉ की तरफ देखा। जिस तरह से वह उसके सामने झाड़ू लिये खड़ी थी उसको लगा कि काम करने का विचार बुरा नहीं था।

सो वह उठा, उठ कर अपनी पैन्ट पर से धूल झाड़ी और दरवाजे की तरफ चल दिया। वह सड़क पर गया, पुल के ऊपर गया और फिर सड़क पर कुछ दूर और गया जब तक कि वह उस किसान के खेत पर नहीं आ गया जिसके घर उसको उसकी मॉ ने भेजा था।

उसने देखा कि उस खेत पर एक साइन बोर्ड लगा था "खेत पर सहायता चाहिये।"

वहॉ जा कर उसने किसान से बात की। किसान ने देखा कि जैक मजबूत था सो उसने उसको उसी समय अपने खेत पर काम करने के लिये रख लिया।

जैक ने पहले कभी काम नहीं किया था पर कुछ देर बाद ही उसको लगने लगा कि काम करना तो उसको अच्छा लग रहा है। उसने सारा दिन बड़ी मेहनत से काम किया और जब शाम को किसान उसके पास आया तो किसान भी उसका काम देख कर बहुत खुश हुआ।

वह बोला — "शाबाश जैक। तुमने बहुत मन लगा कर काम किया। तुमने एक आदमी का नहीं बल्कि दो आदमियों का काम किया है। लो अपनी मजदूरी के लिये यह सोने का सिक्का रखो और कल फिर आ जाना।"

"धन्यवाद।" कह कर जैक ने वह सोने का सिक्का लिया और अपने घर चल दिया।

रास्ते में उसने उस सिक्के को चमकाने के लिये हाथ से मला और फिर उसको अपने अँगूठे और पहली उँगली पर सँभाल कर रख कर ऊपर हवा में उछाल दिया और फिर उसको अपनी मुट्ठी में पकड़ लिया।

इस तरह से सारे रास्ते वह उस सिक्के को उछाल उछाल कर उससे खेलता चला आया – हवा में उछालता हुआ और फिर अपनी मुट्ठी में पकड़ता हुआ, फिर हवा में उछालता हुआ और फिर अपनी मुट्ठी में पकड़ता हुआ।

पर जब वह पुल के ऊपर उसके बीच में था तब जब उसने ऐसा किया तो वह उसको मुट्ठी में नहीं पकड़ पाया और वह सिक्का पानी में गिर गया।

जैक ने उसको पुल के ऊपर झुक कर पकड़ने की भी कोशिश की, पर नहीं वह तो नीचे पानी में गिर चुका था। अब वहॉ पानी ही पानी था और सिक्का तो पानी में डूब चुका था।

जैक घर आया। उसकी मॉ तो उसका दरवाजे पर ही इन्तजार कर रही थी। जैक को वापस आया देख कर वह बोली — "ओह जैक तुम तो सारा दिन के गये हुए हो इससे ऐसा लगता है कि तुम को वहॉ काम मिल गया। मिल गया न?"

"हॉ मॉ मिल गया।"

"और तुमको उसने तुम्हारे काम के बदले में कुछ दिया क्या?"

"हॉ मॉ उसने मुझे एक सोने का सिक्का दिया।"

"सोने का सिक्का? यह तो बहुत अच्छा है। तुमने बहुत अच्छा किया। अब तुम मुझको वह सोने का सिक्का दो तो फिर मैं तुम्हारे लिये कुछ खाना खरीद कर लाती हूँ और तुम्हारी मनपसन्द चाय बनाती हूँ।"

तब जैक को मॉ को सब बताना पड़ा कि सिक्के का क्या हुआ। सुनते सुनते उसकी मॉ का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

"जैक तुम तो बहुत ही बेवकूफ लड़के हो। तुम्हें पता है कि सोने के सिक्के खेलने के लिये बहुत ज़्यादा कीमती होते हैं। बजाय

उसके साथ इस तरह से खेलने के और नदी में गिराने के अगर तुमने उसको जेब में सुरक्षित रूप से रखा होता... ।"

तुम मुझसे वायदा करो कि कल तुमको जो कुछ भी मिलेगा तुम उसको अपनी जेब में सुरक्षित रख कर लाओगे।"

जैक ने वायदा किया कि अगले दिन वह वैसा ही करेगा।

अगले दिन जैक कूदता हुआ और सीटी बजाता हुआ फिर काम पर गया। सारा दिन उसने बड़ी मेहनत से काम किया तो शाम को जब किसान उसको देखने के लिये आया तो वह उसके काम से फिर से बहुत खुश था।

वह बोला — "शाबाश जैक तुमने आज फिर बहुत मेहनत से काम किया है। आज कल गायें बहुत अच्छा दूध दे रही हैं तो मैंने सोचा कि आज मैं तुमको एक बड़ा जग भर कर क्रीम देता हूँ। सो लो यह लो क्रीम और कल फिर मिलते हैं।"

"धन्यवाद।" कह कर जैक अपने घर की तरफ चल दिया। उसे ध्यान आया कि उसने अपनी माँ से वायदा किया था कि आज उसको जो कुछ भी मिलेगा उसको वह अपनी जेब में रख कर लायेगा।

सो उसने अपनी पैन्ट की एक जेब खोली और उस जग में से आधी क्रीम उस जेब में डाल ली। फिर उसने अपनी पैन्ट की दूसरी जेब खोली और बाकी बची आधी क्रीम उस दूसरी जेब में डाल ली।

उस दिन दिन गर्म था तो सारे रास्ते जैक की जेबों से वह क्रीम टपकती चली गयी – पहले उसकी टॉगों में फिर उसके जूतों में। जब तक वह घर पहुँचा तब तक सारी क्रीम उसके पैरों में पहुँच गयी थी और उसके पैरों की उँगलियॉ मक्खन में भीग गयी थीं।

घर पर उसकी मॉ उसका दरवाजे पर ही इन्तजार कर रही थी। उसको देखते ही बोली — "अरे तुम्हारी पैन्ट तो सारी गीली हो रही है। क्या हुआ तुमको?"

उन्होंने जैक को बुलाने के लिये अपने आदमी भेजे और उसको राजा के दरबार में राजकुमारी को ठीक करने के लिये उसको इनाम देने के लिये राजा, रानी और राजकुमारी के सामने लाया गया।

जैक को एक बड़ा थैला भर कर सोना दिया गया पर जैक तो उधर देख ही नहीं रहा था। उसकी नजर तो राजकुमारी पर लगी थी। अब वह हॅस रही थी और सुन्दर भी लग रही थी।

और राजकुमारी के हॅसने की वजह यह थी कि वह जैक की तरफ देख रही थी। यह बात राजा और रानी ने देखी तो वे भी हॅस दिये।

जल्दी ही जैक और राजकुमारी की शादी की घंटियॉ सारे शहर में बज गयीं। जब दोनों की शादी हो गयी तो जैक राजकुमारी के

घर आ कर रहने लगा। पर वह वहॉ अकेला नहीं गया वह अपनी मॉ को भी साथ ले गया।

जैक की मॉ को रहने के लिये उसका अपना घर दिया गया। एक बहुत बड़ा कमरा जिसमें चार खम्भे वाला एक पलंग पड़ा था। बैठने का एक गर्म कमरा था जिसमें आग के सामने झूलने वाली एक आराम कुर्सी पड़ी थी।

उसको जितने नौकरों की जरूरत थी उतने नौकर भी दे दिये गये – कपड़े धोने के लिये, सुखाने के लिये, इस्तरी करने के लिये खाना बनाने के लिये, सफाई करने के लिये, झाड़ू लगाने के लिये आदि आदि।

9 मैं अगली बार ज़्यादा अक्लमन्द रहूँगा[15]

अब जैक बीस साल का हो गया था पर उसने कभी अपने परिवार के लिये कुछ नहीं किया था सो आखिर उसकी मॉ ने कहा कि अब समय आ गया है जब तुमको अपने परिवार का ख्याल रखना चाहिये।

उसकी मॉ को कॉटे वाली झाड़ियॉ काटनी थीं सो अगले दिन उसने उसको एक पेड़ काटने की कैंची खरीदने के लिये बाजार भेजा।

जब वह कैंची खरीद कर घर वापस आ रहा था तो वह अपने सिर के चारों तरफ से बाल काटता चला आ रहा था। यहॉ तक कि एक बार वह कैंची उसके हाथ से फिसल गयी और पास में एक पड़ोसी के मेमने को लग गयी जिसको उसका पड़ोसी ले कर घर जा रहा था। मेमना बेचारा मर गया।

सो जब उसने ऐसा किया था तो उसकी मॉ को पड़ोसी को उसके पैसे देने पड़े। जैक का अपमान भी हुआ।

उसकी मॉ चिल्लायी — "मूशा ओ बेवकूफ। क्या तुम कैंची को अपने किसी पड़ोसी की गाड़ी में रख कर या फिर भूसे के ढेर में छिपा कर नहीं ला सकते थे जो तुम्हारे दूसरे पड़ोसी ला रहे थे।"

[15] I'll Be Wiser Next Time. A folktale from Ireland. Available on the Web Site : https://www.pitt.edu/~dash/type1696.html#england

वह बोला — "मॉ अब तो जो हो गया सो हो गया। आगे से मैं ज़्यादा अक्लमन्दी से काम करूँगा।"

अगले शनिवार को मॉ ने जैक से कहा — "पिछले शनिवार को तो तुमने बहुत ही बेवकूफी का काम किया था। अबकी बार थोड़ी अक्लमन्दी से काम करना और हमको परेशानी में मत डालना। यह लो पॉच सैन्ट का सिक्का लो और मेरे लिये एक जोड़ी अच्छी से बुनने की सलाइयॉ ला दो। और देखो उनको सुरक्षित घर लाना।"

"मॉ डरो नहीं।"

जब जैक शहर में घूम रहा था तो उसने सलाइयॉ खरीदीं उसके बाद वह घर की तरफ चला तो उसने अपने पड़ोसी को उसकी अपनी कार के एक तरफ को बैठा पाया। उसके पास ही एक भूसे की एक गठरी रखी हुई थी। उसने सोचा यही बहुत अच्छी जगह है सलाइयॉ रखने की सो उसने वे सलाइयॉ उसके भूसे की गठरी में रख दीं।

जब वह घर वापस आया तो वह अपने इन्तजाम से बहुत खुश था। वह जब घर आया तो मॉ ने पूछा — "जैक मेरी सलाइयॉ कहॉ हैं।"

"ओह मॉ चिन्ता न करो। वे सुरक्षित हैं। किसी को जैम डायल[16] के घर भेज कर मॅगवा लो। वे उसके भूसे की गठरी में हैं जो उसकी कार में है।"

[16] Jem Doyle

"मूशा। ओह जैक। तुम उनको अपने टोप की पट्टी में लगा कर क्यों नहीं लाये? अब हम भूसे में उन्हें कहाँ ढूँढेंगे।"

"मगर तुमने ही तो कहा था कि मुझे हर चीज़ कार में रख कर और भूसे में छिपा कर लानी चाहिये। कोई बात नहीं अगली बार मैं और अक्लमन्दी से काम लूँगा।"

अगले हफ्ते जैक को एक पड़ोसी के घर भेजा गया। उसका घर करीब एक मील दूर था। उसकी माँ को उसका ताजा मक्खन चाहिये था। उस दिन दिन बहुत गर्म था। जैक को अपनी माँ की बात याद थी सो उसने मक्खन जो एक बन्द गोभी के पत्ते में लिपटा हुआ था अपने टोप और उसकी पट्टी के बीच में खोंस लिया।

पर इस बार उसकी किस्मत पहली बार से ज़्यादा अच्छी थी क्योंकि इस बार वह मक्खन को अपने बालों और नीचे तक कपड़ों में बहते हुए सुरक्षित ले आया था। कुछ लोगों को इससे खुशी नहीं मिली और उसकी माँ तो इतनी नाराज हुई कि वह तो बस उसकी पिटायी ही करने वाली थी।

सारे गाँव में जैक की पहले ही कोई इज़्ज़त नहीं थी पर इस घटना के बाद तो बिल्कुल ही नहीं रही। उसको अगले पन्द्रह दिनों के लिये बाजार नहीं भेजा गया।

फिर उसकी माँ ने उसको दो मुर्गे दिये और कहा — "इनको बाजार में बेचना है। जो पहला खरीदार आये उसी को बेचने की

जल्दी न करना। कुछ खरीदारों का इन्तजार करना और अपनी अक्ल काम में लाना।"

जैक उनको ले कर सुरक्षित रूप से बाजार पहुँच गया।

एक खरीदार आया उसने जैक से पूछा — "ओ ईमानदार बच्चे। इन मुर्गों की क्या कीमत है।"

उसने सोचा कि मेरी मॉ ने कहा था कि इनका दाम तीन शिलिंग है। पर उसने साथ में यह भी कहा था कि इतना पैसा तुम्हें पहली बार में नहीं मिलेगा।

सो वह बोला — "पर वह तो कभी सच बोली ही नहीं। क्या आप इनके अठारह पैंस देंगे।[17] अगर आप नहीं देंगे तो उसने कहा था कि मुझे दूसरे खरीदार का इन्तजार करना चाहिये।"

"वह बहुत समझदार है। लो यह एक शिलिंग लो।"

जैक फिर बोला — "मुझे लगता है कि यही ज़्यादा अक्लमन्दी का काम होगा कि मैं इनसे इनके अठारह पैन्स लूँ। पर मुझे इसके वही दाम स्वीकार करने चाहिये जो उसने बताये हैं इससे वह मुझ पर कोई इलजाम नहीं लगा पायेगी।"

इस सौदे के बाद जैक का तीन हफ्ते तक अपमान होता रहा। और उसके बाद तो फिर पड़ोसी लोग जैक के बारे में यह कहने लगे कि जैक की मॉ में तो जैक के बराबर भी अक्ल नहीं है।

[17] In olden days Britain had the currency – Pound, Shilling, Pence. 1 Pound = 20 Shillings; 1 Shilling = 12 Pence. Thus 3 Shillings = 36 Pence. He is aking only 18 Pence.

अगले बाजार दिन जैक की मॉ ने उसको एक भेड़ बेचने के लिये भेजा और कहा — "अगर तुम इस जानवर के सबसे ऊॅचे दाम नहीं ले कर आये तो मैं तुम्हारी जान ले लूॅगी।"

"ओह। क्या मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

जब वह उस भेड़ को ले कर बाजार में खड़ा हुआ था कि एक थोक का व्यापारी आया और उससे पूछा कि वह उस भेड़ को कितने में बेचेगा।

जैक बोला — "मेरी मॉ तब तक सन्तुष्ट नहीं होगी जब तक मैं इसको सबसे ऊॅचे दाम पर नहीं बेचूॅगा।"

दूसरा बोला — "क्या तुम गिनी नोट लोगे?"

जैक ने पूछा — "क्या यह बाजार की सबसे ऊॅची पैनी है?"

एक और आदमी जो ये बातें सुन रहा था बोला — "नहीं। पर लो यह लो बाजार की सबसे ऊॅची पैनी।" कहते हुए वह आदमी वहीं पास में रखी एक सीढ़ी पर चढ़ गया। और वहॉ से बोला — "लो यह रही तुम्हारी सबसे ऊॅची पैनी और अब यह भेड़ मेरी है।"

अगर यह सुन कर जैक की मॉ का दिल न टूटा हो तो... कोई बात नहीं। उसने कहा कि जब तक वह ज़िन्दा रहेगी वह इसके बाद फिर कभी एक शिलिंग भी नहीं खोयेगी पर उसको फिर से जैक को अगले शनिवार को घर का कुछ सामान लाने के लिये बाजार भेजना पड़ा क्योंकि उस दिन क्रिसमस की शाम थी।

वह बोली — "जैक मुझे कुछ दालचीनी लौंग और आधा पौंड किशमिश चाहिये। क्या तुम उन्हें ला सकते हो?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। मुझे रास्ता मालूम है और मैं भूलूँगा भी नहीं।" इतना कह कर वह वहॉ से भाग गया रास्ते में कहीं रुका भी नहीं – दालचीनी लौंग और आधा पौंड किशमिश दोहराता रहा।

इस बार वह बड़ी शान से घर आ जाता अगर उसका पैर एक पत्थर से न टकराया होता। वह गिर गया और उसको चोट भी आयी। वह बेचारा उठा और लॅगड़ाता हुआ चल दिया।

उसने फिर याद करने की कोशिश की कि वह क्या करने जा रहा था पर सब कुछ काले अँधेरे में खो गया। अब उसमें केवल यही लिखा हुआ था – तारकोल आधा गज टाट, तारकोल आधा गज टाट।

अब इनसे तो किसमस के खाने का काम नहीं चल सकता था। उसकी मॉ भी उससे अब इतनी तंग आ चुकी थी कि वह अब उसकी देखभाल नहीं कर सकती थी सो उसने उसे एक शादी कराने वाले के साथ कार्लो की तरफ भेज दिया ताकि वह वहॉ से अपने लिये एक पत्नी ला सके जो उसकी देखभाल करे।

शादी कराने वाले ने सारे समय उसे एक बार भी मुँह नहीं खोलने दिया। आखिर उसके सभी सम्बन्धी दोस्त पादरी के पास इकट्ठे हुए। शादी कराने वाला उसके पास ही बैठा क्योंकि उसको डर था कि वह कहीं कुछ ऊधम न मचाये।

जब जैक की शादी को छह महीने बीत गये। अगर उसने यह सोचा कि उसकी पहले की ज़िन्दगी बुरी थी तो अब तो वह यह सोच रहा था कि अब तो वह पहले से भी दस गुनी बुरी है।

उसने अपनी मॉ से कहा कि वह उसकी पत्नी को उसके पिता के घर भेज दे। वह अब कभी भी बाजार जाने की गलती नहीं करेगा।

पर उसकी पत्नी तो उस पर और उसकी मॉ दोनों पर बहुत ज़ोर से चिल्लायी। अब अगर वे खुशी खुशी नहीं रहे तो न रहें पर भगवान करे हम लोग रहें।

10 जैक और उसके साथी[18]

एक बार की बात है कि एक गरीब विधवा रहती थी और जैसा कि अक्सर होता है उसके एक बेटा था। एक बार बहुत ही मुश्किल गर्मी आयी। उनको नहीं पता था कि जब तक नया आलू खाने के लिये तैयार होता है तब तक वे क्या खायेंगे।

सो एक शाम जैक ने अपनी मॉ से कहा — "मॉ मेरे लिये एक केक बेक कर दो मेरी मुर्गी मार दो जब तक मैं अपनी किस्मत आजमा कर आता हूँ। और अगर वह मुझे कहीं मिल गयी तो फिर डरना नहीं मैं उसे तुम्हारे साथ बॉटने के लिये बहुत जल्दी ही वापस आऊँगा।

जैसा उसने कहा था उसकी मॉ ने वैसा ही कर दिया और अगले दिन सुबह ही वह अपनी यात्रा पर चल दिया। उसकी मॉ उसको ऑगन के दरवाजे तक छोड़ने के लिये आयी और बोली — "जैक तुम क्या लेना पसन्द करोगे बेटा आधी केक और आधी मुर्गी के साथ मेरा आशीर्वाद या फिर सारी केक और सारी मुर्गी के साथ मेरी बद्दुआ।"

[18] Jack and His Comrades. Taken from the Book : "Celtic Fairy Tales". By Joseph Jacobs. 1892. This story's language is in a bit slang. I offer my apology if the translation is not up to the mark. Taken from the Web Site : https://www.sacred-texts.com/neu/celt/cft/index.htm

जैक बोला — "ओह मॉ। तुम मुझसे ऐसा सवाल क्यों पूछती हो। तुम्हें तो मालूम ही है कि मैं तुम्हारी बद्दुआ के साथ तो डैमर का राज्य[19] भी नहीं लूँगा।"

मॉ बोली — "ठीक है। तब तुम मेरे हजारों आशीर्वादों के साथ यह सारी केक और सारी मुर्गी ले कर जाओ।" यह कह कर वह अपने घर के ऑगन की चहारदीवारी पर खड़ी हुई उसको तब तक आशीर्वाद देती रही जब तक वह उसको दिखायी देता रहा।

जैक चलता चलता गया जब तक वह थक नहीं गया। अब वह एक किसान के घर के पास खड़ा था। उसको एक लड़के की जरूरत थी पर वह उसके घर नहीं गया।

यह सड़क एक दलदल के किनारे से जाती थी। वहॉ बेचारा एक गधा एक बड़े घास के ढेर के पास कन्धे तक दलदल में फॅसा खड़ा था। वह उसमें से निकलने की कोशिश कर रहा था।

वह जैक से बोला — "ओ जैक मेहरबानी कर के मुझे निकालो नहीं तो मैं इसमें डूब जाऊँगा।"

जैक बोला — "बस दोबारा मत कहना।"

उसने दलदल में कुछ बड़े पत्थर डाले और उन पर पैर रखते हुए दलदल की तरफ चल दिया। वह गधे को तब तक खींच खींच कर निकालता रहा जब तक उसके पैरों के नीचे सख्त जमीन नहीं आ गयी।

---

[19] Damer's Estate

गधा जब सख्त सड़क पर आ गया तो बोला — "धन्यवाद जैक। समय आने पर मैं तुम्हारे लिये इससे ज़्यादा करने की कोशिश करूँगा। तुम कहाँ जा रहे हो?"

जैक बोला — "जब तक आलू की नयी फसल आती है तब तक के लिये मैं अपनी किस्मत सँवारने जा रहा हूँ। भगवान का आशीर्वाद है।"

गधा बोला — "अगर तुम्हें अच्छा लगे तो मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ। कौन जानता है हमारी किस्मत में क्या लिखा है।"

जैक बोला — "खुशी से। हमें देर हो रही है चलो दौड़ दौड़ कर चलते हैं।"

चलते चलते वे एक गाँव में से गुजरे तो देखा कि बहुत सारे लड़के एक कुत्ते को ढूँढ रहे थे जिसकी पूँछ में एक बरर्तन बँधा हुआ था। वह बेचारा रक्षा के लिये जैक के पास आया तो गधे ने उन बहुत सारे लड़कों की तरफ देख कर इतने ज़ोर से ढेंचू ढेंचू किया कि वे सभी डर के मारे भाग गये।

कुत्ता बोला — "तुम बहुत ताकतवर हो जैक। मैं तुम्हारा बहुत ऋणी हूँ। तुम और यह जानवर किधर जा रहे हो?"

जैक बोला — "जब तक आलू की नयी फसल आती है तब तक के लिये हम अपनी किस्मत आजमाने जा रहे हैं।"

गधा बोला — "तुम इन सब बदतमीज लड़कों को मेरे पीछे आने से रोक दो तो मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"

जैक बोला — "ठीक है ठीक है। तुम अपनी पूँछ दबा लो और हमारे साथ चलो।"

चलते चलते वे शहर के बाहर आ गये और एक पुरानी दीवार के पास बैठ गये। जैक ने अपनी रोटी और मॉस निकाला। उसने खुद भी खाया और कुत्ते को भी खिलाया। गधे ने वहॉ थोड़ी सी घास चर ली।

जब वे खा रहे थे और बात कर रहे थे तब बताओ तो भला वहॉ कौन आया? एक भूखा बिल्ला। वह भूखा बिल्ला इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि उसकी आवाज सुन कर तो किसी का भी दिल रो पड़ता।

जैक बोला — "ऐसा लगता है जैसे कि तुमने नाश्ते के बाद से कुछ खाया नहीं है। यह लो हड्डी और उस पर लगा हुआ कुछ मॉस।"

टौम[20] बोला — "भगवान करे तुम्हारे बच्चे कभी भूखे नहीं रहें। अभी तो मुझे तुम्हारी जरूरत है। पर क्या मैं तुम सबसे यह पूछने की हिम्मत कर सकता हूँ कि तुम सब जा कहॉ रहे हो।"

जैक बोला — "जब तक आलू की नयी उपज आती है तब तक हम अपनी किस्मत आजमाने जा रहे हैं। तुम चाहो तो तुम भी हमारे साथ चल सकते हो।"

[20] Tom is just a nickname of any male cat in Northern European culture.

बिल्ला बोला — "ओह यह काम तो मैं बड़े मन से करूँगा तुमने मुझसे कहा इसके लिये धन्यवाद।"

अब वे सब चल दिये। जब पेड़ों के साये उनकी खुद की लम्बाई से तिगुने हो गये तो उन्होंने पास के मैदान से कोई आवाज सुनी। उन्होंने देखा कि एक गड्ढे के ऊपर से कूदता हुआ एक लोमड़ा आया। उसके मुँह में एक बहुत ही बढ़िया काला मुर्गा लगा हुआ था।

गधा उस पर बादलों की तरह से गर्जा — "ओ मेरे दुश्मन।"

जैक बोला — "ओ अच्छे कुत्ते। पकड़ लो उसको।"

अभी उसके शब्द उसके मुँह से बाहर भी निकले थे कि कुत्ता उसके ऊपर कूद पड़ा। रेनार्ड[21] ने अपना इनाम तुरन्त ही वहाँ ऐसे छोड़ दिया जैसे वह कोई गर्म आलू हो और बन्दूक की गोली की तरह से भाग गया। बेचारा मुर्गा अपने पंख फड़फड़ाता और काँपता हुआ जैक और उसके साथियों के पास आ कर खड़ा हो गया।

मुर्गा बोला — "आह। पड़ोसियो क्या यह मेरी अच्छी किस्मत नहीं थी कि उसने तुम्हें मेरे रास्ते में मिला दिया। हो सकता है कि जब मैं किसी कठिनाई में होऊँ तो तुम्हारी दया को न याद रखूँ पर तुम सब जा कहाँ रहे हो।"

"हम सब जब तक आलू की नयी फसल तैयार होती है तब तक के लिये अपनी किस्मत बनाने जा रहे हैं। तुम भी हमारी पार्टी

[21] Reynard is nickname of any wolf, like Tom is for a cat.

में शामिल हो सकते हो अगर चाहो तो। और जब तुम्हारी टॉगें और पंख थक जायें तो नैडी[22] के ऊपर बैठ सकते हो।"

अब वे सब एक साथ आगे चलने लगे और जैसे ही सूरज डूबा तो उन्होंने चारों तरफ देखा तो न तो उन्हें कोई केबिन नजर आया और न ही कोई खेतों वाला घर।

जैक बोला — "इस समय हमारी किस्मत ठीक नहीं है पर अगली बार हमारी किस्मत जरूर काम करेगी। और फिर यह तो गर्मियों की रात है। हम लोग जंगल में चलते हैं वहॉ ऊॅची ऊॅची घास पर लेटेंगे।"

बस तुरन्त ही वे सब एक जंगल में थे। जैक ऊॅची ऊॅची घास पर लेटा हुआ था। गधा उसके पास ही लेटा हुआ था। कुत्ता और बिल्ला गधे की गर्म गर्म गोद में लेटे हुए थे और मुर्गा अगले पेड़ पर आराम करने चला गया था।

बहुत जल्दी ही वे गहरी नींद सो गये। और अब तो मुर्गे के बोलने का समय भी आ गया था।

गधा बोला — "ओ काले मुर्गे तुमने मुझे इतनी मीठी नींद से जगा दिया मैं तो भूसा खा रहा था। बोलो क्या बात है।"

मुर्गा बोला — "दिन निकल आया है यह बात है। क्या तुम्हें चारों तरफ रोशनी नहीं दिखायी देती।"

[22] Neddy is an Irish slang for "ass".

जैक बोला — "हॉ हॉ रोशनी तो दिखायी दे रही है पर यह तो किसी मोमबत्ती की रोशनी है सूरज की नहीं। अब क्योंकि तुमने मुझे उठा ही दिया है तो फिर चलो हम अपना चलना शुरू करते हैं और रहने की जगह खोजते हैं।"

सो उन सबने अपने को हिला हिला कर जगाया और घास पत्थरों और कॉटों वाली झाड़ियों में से हो कर चल दिये। वे एक खोखली जगह आ पहुँचे जहॉ एक साये में से हो कर रोशनी आ रही थी। और उसके साथ आ रही थीं गाने हॅसने और एक दूसरे को गालियॉ देने की आवाजें।

जैक बोला — "शान्ति से। आराम से। तुम सब अपने पंजों के बल चलो जब तक हम यह न देख लें कि हमें कैसे लोगों के साथ बर्तना है।"

सो वे सब खिड़की के नीचे तक रेंग कर चले गये। वहॉ उन्होंने छह डाकू देखे जिनके पास पिस्तौलें थीं छोटी छोटी बन्दूकें थीं और कटलस[23] थे। वे सब एक मेज पर बैठे हुए थे और भुनी हुई गाय और सूअर खा रहे थे और बीयर वाइन और व्हिस्की पी रहे थे।

उनमें से एक बदसूरत आदमी ने खाना भरे हुए मुँह से कहा — "आज हमने कितना अच्छा दॉव लगाया

[23] Cutlass or matchet is a long blade, about 1 1/5 – 2' long blade. See its picture above.

डनलाविन[24] के लौर्ड के घर में पर हम उस ईमानदार पोर्टर के लिये बहुत थोड़ा ही रख सके।"

जैक फुसफुसाया — "ठीक है ठीक है। और अब तुम मेरे हुक्म का इन्तजार करो।"

सो गधे ने अपने आगे वाले खुर खिड़की की सिल पर रखे। कुत्ता गधे के सिर पर चढ़ गया। बिल्ला कुत्ते के सिर पर बैठ गया और मुर्गा बिल्ले के ऊपर चढ़ गया।

जैसे ही जैक ने इशारा किया तो सबने एक साथ ज़ोर से गाना शुरू कर दिया। गधा चिल्लाया ढेंचू ढेंचू। कुत्ता बोला भौं भौं। बिल्ला बोला म्याऊँ म्याऊँ और मुर्गा ज़ोर से चिल्लाया कुकड़ूँ कू कुकड़ूँ कू।

इनके बाद जैक ज़ोर से बोला — "अपनी अपनी पिस्तौल उठाओ और सबको भून डालो। किसी आदमी को ज़िन्दा मत छोड़ना। तैयार। चलाओ गोली।"

इसके साथ ही सब जानवर एक बार फिर एक साथ चिल्लाये और उनकी खिड़की तोड़ कर कमरे के अन्दर कूद गये। डाकू तो डर के मारे मर से ही गये। उन्होंने मोमबत्ती बुझायी मोमबत्तियों को मेज के नीचे फेंका और पिछले दरवाजे निकल कर ऐसे भाग गये जैसे ईमानदार लोग भाग जाते हैं।

वे तब तक नहीं रुके जब तक वे जंगल नहीं पहुँच गये।

[24] Dunlavin is the name of place.

जैक और उसके साथी अन्दर घुसे। खिड़की दरवाजे बन्द किये। मोमबत्तियॉ जलायीं। खाया पिया और सोने के लिये लेट गये।

जैक पलंग पर लेट गया। गधा घुड़साल में चला गया। कुत्ता बाहर दरवाजे पर बैठ गया। बिल्ला आग के पास जा कर बैठ गया। और मुर्गा एक डंडे पर जा कर बैठ गया।

पहले तो डाकू बहुत खुश हुए कि वे जंगल में बिल्कुल सुरक्षित थे पर बहुत जल्दी ही वे दुखी होने लगे। एक बोला — "यह नम घास तो हमारे कमरे के फर्श से बहुत अलग है।"

दूसरा बोला — "मुझे तो सूअर का एक स्वादिष्ट पैर ही छोड़ना पड़ गया।"

तीसरा बोला — "मेरी शराब का तो आखिरी घूँट ही गिलास में रह गया।"

आखिरी चौथा बोला — "और डनलाविन के लौर्ड का सोना चॉदी जो हमने लूटा था उसका क्या?"

उनका कप्तान बोला — "मैं वहॉ फिर से जाऊँगा और देखता हूँ कि वहॉ से हम कुछ वापस ला सकते हैं या नहीं।"

सब बोले — "यह तुमने एक अच्छे बच्चे की तरह बात की।"

और वह जंगल से उठ कर घर चल दिया।

घर की रोशनी बुझी हुई थी सो वह आग की तरफ बढ़ा तो वहॉ तो बिल्ला कूद कर उसके चेहरे पर गिर गया। उसने उसका

चेहरा अपने पंजों से खरोंच कर लहू लुहान कर दिया। वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया और कमरे के दरवाजे की तरफ बढ़ा ताकि वह रोशनी करने के लिये मोमबत्ती ढूँढ सके।

अब यहाँ तो कुत्ता बैठा था। उसका पैर कुत्ते की पूँछ पर पड़ गया तो कुत्ते ने उसे उसकी बाँहों टाँगों और जाँघों पर काट लिया। वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "उफ़। काश मैं इस घर से बाहर ही रहता।"

जब वह सामने वाले दरवाजे पर पहुँचा तो मुर्गा उसके ऊपर आ कर गिर गया और उसको अपने पंजों और चोंच से घायल कर दिया। कुत्ते और बिल्ले ने तो उस मुर्गे के मुकाबले में उसके साथ कुछ खास नहीं किया था।

वह चिल्लाया — "तुम सब मरो ओ खानाबदोशों की तरह घूमने वालो।"

जब उसकी साँस में साँस आयी तो वह लड़खड़ाता हुआ और चकरी की तरह घूमता हुआ घुड़साल में पहुँचा। वहाँ तो गधा था सो उसने उसको इतनी ज़ोर से लात मारी जिससे वह गोबर के ऊपर जा गिरा।

वहाँ से भी जब उसे कुछ होश आया तो उसने अपना सिर खुजलाया और सोचने लगा कि क्या और कैसे सब हुआ था। जैसे ही उसकी टाँगों में थोड़ी सी जान आयी वह वहाँ से एक पैर को घसीटता हुआ चला गया। फिर उसने जंगल जा कर ही दम लिया।

जब वह अपने साथियों के पास आ गया तो सबने पूछा — "क्या हुआ। क्या हमारे सामान मिलने का कोई मौका है?"

वह बोला — "मौका। तुम मौका कह सकते हो पर कोई मौका नहीं है। उफ़। तुममें से कोई क्या मेरे लिये सूखी घास का बिछौना बनायेगा। ऐनिसकोर्थी[25] में जितना भी प्लास्टर है वह भी मेरे घावों के लिये कम है।

उफ़। काश तुम सब जान पाते कि मुझे वहॉ क्या क्या भुगतना पड़ा। जब मैं रोशनी के लिये रसोई में एक जलती हुई लकड़ी लेने गया तो वहॉ तो एक बुढ़िया ऊन साफ कर रही थी। तुम लोग मेरे चेहरे पर ये निशान देख सकते हो जो उसने अपने उस ऊन को साफ करने वाले औजार से बनाये हैं।

फिर मैं जितनी जल्दी हो सकता था कमरे के दरवाजे की तरफ बढ़ा तो मैं किससे टकराया? एक चमार और उसके बैठने की जगह से। और अगर उसने अपने औजारों से मेरे ऊपर काम न किया होता तो तुम मुझे एक रोग कह सकते थे।

खैर किसी तरह से मैं वहॉ से निकला तो जब मैं दरवाजे में से हो कर जा रहा था तो लगता है कि शैतान वहा खुद ॅ बैठा हुआ था वह मेरे ऊपर कूद पड़ा और उसने मुझे अपने पंजों से घायल कर

[25] Enniscorthy – name of the place

दिया। उसके नाखून तो उसके छहपैनी[26] जैसे थे और उसके पंख? भगवान उसको रास्ते में बहुत सारी मुश्किलें दे। उफ़।

किसी तरह मैं घुड़साल में पहुँचा तो वहाँ तो मेरा स्ले[27] के हथौड़े से स्वागत हुआ जिससे मैं आधा मील दूर जा कर पड़ा।

अगर तुम्हें मेरा विश्वास नहीं होता तो मैं तुम्हें यहाँ से वहाँ जाने की छुट्टी देता हूँ तुम लोग खुद वहाँ जा कर देख सकते हो।

सबके मुँह से निकला — "ओह बेचारा कप्तान। हमें तुम पर पूरा विश्वास है। हमको उस बदकिस्मत केबिन में मत जाने दो।"

अगले दिन सूरज निकलने से पहले ही जैक और उसके साथी जाग गये थे। रात का जो कुछ बच गया था उससे उन्होंने खूब पेट भर कर नाश्ता किया और फिर सबने निश्चय किया कि वे डनलाविन के लौर्ड के महल जायेंगे और उसको उसका सोना चाँदी वापस कर देंगे।

जैक ने वहाँ पड़ा सारा सोना चाँदी एक थैले में रख कर उसे नैडी[28] की पीठ पर लाद दिया और सब लौर्ड के महल की तरफ चल पड़े। पहाड़ियों के ऊपर घाटियों से गुजरते हुए पीली सड़कों पर चलते हुए वे लौर्ड के महल तक आ पहुँचे।

---

[26] Sixpenny

[27] Sleigh is a wheelless slipping carriage, drawn by horses or dogs in icy regions. See its picture above

[28] Neddy, the ass.

और वहॉ था कौन हवा में सिर हिलाता हुआ सफेद मोजे पहने हुआ लाल ब्रीचेज़ पहने हुआ? पोर्टर।

उसने आने वालों की तरफ टेढ़ी नजर से देखा और जैक से पूछा — "यहॉ से तुम्हें क्या चाहिये मेरे अच्छे साथियो। यहॉ तुम सबके लिये जगह काफी नहीं है।"

जैक बोला — "हम यहॉ वह चाहते हैं जिसका हमें पता है कि तुम हमें नहीं दे रहे हो – और वह है सामान्य बर्ताव।"

पोर्टर बोला — "ठीक है ठीक है अन्दर आओ और जल्दी कहो जो कहना है वरना मैं अपने कुत्ते तुम्हारे ऊपर छोड़ दूँगा।"

मुर्गा जो गधे पर बैठा हुआ था बोला — "क्या आप बता सकते हैं कि कल रात घर का दरवाजा चोरों के लिये किसने खोला था।"

यह सुन कर पोर्टर के चेहरे का रंग लाल हो गया। पोर्टर को इस बात का पता नहीं था कि डनलाविन का लौर्ड अपनी सुन्दर बेटी के साथ कमरे की खिड़की पर अपना सिर बाहर निकाले खड़ा हुआ था और सब सुन रहा था।

वह बोला — "मुझे खुशी होगी बार्नी अगर तुम इस भले आदमी के सवाल का जवाब दोगे जो इस लाल कलगी वाले ने पूछा है।"

पोर्टर बोला — "इस गधे की बातों पर विश्वास मत कीजिये। यकीनन मैंने उन छह डाकुओं के लिये दरवाजा नहीं खोला।"

लौर्ड बोले — "ओ भोले आदमी। तुम्हें कैसे पता कि वे छह थे।"

जैक बोला — "जाने दीजिये। आपका सारा सोना और चॉदी यहॉ है इस थैले में। मुझे लगता नहीं कि इतनी लम्बी यात्रा के बाद यानी कि पूरा अथलासाच[29] का जंगल पार करने के बाद आपको हमें खाना और रहने की जगह देने में कोई परेशानी होगी।"

"परेशानी? अगर मैं तुम्हारी सहायता करूँगा तो तुम सब एक दिन के लिये भी बिना खाने पीने और रहने की जगह नहीं रहोगे।"

सो सबने खूब पेट भर कर खाना खाया। गधे कुत्ते और मुर्गे को खेत पर रख लिया गया। बिल्ले को रसोईघर में जगह मिल गयी। लौर्ड जैक का हाथ पकड़ कर ले गया उसे बर्फ से सफेद बहुत अच्छे कपड़े पहनाये एक बहुत अच्छी घड़ी बॉधी।

जब वे खाना खाने बैठे घर की स्त्री ने कहा कि जैक तो लगता है कि जन्म से है भला आदमी है। लौर्ड ने कहा कि वह उसे अपना खास नौकर बना लेगा। फिर जैक अपनी मॉ को भी वहीं ले आया और महल के पास ही उसको रहने की जगह दे दी गयी।

और फिर सब खुशी खुशी रहे।

[29] Athlasach – the name of a place

11 जैक और उसका मालिक[30]

एक बार एक गरीब स्त्री थी। जिसके तीन बेटे थे। जिनमें उसके दो बड़े बेटे तो बहुत ही चालाक और होशियार थे पर वे अपने छोटे भाई को बेवकूफ जैक कहते थे क्योंकि वे सोचते थे कि वह एक बहुत ही सीधे आदमी से ज़्यादा कुछ नहीं था।

सबसे बड़ा बेटा घर में रहते रहते थक गया था सो उसने बाहर कहीं नौकरी ढूँढने की सोची। वह एक साल बाहर रहा और फिर एक टॉग से लॅगड़ाता परेशान सा चेहरा लिये लड़ने के मूड में घर वापस आ गया।

जब उसने कुछ खा लिया आराम कर लिया तब उसने बताया कि कैसे उसे मिसचान्स के टाउनलैंड के ग्रे चर्ल[31] के यहॉ नौकरी मिली थी। उनका समझौता यह था कि "जो कोई भी यह पहले कहेगा कि वह यह सौदा कर के पछता रहा है उसे उसकी पीठ की कन्धे से ले कर कमर तक एक इंच चौड़ी खाल निकलवानी पड़ेगी।

अगर यह बात मालिक ने कही तो उसको नौकर को दोगुनी तनख्वाह भी साथ में देनी पड़ेगी। और अगर यही बात नौकर कहता है तो उसको कोई तनख्वाह नहीं मिलेगी।"

---

[30] Jack and His Master. Taken from the Book : "Celtic Fairy Tales". By Joseph Jacobs. 1892. This story's language is a bit slang. I offer my apology if the translation is not up to the mark. Taken from the Web Site : https://www.sacred-texts.com/neu/celt/cft/index.htm

[31] Gray Churl of the Townland of Mischance

वह आगे बोला — "पर उस चोर ने मुझे इतना कम खाना दिया और मुझसे इतना ज़्यादा मुश्किल काम कराया कि मेरा मॉस और खून दोनों ही उसे नहीं सह सके।

और एक बार जब मैं बहुत गुस्से में था तब उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं अपने इस सौदे के लिये पछता रहा था। उस समय मैं इतना पागल हो गया कि मैंने कह दिया कि "हॉ मैं पछता रहा हूँ।" और अब मैं ज़िन्दगी भर के लिये अपंग हो गया हूँ।"

उसकी मॉ और उसके भाई सभी उसकी बात सुन कर बहुत दुखी थे। सो दूसरे बड़े भाई ने कहा कि वह वहॉ जायेगा और ग्रे चर्ल की नौकरी करेगा और उसको इस बात की सजा देगा। वह उसको यह कहने पर मजबूर कर देगा कि उसको इस सौदे से बहुत अफसोस है।

वह फिर बोला — "ओह मुझे कितनी खुशी होगी जब उसकी खाल उधेड़ी जायेगी।"

सबने उसे बहुत समझाया पर उस पर उसका कोई असर नहीं हुआ। वह मिसचान्स के टाउनलैंड की तरफ चल दिया। एक साल बाद वह भी अपनी भाई की तरह से बदकिस्मत सा वापस घर आ गया।

जैक की मॉ और उसके भाई कोई भी जैक को भी वहॉ जाने और ग्रे चर्ल को सुधारने से नहीं रोक सके। वहॉ पहुँच कर उसने

उससे बीस पौंड सालाना पर अपना सौदा पक्का कर लिया। बाकी शर्तें वही रहीं।

ग्रे चर्ल ने कहा — "जैक। अगर तुम किसी भी ऐसे काम को करने से मना करोगे जिसको तुम कर सकते हो तो तुम्हारी एक महीने की तनख्वाह तुम्हें नहीं मिलेगी।"

जैक बोला — "मैं इस बात पर राजी हूँ। मगर अगर आप मुझे किसी ऐसे काम को करने के लिये रोकेंगे जिसे आप मुझसे पहले ही करने के लिये कह चुके हैं तो आपको मुझे एक महीने की तनख्वाह और देनी पड़ेगी।"

मालिक बोला — "मैं राजी हूँ।"

जैक को काम के पहले ही दिन से बहुत ही कम खाना दिया गया। उसे घोड़े की जीन का काम दिया गया। अगले दिन वह शाम के खाने से थोड़ी देर पहले ही आया तो उसे कमरे में भेज दिया गया जहाँ उसको गड्ढे में से बतखें निकालनी थीं।

जब वह बतखें निकाल रहा था तो उसने अपने कपड़ों में से एक चाकू निकाला और उसकी एक टाँग एक जाँघ एक पंख और छाती को एक तरफ से काट लिया।

जब मालिक अन्दर आया तो उसने उसको इस काम के लिये बुरा भला कहना शुरू किया तो जैक बोला — "मालिक। आपका काम मुझे खाना खिलाना है और अब जहाँ कहीं भी यह बतख

जायेगी इसको खाने के समय तक काम में नहीं लाया जा सकता। क्या आप अपने सौदे के लिये पछता रहे हैं?"

मालिक को बहुत गुस्सा आया पर कुछ सोच विचार कर बोला — "ठीक है ठीक है। मैं अपने सौदे पर नहीं पछता रहा।"

जैक बोला — "तब ठीक है।"

अगले दिन जैक को दलदल में घास जमाने के लिये जाना था। उन लोगों को इस बात का कोई अफसोस नहीं था कि जैक खाने के समय पर नहीं था।

उसका नाश्ता भी बहुत ही कम था सो उसने मालकिन से कहा — "मैम। मुझे लगता है कि मेरे लिये यह ज़्यादा अच्छा रहेगा कि मैं अपना शाम का खाना अभी खा लूँ ताकि दलदल से घर लौटते समय मुझे देर न हो जाये।"

मालकिन बोली — "यह ठीक है जैक।"

सो वह यह सोचते हुए कि शायद वह उसको दलदल जाते समय अपने साथ ले जायेगा उसके लिये एक बहुत अच्छी केक मक्खन और एक बोतल दूध ले आयी। पर जैक तो वहीं बैठ गया और जब तक उसने रोटी मक्खन दूध सब कुछ खत्म नहीं कर लिया।

फिर वह बोला — "अब मालकिन मैं यहाँ आ कर फिर से यहाँ से वापस नहीं जाऊँगा। कल सुबह मैं काम पर ही सीधे चला जाऊँगा अगर मैं सूखी घास पर आराम से सो सका तो। इसलिये

आप मुझे मेरा रात का खाना भी अभी दे दें ताकि मैं दिन भर की परेशानी से बच जाऊँ।"

मालकिन ने यह सोचते हुए कि वह शायद उसको भी वह दलदल ले जायेगा उसको वह भी दे दिया पर वह तो उसी जगह बैठ गया और सारा खाना खाने से पहले नहीं उठा। मालकिन तो यह देख कर भौंचक्की रह गयी।

उसने जंगल जा कर मालिक से कहा — "इस देश में अपना रात का खाना खाने के बाद नौकर को क्या करने के लिये कहा जाता है।"

"कुछ भी नहीं। यही कि बस जा कर सो जाओ।"

"ठीक है जनाब।" और वह घुड़साल के ऊपर वाले कमरे में गया अपने कपड़े उतारे और लेट गया।

किसी ने उसे देख लिया तो जा कर मालिक से उसकी शिकायत की तो मालिक उसे देखने के लिये आया और बोला — "ओ गधे। इस सबका क्या मतलब है?"

"मालिक। आपने ही तो कहा था कि जा कर सो जाओ। मालकिन ने, भगवान उन्हें खुश रखे, मुझे नाश्ता दोपहर का खाना और रात का खाना सब दे दिया और आपने कहा कि मैं अब जा कर सो सकता हूँ। तो क्या आप मुझे अपराधी समझते है?"

"हाँ मैं तुम्हें अपराधी समझता हूँ।"

"मुझे एक पौंड और तेरह पैन्स दे दीजिये।"

"एक पौंड और तेरह पैन्स किस लिये?"

जैक बोला — "ओह तो आप अपना सौदा भूल गये। क्या आप अपने सौदे के लिये पछता रहे हैं?"

मालिक बोला — "ओह हॉ। नहीं नहीं। मेरा मतलब है नहीं। जब तुम सो कर आओगे तब मैं तुम्हारे पैसे दे दूँगा।"

अगली सुबह जैक आया और उसने मालिक से पूछा कि आज उसका क्या काम है। मालिक ने कहा — "तुम आज घोड़ों के मैदान के उस पार के खेत में हल पकड़ोगे।"

करीब नौ बजे मालिक यह देखने गया कि जैक खेत कैसा जोत रहा था। वहॉ जा कर उसने क्या देखा कि एक छोटा लड़का हल चला रहा है और घोड़ों की जगह जैक उसे खींच रहा है।

मालिक बोला — "अरे ओ चोर। यह तुम क्या कर रहे हो?"

जैक बोला — "क्या आपने मुझसे यह नहीं कहा था कि हल का यह हिस्सा पकड़ूँ पर मेरे मना करने के बावजूद यह लड़का तो मुझे पीटे ही जा रहा है। क्या आप उससे बात करना पसन्द करेंगे?"

"नहीं। बल्कि मैं तुमसे बात करूँगा। क्या तुम्हें पता नहीं कि जब मैंने तुमसे हल पकड़ने के लिये कहा था तो उसका मतलब यह था कि तुम हल चला कर मिट्टी खोदोगे।"

जैक बोला — "अगर आपने यह कहा होता तो मैंने यही किया होता। जो कुछ भी मैंने किया क्या आप उसके लिये मुझे दोषी ठहराते हैं?"

मालिक ने अपने आपको समय से सँभाल लिया पर उसको इतना गुस्सा आया कि उसके मुँह से कोई बोली नहीं निकली।

फिर वह बोला — "ठीक है अब जाओ और अब जा कर जमीन जोतो जैसे और दूसरे किसान जोतते हैं।"

जैक ने फिर पूछा — "क्या आपको अपने सौदे पर पछतावा हो रहा है?"

"नहीं नहीं।"

उसके बाद जैक ने सारा दिन एक अच्छे किसान की तरह से खेत जोता।

एक दो दिन बाद मालिक ने उसे मैदान में चर रही गायों की देखभाल के लिये भेजा। उस खेत के आधे हिस्से में अभी आधा पका अन्न लगा हुआ था सो मालिक ने उसे सावधान किया कि ज़रा ख्याल रखना ब्राउनी उस अन्न के खेत में न जाये। अगर तुम उसको बचा लोगे तो फिर बाकी गायों से डरने की कोई जरूरत नहीं है।

दोपहर के समय वह यह देखने गया कि जैक कैसा काम कर रहा था। तो वहाँ जा कर उसने क्या देखा कि जैक तो उलटा पड़ा सो रहा था और ब्राउनी एक काँटे वाले पेड़ के पास चर रही थी।

एक लम्बी रस्सी का एक सिरा उसके सींगों में बॅधा हुआ था और दूसरा सिरा पेड़ के तने से बॅधा हुआ था। बाकी की सारी गायें उस अधपके खेत में चर रही थीं और उसे रौंद रही थीं। जैक को एक कोड़ा पड़ा।

मालिक चिल्लाया — "जैक तुम्हें मालूम है कि बाकी की गायें कहॉ है?"

जैक बोला — "और इसके लिये क्या आप मुझे दोषी ठहराते हैं?"

"ओ आलसी। यकीनन मैं तुम्हें ही दोषी ठहराता हूॅ।"

"तो मुझे एक पाउंड और तेरह पैन्स दीजिये। क्योंकि आप ही ने तो कहा था कि बस ब्राउनी को सॅभालने की जरूरत है बाकी की गायें कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेंगी। यहॉ यह मेमने की तरह सीधी खड़ी है। मालिक क्या आप अपने सौदे पर पछता रहे हैं?"

मालिक बोला — "नहीं नहीं बिल्कुल नहीं। मैं तुम्हें पैसे तब दूॅगा जब तुम खाना खाने आओगे। अब तुम यह समझ लो कि कोई भी गाय सारा दिन मैदान के बाहर न जाये और न ही गेंहूॅ के खेत में जाये।"

"आप डरिये नहीं मालिक।" और वह खुद भी नहीं गया।

अब इस कंजूस के पास तो कई वजहें थी इसको काम पर न रखने की पर क्या करता। अगले दिन तीन नौजवान गायें गायब थीं सो मालिक ने जैक को उनको ढूॅढने भेज दिया।

जैक ने पूछा — "पर मैं उन्हें ढूँढूँगा कहाँ।"

"हर जगह जहाँ वे मिल सकती हैं और जहाँ वे नहीं भी मिल सकतीं।"

अब यह कंजूस अपने शब्द बड़ी तौल तौल कर बोलता था। जब वह शाम के खाने के समय अपने जानवरों के बाड़े की तरफ आया उसने क्या देखा कि जैक क्या कर रहा था।

उसने देखा कि जैक जानवरों के बाड़े की फूस की छत से मुट्ठी भर भर कर फूस निकाल रहा है और फिर उससे बने छेद में से झाँक झाँक कर देख रहा है।

मालिक बोला — "अरे ओ गधे तुम वहाँ क्या कर रहे हो?"

जैक बोला — "यकीनन मैं उन बेचारी गायों को ढूँढ रहा हूँ।"

"लेकिन वे यहाँ आयेंगी ही क्यों?"

"मुझे भी नहीं लगता कि वे यहाँ आयेंगी पर पहले मैंने उन्हें ऐसी जगह ढूँढा जहाँ वे हो सकती थीं जैसे गायों को ले जाने वालों के पास घास के मैदानों में उनके बराबर के खेतों में।

और जब वे मुझे कहीं नहीं मिलीं तो अब मैं उनको वहाँ ढूँढ रहा हूँ जहाँ उनके मिलने की आशा नहीं है। मुझे ऐसा लग रहा है कि आप मेरे इस काम से खुश नहीं हुए।"

मालिक बोला — "यकीनन मैं तुम्हारे इस काम से खुश नहीं हूँ। तुम बात का बतंगड़ बना रहे हो।"

"इससे पहले कि आप अपना शाम का खाना खाने बैठें मेहरबानी कर के आप मुझे एक पाउंड और तेरह पैन्स दे दें। मुझे लग रहा है कि आप मेरे बारे में बहुत दुखी हैं कि आपने मुझे काम पर रखा ही क्यों।"

मालिक बोला — "भगवान करे... । अरे नहीं नहीं मैं दुखी क्यों होऊँगा। अगर तुम कर सकते हो तो क्या तुम फिर से यह छत छा सकते हो जैसे कि तुम यह काम अपनी माँ के केबिन के लिये कर रहे हो।"

"ओह जनाब यह काम तो मैं बड़ी खुशी से करूँगा।"

जब मालिक अपना खाना खा कर बाहर आया तब तक तो जैक ने उसे पहले से भी ज़्यादा बढ़िया कर दिया था क्योंकि लड़के ने उसको नया भूसा दे दिया था।

मालिक फिर बोला — "जाओ अब जा कर उन गायों को ढूँढ कर लाओ।"

"मैं कहाँ से ढूँढ कर लाऊँ।"

"अबकी बार तुम उनको ऐसे ढूँढो जैसे तुम अपनी गायें ढूँढ रहे हो। तीनों गायें शाम तक अपने बाड़े में होनी चाहिये।"

अगले दिन मालिक ने जैक से कहा कि घास के मैदान के उस पार दलदल के पास का रास्ता बहुत खराब है। भेड़ भी उस जगह हर कदम पर नीचे डूबने लगती है सो जा कर भेड़ों के पैरों के लिये ठीक से रास्ता बना दो।

डेढ़ घंटे बाद वह दलदल के किनारे पर आया तो क्या देखता है कि जैक अपना चाकू तेज़ कर रहा है और भेड़ें घास चर रही हैं।

उसने पूछा — "जैक क्या तुम इसी तरह से रास्ता ठीक करते हो?"

जैक बोला — "हर चीज़ का कहीं न कहीं शुरू होता है मालिक। और जो काम ठीक से शुरू किया जाता है तो समझो कि वह काम आधा तो हो ही गया। मैं अपना चाकू तेज़ कर रहा हूँ और फिर इसके बाद अपने भेड़ों के झुंड की हर भेड़ के पैर काट दूँगा तब आप भगवान को धन्यवाद देंगे।"

"ओ रोग। क्या तुम मेरी भेड़ों के पैर काट दोगे और फिर तुम उन पैरों का क्या करोगे?"

"यकीनन फिर मैं उनके लिये रास्ता बनाऊँगा जैसा कि आपने मुझसे कहा है कि "जैक भेड़ों के पैरों से रास्ता बनाओ।"

"अरे ओ बेवकूफ। मैंने तुमसे कहा था कि भेड़ों के पैरों के लिये रास्ता बनाओ न कि भेड़ों के पैरों का रास्ता बनाओ।"

जैक बोला — "मुझे डर है कि आपने ऐसा नहीं बोला। अगर आप चाहते हैं कि मैं अपना काम खत्म न करूँ तो लाइये मेरे एक पौंड और तेरह पैन्स।"

"ओ शैतान। तू अपने एक पौंड और तेरह पैन्स ले कर खुश रह।"

जैक बोला — "बद्दुआ देने की बजाय प्रार्थना करना ज़्यादा अच्छा है। शायद आप अपने इस सौदे पर पछता रहे हैं।"

"यकीनन मैं पछता रहा हूँ पर फिर भी अभी नहीं।"

अगली रात मालिक को एक शादी में जाना था। जाने से पहले उसने जैक से कहा — "मैं आधी रात को जाऊँगा। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे पास आओ और मेरे घर में रहो क्योंकि मुझे डर है कि मैं रात को कहीं ज़्यादा न पी जाऊँ तो अगर तुम मेरे पास जल्दी आ जाओगे तो कम से कम मुझे सावधान कर दोगे[32]। और मैं भी ध्यान रखूँगा कि वे तुमको कुछ दे दें।"

करीब ग्यारह बजे जब मालिक ने बहुत पी हुई थी तो उसने अपने गाल पर कुछ ऐसा महसूस किया जैसे किसी ने उसके गाल पर कुछ चिपचिपी चीज़ मारी हो। फिर वह चीज़ उसके गिलास के बराबर में जा कर गिर पड़ी। उसने उसकी तरफ देखा तो वह तो भेड़ की एक ऑख थी।

वह तो यह सोच ही नहीं सका कि इसे उसके ऊपर कौन फेंक सकता है और किसी ने क्यों फेंका होगा। कुछ देर बाद कोई चीज़ उसके दूसरे गाल पर पड़ी। उसने देखा कि यह भी एक भेड़ की एक ऑख थी।

यह देख कर वह बहुत दुखी हुआ पर उसने कुछ न कहने की सोचा। दो मिनट बाद ही उसने कुछ खाने के लिये अपना मुँह खोला

[32] Translated for an idiom "To throw a sheep's eye on me"

तो भेड़ की एक और ऑख उसके मुँह में आ कर गिरी। उसने उसे थूका और चिल्लाया — "ओ घर के मालिक। क्या तुम्हारे लिये यह शर्म की बात नहीं है कि तुम्हारे कमरे में कोई ऐसा आदमी है जो ऐसा नीच काम कर रहा है।"

जैक बोला — "मालिक। एक ईमानदार आदमी को दोष मत दीजिये। यकीनन यह मैं ही हूँ जो आपके ऊपर भेड़ की ऑखें फेंक रहा हूँ केवल आपको यह याद दिलाने के लिये कि मैं यहाँ हूँ। मैं भी दुलहा और दुलहिन के लिये पीना चाहता हूँ। आपको याद होगा कि यह बात आप ही ने मुझसे कही थी।"

मालिक बोले — "मुझे मालूम है कि तुम एक बहुत बड़े गधे हो। पर तुमको ये ऑखें मिलीं कहाँ से?"

"और कहाँ से मिलेंगी आपकी अपनी भेड़ों के सिरों से। क्या आप यह चाहते है कि मैं किसी पड़ोसी के साथ कोई गड़बड़ करूँ जो फिर मुझे जेल में डलवा दे?"

मालिक बोला — "यह मेरे लिये बड़े अफसोस की बात है कि बदकिस्मती से मैं तुमसे मिला।"

जैक बोला — "आप सब लोग गवाह हैं कि मेरे मालिक यह कह रहे हैं कि उनको मुझे अपने पास रखने का बहुत अफसोस है। अब मेरा समय खत्म हो गया। अब आप मुझे मेरी दोगुनी तनख्वाह दे दीजिये।

अब आप ज़रा दूसरे कमरे में भी आ जाइये और एक भले आदमी की तरह लेट जाइये ताकि मैं आपकी पीठ से एक इंच चौड़ी खाल की पट्टी निकाल सकूँ।"

यह सुन कर वहाँ बैठा हर आदमी इसके खिलाफ चिल्ला पड़ा पर जैक बोला — "आप लोगों ने इन्हें तब नहीं रोका था जब इन्होंने मेरे दो भाइयों की पीठ से उनकी खाल खीची थी और बिना किसी पैसे के उनकी माँ के पास घर भेज दिया था।"

जब लोगों ने उसकी नौकरी की शर्त सुनी तब तो वे इस घटना को होते देखने के लिये और भी उत्सुक हो गये। मालिक बहुत चिल्लाया बहुत चीखा पर उसकी सहायता करने के लिये कोई नहीं आया।

उसको बराबर वाले कमरे में ले जा कर उसके कपड़े उतार दिये गये और उसे फर्श पर छोड़ दिया गया। जैक के पास चाकू तो था ही। उसने उसे निकाला और फर्श पर दो चार बार तेज़ किया।

फिर अपना काम करने से पहले उससे बोला — "ओ बेरहम। चल मैं तुझे एक मौका देता हूँ। अगर तू मुझे दोगुनी तनख्वाह के साथ साथ दो सौ गिनी मेरे भाइयों की सहायता के लिये और दे तो मैं तुझे बिना खाल उधेड़े छोड़ देता हूँ।"

वह बोला — "नहीं। पहले तुम मेरी पीठ से एक इंच की पट्टी उधेड़ लो।"

जैक मुस्कुरा कर बोला — "ठीक है तो तैयार हो जाओ।"

कह कर उसने एक छोटा सा चीरा लगाया कि कंजूस चिल्लाया — "रुक जाओ। रुक जाओ। मैं तुम्हें पैसे देता हूँ।"

जैक बोला — "साथियो। आप लोग मेरे बारे में इतना बुरा न सोचें जितना बुरा होने का मैं अधिकारी हूँ। मेरे अन्दर तो इतनी भी हिम्मत नहीं कि मैं किसी चूहे की ऑख भी निकाल सकूँ। मैंने तो भेड़ की ये आधा दर्जन ऑखें एक कसाई से ली थीं और उनमें से केवल तीन ही इस्तेमाल कीं।"

सो सब लोग फिर दूसरे कमरे में आये। जैक को वहॉ बिठाया गया और हर एक ने उसकी तन्दुरुस्ती के लिये पी। उसने भी हर एक की तन्दुरुस्ती के लिये एक बार पी। छह तन्दुरुस्त लोग उसे और उसके मालिक को घर छोड़ कर आये।

वे तब तक कमरे में इन्तजार करते रहे जब तक मालिक अन्दर से जैक की दोगुनी तनख्वाह और दो सौ गिनी ले कर बाहर नहीं आ गया।

जब वह घर पहुँचा तो मॉ और अपने अपंग भाइयों के लिये बहुत खुशियॉ लाया। अब वह बेवकूफ जैक नहीं था बल्कि "कंजूस की खाल उतारने वाला जैक" हो गया था।

12 बिना आत्मा का शरीर[33]

जैक की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि इटली में एक विधवा स्त्री रहती थी जिसके एक बेटा था। उसका नाम था जैक[34]। जब वह तेरह साल का हुआ तो वह घर छोड़ कर दुनियॉ में अपनी किस्मत आजमाना चाहता था।

उसकी मॉ ने उससे पूछा — "बेटा, तुम ऐसा कैसे सोचते हो कि अभी दुनियॉ में जा कर तुम कुछ कर सकते हो? तुम अभी बच्चे हो। जब तक तुम इस लायक न हो जाओ कि हमारे घर के पीछे लगा पाइन का पेड़[35] एक ही बार की ठोकर से गिरा सको तब तक तुमको बाहर नहीं जाना चाहिये।"

यह सुन कर जैक रोज सुबह उठ कर दौड़ता और दौड़ कर अपने दोनों पैरों से उस पाइन के पेड़ को मारता पर वह एक इंच भी हिल कर नहीं देता बल्कि वह खुद ही पीछे को पीठ के बल गिर पड़ता।

---

[33] Body Without Soul (Story No 6) – a folktale from Riviera Ligure di Ponente, Italy, Europe. Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[34] Jack – the name of the boy

[35] Pine trees are normally evergreen trees used as Christmas trees. They are of several types. See its one type above in picture.

आखिर एक दिन जब उसने अपनी पूरी ताकत लगा कर उस पेड़ को धक्का दिया और वह जमीन पर आ गिरा और उसकी जड़ें हवा में दिखायी देने लगीं तो जैक तुरन्त ही भागा भागा अपनी मॉ के पास गया और बोला — "देखो मॉ, आज मैंने वह पाइन का पेड़ नीचे गिरा दिया।"

उसकी मॉ ने वह गिरा हुआ पाइन का पेड़ देखा तो बोली — "मेरे बेटे, अब तुम जा सकते हो और जो तुम्हारे मन में आये वह कर सकते हो।"

सो जैक ने अपनी मॉ को विदा कहा और दुनियॉ में अपनी किस्मत आजमाने चल दिया। काफी दिनों तक चलने के बाद वह एक ऐसे शहर में आया जिसके राजा के पास एक घोड़ा था जिसका नाम था रौनडैलो[36]।

अभी तक उस घोड़े पर कोई सवारी नहीं कर सका था। लोग उस पर चढ़ने की बराबर कोशिश करते रहे पर वे उस पर अभी तक तो कभी चढ़ नहीं पाये थे। जब भी कोई उसके ऊपर चढ़ने की कोशिश करता तो वह घोड़ा बार बार उसको नीचे गिरा देता था।

जैक भी उस घोड़े को देखने गया तो उसने उसको देखते ही पहचान लिया कि वह घोड़ा अपने साये से डरता था[37] सो जैक ने

[36] Rondello – the name of the horse

[37] This is a similar incident shown in Mahaabhaarat Serial. Bheeshm in his adulthood controlled a horse in the same way – now which incident happened first?

खुद उसके ऊपर चढ़ने का प्रस्ताव रखा। राजा ने उसको सावधानी बर्त कर उस घोड़े पर चढ़ने की इजाज़त दे दी।

वह उस घुड़साल में गया जहॉ पर वह घोड़ा बॅधा हुआ था। वहॉ उसने घोड़े से कुछ बात की, उसको थपथपाया और फिर अचानक ही उसके ऊपर कूद कर चढ़ गया और चाबुक मार कर उसको बाहर धूप में ले गया। इस तरह से न तो वह अपनी परछॉई ही देख सका और न ही वह अपने सवार को नीचे गिरा सका।

जैक ने घोड़े की लगाम आराम से पकड़ ली, अपने घुटनों से घोड़े को दबाया और उसको ले कर उड़ चला। पन्द्रह मिनट में ही वह घोड़ा उसका मेमने की तरह पालतू हो गया। पर वह केवल जैक का ही पालतू था। वह अभी भी किसी और को अपने ऊपर नहीं चढ़ने देता था।

उस दिन के बाद से जैक राजा के यहॉ काम करने लगा। राजा भी उसको इतना पसन्द करने लगा था कि राजा के दूसरे नौकर उससे जलने लगे। एक दिन कुछ नौकरों ने मिल कर उसको मारने का जाल बिछाया।

इस राजा के एक बेटी थी। जब वह बहुत छोटी थी तो उसको बिना आत्मा का शरीर[38] नाम का एक जादूगर उठा कर ले गया था और तबसे उसके बारे में किसी ने कुछ भी नहीं सुना था।

[38] Translated for the words “Body Without Soul” named sorcerer

इस जाल के अनुसार वे नौकर लोग राजा के पास गये और बोले — "यह जैक अपनी बहुत डींगें हॉकता है तो क्यों न उसको राजकुमारी को आजाद कराने का काम सौंप दिया जाये।"

राजा के यह बात समझ में आ गयी। उसने जैक को बुलाया और उसको राजकुमारी का सारा किस्सा बताया। जैक को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि राजा के कोई बेटी भी थी।

ऐसा इसलिये हुआ कि जबसे उस जादूगर ने उस राजकुमारी को भगाया था तबसे किसी की यह हिम्मत नहीं हुई थी कि कोई उसके बारे में बात भी करे क्योंकि इस बात से राजा बहुत दुखी होता था।

कुछ दिन बाद तो बल्कि राजा ने यहॉ तक कह दिया था कि अगर कोई उसको वापस ला सकता है तो वापस ले आये नहीं तो उसकी बात भी करने की जरूरत नहीं है। उस दिन के बाद से राजा को शान्ति नहीं थी। इसलिये जैक को इस बात का कोई पता ही नहीं था।

जैक ने दीवार पर लगी हुई एक जंग लगी हुई तलवार मॉगी और अपने रौनडैलो पर सवार हो कर राजकुमारी की खोज में चल दिया।

जब वह जंगल पार कर रहा था तो वहॉ उसको एक शेर मिला। वह शेर उसको रुकने का इशारा कर रहा था। यह देख कर वह कुछ परेशान सा हो गया पर फिर भी वहॉ से उसको भागना भी

अच्छा नहीं लगा सो वह अपने घोड़े पर से उतरा और उस शेर से पूछा कि वह उससे क्या चाहता था।

शेर बोला — "जैक, जैसा कि तुम देख रहे हो यहाँ हम केवल चार लोग हैं – एक मैं, एक कुत्ता, एक यह गरुड़[39] और एक यह चींटी।

हमारे पास यह एक मरा हुआ गधा है जिसे हम आपस में बाँटना चाहते हैं पर बाँट नहीं पा रहे हैं। क्योंकि तुम्हारे पास तलवार है इसलिये तुम इस जानवर को काट कर हम सबको हमारा हिस्सा आसानी से दे सकते हो।"

जैक ने गधे का सिर काटा और चींटी को दिया और बोला — "यह लो, इस सिर में तुम आराम से रह सकती हो और इसमें से अपना खाना भी खा सकती हो।"

फिर उसने गधे के खुर काटे और कुत्ते को दे दिये — "लो ये खुर तुम लो। तुम इन खुरों को चाहे जब तक चबा सकते हो।"

उसके बाद उसने गधे के शरीर के अन्दर का हिस्सा आँत आदि निकाले और गरुड़ को दे दिये — "लो गरुड़, तुम इस गधे का यह अन्दर का हिस्सा लो। तुम इनको पेड़ पर ले जा सकते हो और वहाँ बैठ कर आराम से खा सकते हो।"

बाकी बचा हिस्सा उसने शेर को दे दिया जो उन चारों में से उसको मिलना ही चाहिये था।

---

[39] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

फिर वह अपने घोड़े के पास लौट आया और उस पर सवार हो कर अपने रास्ते चल दिया कि उसने पीछे से किसी को अपना नाम पुकारते हुए सुना।

उसने सोचा — "ओह, लगता है कि गधे को बॉटने में मुझसे कहीं कोई गलती हो गयी है।" पर ऐसा कुछ नहीं था।

शेर बोला — "तुमने हमारा बहुत बड़ा काम किया है और तुमने यह काम बहुत ही न्यायपूर्वक किया है। जैसे एक अच्छा काम किसी दूसरे अच्छे काम का बीज होता है तो मैं तुमको अपना एक पंजा देता हूँ। तुम जब भी इसको पहनोगे तो यह तुमको दुनियॉ के सबसे ज़्यादा भयानक शेर में बदल सकता है।"

इस पर कुत्ता बोला — "मैं तुमको अपनी मूँछ का एक बाल देता हूँ। जब भी तुम इसको अपनी नाक के नीचे रखोगे तो तुम दुनियॉ के सबसे तेज़ भागने वाले कुत्ते बन जाओगे।"

इसके बाद गरुड़ बोला — "यह मेरे पंखों में से एक पंख ले जाओ जो तुमको दुनियॉ का सबसे बड़ा और ताकतवर गरुड़ बना देगा।"

चींटी बोली — "मैं तुमको अपनी एक छोटी सी टॉग देती हूँ। जब भी तुम इसको अपने शरीर पर रखोगे तो तुम एक चींटी बन जाओगे – इतनी छोटी सी चींटी कि तुमको कोई देख भी नहीं पायेगा – आतशी शीशे[40] से भी नहीं।"

[40] Translated for the word "Microscope"

जैक ने वे चारों चीज़ें ले लीं, चारों को धन्यवाद दिया और वहॉ से चल दिया। उसे उन जानवरों की भेंटों पर विश्वास नहीं था कि वे काम करेंगी भी या नहीं।

यही सोचते हुए कि कहीं जानवरों ने उसके साथ कोई मजाक न किया हो वह आगे जा कर एक ऐसी जगह रुक गया जहॉ से वह उनको दिखायी नहीं दे सकता था।

वहॉ उसने एक एक कर के सब भेंटों को जॉचा – पहले वह शेर बना, फिर कुत्ता बना, फिर गरुड़ बना और फिर चींटी बना। सब कुछ जादू की तरह ठीक काम कर रहे थे। यह देख कर वह बहुत खुश हुआ और आगे चल दिया।

जंगल के उस पार एक झील थी। जंगल पार करके वह उस झील के पास आ गया। उस झील के किनारे पर ही उस बिना आत्मा के शरीर जादूगर का महल था।

वहॉ आ कर जैक ने अपने आपको गरुड़ में बदला और उड़ कर उस बिना आत्मा के शरीर जादूगर के महल के एक कमरे की एक बन्द खिड़की पर जा कर बैठ गया। वहॉ जा कर वह एक छोटी सी चींटी में बदल गया और उस कमरे की बन्द खिड़की से हो कर उस कमरे में घुस गया।

वह एक सुन्दर सा सोने का कमरा था जहॉ छत वाला एक पलंग पड़ा था और उस पलंग पर एक राजकुमारी सो रही थी। चींटी के रूप में ही वह राजकुमारी के ऊपर घूमने लगा।

वह उसके गाल पर भी गया। वह उसके ऊपर तब तक घूमता रहा जब तक कि वह जाग नहीं गयी। फिर उस लड़के ने अपने ऊपर से चींटी की वह छोटी टॉग हटा दी तो राजकुमारी ने अपने सामने एक बहुत सुन्दर नौजवान को खड़ा पाया।

यह सब देख कर वह आश्चर्य से कुछ बोलने ही वाली थी कि जैक ने अपने मुँह पर उँगली रख कर उसको चुप रहने का इशारा करते हुए कहा — "डरो नहीं। मैं तुमको यहॉ से आजाद कराने आया हूँ। तुमको उस जादूगर से बस यह मालूम करना है कि वह किस तरह से मर सकता है।"

उसने अभी इतना ही कहा था कि उसको किसी के आने की आहट सुनायी दी सो वह फिर से चींटी बन कर वहीं एक कोने में छिप गया।

जब वह जादूगर आया तो राजकुमारी ने उससे बड़े प्यार से बात की। उसको अपने पॉवों के पास बिठाया और उसका सिर अपनी गोद में रख लिया।

फिर वह बोली — "मेरे प्रिय जादूगर, मैं जानती हूँ कि तुम बिना आत्मा का शरीर हो और इसी लिये तुम मर नहीं सकते पर मुझे हमेशा डर लगा रहता है कि कोई भी कभी भी तुम्हारी आत्मा को ढूँढ लेगा और फिर तुमको मार देगा।"

जादूगर यह सुन कर बहुत ज़ोर से हॅसा और काफी देर तक हॅसता ही रहा। फिर बोला — "तुमको इससे डरने की बिल्कुल

जरूरत नहीं है मेरी रानी। मैं तुमको इसका भेद बताता हूँ। क्योंकि तुम यहाँ जेल में बन्द हो और तुम मुझे धोखा भी नहीं दे सकतीं इसी लिये मैं तुम्हें यह बात बता रहा हूँ।

मुझे मारने के लिये एक बहुत ही ताकतवर शेर चाहिये जो जंगल में रह रहे काले शेर को मार सके। उस मरे हुए काले शेर के पेट में से एक काला कुत्ता कूद कर बाहर आयेगा। वह कुत्ता भी इतनी तेज़ी से बाहर कूदेगा कि कोई सबसे ज़्यादा तेज़ भागने वाला कुत्ता ही उसको पकड़ सकता है।

फिर उस कुत्ते को मारना पड़ेगा। उस मरे हुए कुत्ते में से एक गरुड़ उड़ेगा जो दुनियाँ के सबसे ज़्यादा तेज़ उड़ने वाले गरुड़ों में से एक होगा। इसलिये उसको भी कोई नहीं पकड़ सकेगा।

पर अगर उसको किसी ने पकड़ लिया और उसे मार दिया तो उसको उसके पेट से उसे एक अंडा निकालना पड़ेगा जिसको मेरी भौंह के ऊपर तोड़ना पड़ेगा।

उस अंडे के टूटते ही उसमें से मेरी आत्मा निकल कर भाग जायेगी और मैं मर जाऊँगा। अब बताओ क्या तुम मेरे बारे में अभी भी चिन्तित होगी?"

"नहीं नहीं। अब मुझे तुम्हारे मरने की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं है क्योंकि इस तरह से तो तुमको कोई मार ही नहीं सकता।"

जैक ने यह सब उस कोने में बैठे बैठे सुन लिया। जादूगर के जाने के बाद वह वहाँ से चींटी के रूप में ही खिड़की से बाहर निकल गया और गरुड़ बन कर जंगल की तरफ उड़ गया।

वहाँ जा कर वह शेर में बदल गया और काले शेर को ढूँढने चला। काला शेर उसको जल्दी ही मिल गया। वह काला शेर काफी ताकतवर था पर जैक तो सबसे ज़्यादा ताकतवर शेर था सो उसने उस काले शेर को दबोच लिया और मार दिया। जैसे ही शेर मरा तो किले में जादूगर का सिर चकराने लगा।

शेर को मार कर जैक ने उसका पेट फाड़ा तो उसमें से एक तेज़ भागने वाला काला कुत्ता निकल कर भागा। जैक ने तुरन्त ही अपने आपको सबसे तेज़ भागने वाले कुत्ते में बदला और उस काले कुत्ते के पीछे भाग लिया।

उसने उस काले कुत्ते को भी जल्दी ही पकड़ लिया और उस पर कूद पड़ा। दोनों लुढ़कने लगे और एक दूसरे को काटने लगे पर आखीर में जैक ने उस काले कुत्ते को भी मार दिया। कुत्ते को मार कर जैक ने उसका पेट फाड़ा तो एक काला गरुड़ उसके पेट में से निकल कर उड़ गया।

जैक भी जल्दी से गरुड़ बन गया और उसके पीछे पीछे उड़ चला। उस काले गरुड़ को मार कर उसने उसके पेट में से काला अंडा निकाल लिया। अंडा निकालते ही जादूगर को किले में बुखार आ गया और वह अपने बिस्तर में सिकुड़ा सा लेट गया।

गरुड़ के पेट से अंडा निकाल कर जैक आदमी बन गया और वह अंडा ले कर राजा की बेटी पास वापस आ गया। राजा की बेटी उस अंडे को देख कर बहुत खुश हो गयी।

उसने पूछा — "पर तुमने यह सब किया कैसे?"

"इसमें कोई ऐसी खास बात नहीं थी। मैंने तो अपना काम कर दिया बस अब तुम्हारा काम बाकी है।"

राजा की बेटी वह अंडा ले कर जादूगर के सोने के कमरे में घुसी और उससे पूछा — "तुमको कैसा लग रहा है जादूगर?"

"उफ तुमने तो मुझे धोखा दे दिया।"

"देखो न मैं तुम्हारे लिये यह मॉस का पानी[41] ले कर आयी हूँ। इसे थोड़ा सा पी लो तो तुमको आराम मिलेगा और थोड़ी ताकत भी आ जायेगी।"

यह सुन कर जादूगर उठ कर बैठा हो गया और वह मॉस का पानी पीने के लिये झुका तो राजा की बेटी बोली — "लाओ इसमें मैं एक अंडा तोड़ कर और डाल दूँ इससे तुमको और ज़्यादा ताकत आयेगी।"

कह कर राजा की बेटी ने वह काला अंडा उस जादूगर की भौंह के ऊपर तोड़ दिया और वह बिना आत्मा का शरीर वहीं की वहीं मर गया।

[41] Translated for the word "Broth" – to make meat broth meat is boiled in some water and that water is used for other purposes. It is supposed to have many of meat qualities of the meat to give some strength.

जैक राजा की बेटी को ले कर राजा के महल आ गया और उसको उसके पिता को सौंप दिया। सब लोग राजकुमारी को देख कर बहुत खुश हो गये।

पर वे नौकर जिनकी यह चाल थी जैक को अपने काम में सफल देख कर केवल अपना मन मसोस कर रह गये। कुछ कर नहीं सके। उनकी चाल फेल हो गयी थी।

बाद में राजा ने अपनी बेटी की शादी जैक से कर दी।

13 मॉ का लाड़ला जैक[42]

एक बार की बात है कि कुछ हुआ, क्योंकि अगर वह न हुआ होता तो आज यह कहानी यहॉ नहीं होती। यह कहानी हमने तुम्हारे लिये रोमेनिया देश की कहानियों से ली है।

तो एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसके एक बच्चा था। यह बच्चा उसके सात बच्चों में सबसे छोटा था जो लौर्ड[43] ने उसको दिये थे। इसलिये यह बच्चा जन्म से ही उसके लिये अच्छी किस्मत लाने वाला था। उसका नाम रखा गया जैक।[44] क्योंकि हर नये नये अमीर बनने वाले का और बेवकूफों का नाम जैक ही रखा जाता है।

पिता अपने इस छोटे से जैक को बहुत प्यार करता था। वह तो बस उसकी ऑखों का तारा था। यह इसलिये भी था कि वह उसके सातों बच्चों में उम्र में सबसे छोटा, साइज़ में भी सबसे छोटा और गोल मटोल था।

पर उसके पिता को इन सब बातों से कोई मतलब नहीं था। वह तो बस घर में आता था जाता था। प्रगट हो जाता था गायब हो

[42] Mother's Darling Jack – a folktale from Romania, Europe. Taken from the Web Site: https://fairytalez.com/mothers-darling-jack/ By Mite Kremnitz

[43] Lord here means Jesus Christ

[44] Jack – name of the seventh child of the man.

जाता था। घर तो उसके लिये केवल सोने की जगह थी। घर में मॉ ही केवल घर की मालकिन थी।

वह एक को नहलाती तो दूसरे को खाना खिलाती तीसरे को मल मल कर नहलाती पर जैक अपनी मॉ का बेटा था। मॉ का प्यारा था अपनी मॉ का सबसे सुन्दर और होशियार बच्चा था।

कहावत है कि किसी को किसी का सब कुछ बन जाना भी ठीक नहीं है जैसे सबसे नीचे से सबसे ऊॅचा बनना या किसी बच्चे का घर के ऊपर राज करना। जैक रोज रोज बड़ा हो रहा था। और जितना वह बड़ा होता जा रहा था उतना ही वह झगड़ालू जिद्दी और अपनी इच्छाऐं मनवाने वाला होता जा रहा था।

सो घर में अक्सर, और अक्सर ही नहीं बल्कि हमेशा ही उस लड़के को ले कर कुछ न कुछ गुस्से की बातें होती रहतीं। जैक को हमेशा ही कुछ कठोर शब्द सुनने पड़ते पर उनका उसके ऊपर कोई असर नहीं पड़ता। उसको अक्सर ही सजायें मिलती रहतीं।

पर जैक तो सातों में सबसे छोटा था सो जो भी उसको कोई सजा देता उसी को सहना पड़ता न कि उसे जो गलती करता। अगर पिता उसको मारता तो मॉ उसके ऑसू पोंछती। अगर मॉ उसको मारती तो वह यह ध्यान रखती कि उसके पिता को यह पता न चल जाये।

यह एक बुरा उदाहरण है कि अगर कोई बच्चा कोई बर्तन तोड़ दे तो उसके टूटे हुए टुकड़े उसकी मॉ को उठाने पड़ें। इसका

मतलब कि घर में कुछ भी ठीक नहीं है। अब इसके बारे में और क्या कहना।

अब उसके बारे में बातें भी बन्द हो गयी थीं। जैक जितना बड़ा होता गया उतना ही वह घर में किसी की न सुनने वाला भी होता गया। और कहना न मानने की आदत कहना न मानने वाले के ऊपर बहुत भारी होती है।

अगर उसका पिता उसको कुछ सिखाना चाहता और कहता — "मेरे प्यारे जैक। देखो ऐसा कर लो यह ठीक है। बैलों को गाड़ी के आगे इस तरीके से लगाया जाता है। या कील को पहिये में इस तरह से ठोका जाता है या थैले इस तरह से उठा कर ले जाये जाते हैं।"

या वह उसको कुछ और सिखाने की कोशिश करता तो जैक का दिमाग कहीं और लगा होता और वह जवाब देता — "उॅह। मुझे अपने आप करने दो न।" और फिर एक के बाद एक कई "मुझे अपने आप करने दो न।" पीछे लग जाते।

जैक अब बहुत बड़ा हो गया था पर उसको यह नहीं मालूम था कि हल में हैन्डिल होते हैं। मिल ओखली मूसल से अलग है। गाय और बैल में क्या फर्क है। तो वह कोई भी काम ठीक से कर ही नहीं पाता था।

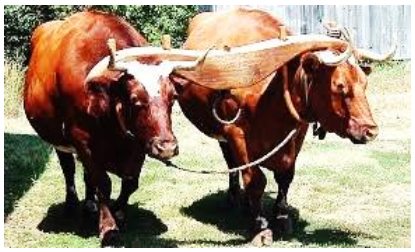

एक दिन पिता एक मेले में जाने के लिये तैयार हो रहा था। सब कुछ तैयार था सिवाय एक पिन के जिसे जूए[45] में लगना था।

जैक चिल्लाया — "पिता जी मैं भी आपके साथ आ रहा हूँ।"

पिता बोला — "अच्छा हो अगर तुम घर पर ही रहो। तुम कहीं बाजार में खो न जाओ।"

जैक फिर बोला — "नहीं पिता जी मैं भी आपके साथ जाना चाहता हूँ।"

"नहीं मैं तुम्हें नहीं ले जाऊँगा।"

"मैं जाऊँगा।"

"मैं तुम्हें नहीं ले जाऊँगा मैंने कहा न।"

हर आदमी जानता है कि जिद्दी बच्चे कैसे होते हैं अगर उनको किसी काम के लिये मना करो तो वे उसी काम को करते हैं। सो इस मामले में भी उसका पिता कुछ नहीं कर सका। उसने जैक को गाड़ी में बिठाया और मेले की तरफ चल दिया।

रास्ते में उसने जैक से कहा — "ध्यान रखना तुम मेरे साथ साथ ही रहना।"

"जी पिता जी।"

[45] Translated for the word "Yoke" – it is kept on the necks of the bullocks while they are harnessed to the cart.

परिवार की याद में यह शायद पहली बार था जब उसने "जी हॉ" बोला था।

जब तक वे गॉव की सीमा तक पहुँचे तब तक जैक उस गाड़ी में ऐसे बैठा रहा जैसे उसे किसी ने गाड़ी में कीलों से जड़ दिया हो। जब गॉव की सीमा आ गयी तो उसने अपना एक पैर बाहर निकाला और चारों तरफ देखा।

फिर वह गाड़ी से बाहर निकल आया और गाड़ी के सहारे खड़ा हो गया। फिर वह गाड़ी के पहिये देखने लगा। उसकी समझ में यह नहीं आया कि कोई पहिया अपने आप ही कैसे घूम सकता है और कैसे पहिये के अन्दर की डंडियॉ एक दूसरी के पीछे भागती हैं जो उसको अपनी जगह पर लगे लगे पहिये को आगे बढ़ने में सहायता करती हैं।

वे जंगल पहुँच गये। जैक ने अपना सिर ऊपर उठाया और उसका मुँह तो खुला का खुला रह गया। उसके दॉये बॉये जो पेड़ थे वे अपनी पूरी ताकत के साथ पीछे भागे जा रहे थे। उसने सोचा जरूर इनमें कोई जादू है।

जैक गाड़ी से नीचे कूद पड़ा तो फिर उसने अपने पैरों के नीचे जमीन महसूस की। लेकिन वह फिर मुँह खोले खड़ा रह गया। अब पेड़ तो खड़े हुए थे पर गाड़ी आगे और आगे बढ़ती जा रही थी। कुछ देर बाद वह चिल्लाया "पिता जी रुक जाइये रुक जाइये। ताकि मैं देख सकूँ कि पहिये कैसे घूमते हैं।"

पर अब तो डर के मारे उसके बाल ही खड़े हो गये क्योंकि अब उसको अपने चिल्लाने की आवाज चारों तरफ से गूँज गूँज कर आने लगी। यह सुन कर वह बहुत डर गया। उसका पिता बिना उसकी चीखों की तरफ ध्यान दिये हुए ही गाड़ी हॉके जा रहा था।

वह फिर चिल्लाया "पिता जी पिता जी।" उसने यह दस बार सुना। अब तो वह बहुत ज़्यादा डर गया। उसको लगा घर से ज़्यादा अच्छी जगह और कोई नहीं है सो वह पीछे की तरफ भागने लगा। उसके पीछे केवल धूल का बादल ही बादल था और कुछ भी नहीं। वह भागता गया भागता गया और फिर एक गलत मोड़।

अब तुम सोच सकते हो कि वे लोग कितने बदकिस्मत होते हैं जिनको अनुभव तो होता नहीं और वे अक्लमन्दों की सलाह मानते नहीं। जैक ने घर भागने की गलती की जबकि उसको जंगल में रास्ता नहीं मालूम था।

वह बहुत देर तक भागता रहा। फिर उसका भागना थोड़ा धीमा हो गया और आखीर में तो बिल्कुल बन्द हो गया। अब तो वह केवल चल ही रहा था एक जंगल के बाद दूसरा दूसरे जंगल के बाद तीसरा उसके बाद घास का मैदान। वह चलता रहा जब तक कि वह थक कर बिल्कुल चूर नहीं हो गया।

उसके मुँह से निकला "हे भगवान। मेरे ऊपर दया करो। मैं आगे से बड़ों का कहा मानूँगा।" जब उसके मुँह से ये शब्द निकले तो जरूर ही उसका दिल बहुत भारी रहा होगा।

उसके बाद वह आगे नहीं चल सका। कुछ दूर जा कर जंगल की सीमा पर एक गॉव था। जैक उसको देख कर खुश हो गया सो वह फिर आगे चल दिया और फिर तो वह गॉव के बीच में ही जा कर रुका।

वहॉ पहुँच कर वह घर घर गया और जैसे जैसे वह आगे बढ़ता गया उसने देखा कि वहॉ बहुत तरह के घर थे सिवाय उसके अपने जैसे घर के। अब तो वह खो गया था उसको नहीं पता था कि वह क्या करे। वह रोने लगा।

तभी एक आदमी अपने खेतों से एक चार बैल लगी गाड़ी ले कर घर वापस आ रहा था तो उसने उससे पूछा — "क्या बात है बेटे क्यों रो रहे हो।"

जैक ने उसको अपनी कहानी सुना दी। आदमी को उस पर दया आ गयी। उस दयालु किसान ने उससे उसका नाम पूछा तो लड़के न कहा "जैक।"

"पर तुम्हारे पिता का नाम क्या है।"

"पिता जी।"

"तुम किस गॉव में रहते हो।"

"गॉव में।"

इस तरह से जैक उसके किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे सका सो वह आदमी भी उसकी कोई सहायता नहीं कर सका। सो वह उसको अपने घर ले गया और उसको अपने यहॉ बैलों को

रास्ता दिखाने वाले की तरह से काम पर रख लिया क्योंकि उसको एक ऐसा ही लड़का चाहिये थे कि जब वह हल के हैन्डिल पकड़ कर हल चला रहा हो तो वह बैलों को रास्ता दिखाता चले।

इस तरह से जैक गॉव के इस लायक आदमी के घर में काम करने लगा जो जंगल के किनारे ही था।

पर जैक तो किसी काम का नहीं था क्योंकि जब भी उसको कुछ करने के लिये कहा जाता तो वह उस पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देता था। और जो आदमी कोई भी काम ठीक से करना नहीं जानता तो उसको डॉट तो पड़ती ही है।

एक दिन जैक का मालिक बाजार जाने की तैयारी में था। उसने जैक से कहा — "जैक ज़रा गाड़ी में तेल[46] ठीक से लगा देना। कल हम लोग बाजार जायेंगे।"

"ठीक है।" उसने तेल लिया और अपना सिर खुजाना शुरू कर दिया क्योंकि उसको तो मालूम नहीं था कि गाड़ी में तेल कैसे लगाया जाता है।

उसके पिता ने जब उसे यह बात बतायी थी तब उसने कभी भी यह ठीक से सुना ही नहीं। और ना ही कभी अपने पिता को तेल लगाते देखा जो वह देख कर समझ जाता। सो अब उसे पता ही नहीं था कि वह क्या करे।

[46] Translated for the word "Grease" – grease is a kind semisolid ointment type thing which helps a cart's wheels rotating easily.

आखिर जो कुछ भी उसकी अक्ल में आया जो कुछ उसे याद आया उसी के अनुसार उसने सोचा कि गाड़ी के शुरू का हिस्सा तो जूआ होता है तो वह लट्ठा है। तो उसने सोचा कि अगर उसे यह काम ठीक से करना है तो इसे गाड़ी के शुरू से ही शुरू किया जाना चाहिये।

सो सबसे पहले उसने जूए के हिस्सों में तेल लगाना शुरू किया। फिर कुछ और जगह तेल लगाने के बाद उसने देखा कि उसका तेल तो खत्म हो गया सो वह और तेल मॉगने के लिये गया।

कमरे में घुसने के बाद वह बोला — "मालिक मुझे थोड़ा सा और तेल चाहिये।"

"मगर तुम्हें और तेल क्यों चाहिये। वह तो इतना तेल था कि उसमें तो तीन गाड़ियों में तेल लगाया जा सकता था।"

तब जैक ने कहा कि वह तेल तो केवल जूए और डंडे आदि में लगाने में ही खत्म हो गया।

जब मालिक ने जैक के ये शब्द सुने तो उसने अपने सिर पर हाथ मारा जैक को कान से पकड़ा उसे बाहर ले गया और उसे इतना मारा कि वह ज़िन्दगी भर नहीं भूला कि उसको तो तेल गाड़ी के केवल ऐक्सिल में लगाना था।

खैर मॉ का लाड़ला बेचारा क्या करता। उसको तो मार खानी ही पड़ी उसको तो फिर ध्यान देना ही पड़ा नहीं तो वह गाड़ी मे तेल लगाना कैसे सीखता।

जब गाड़ी तैयार हो गयी तो उसमें बैल जोते गये। मालिक गाड़ी में बैठा पर जैक गाड़ी में पीछे की तरफ गुड़मुड़ी बन कर सिकुड़ा सा बैठा। मालिक की मार से वह इतना रोया था कि वह अभी तक सिसकियॉ भर रहा था।

उसके मालिक ने उसे डॉटते हुए कहा — "चुप रहो। मैं तुम्हारे मुँह से एक और शब्द न सुनूँ।"

जाने से पहले बस उनके ये ही आखिरी शब्द थे।

जैक गाड़ी में एक चूहे की तरह बैठा था। डर के मारे उसको तो सॉस भी ठीक से नहीं आ रही थी। बैठे बैठे वह थक गया तो वह फिर से पहियों की तरफ देखने लगा।

पर अब उसे अक्ल आ गयी थी सो अब उसे पहिये और पेड़ देख कर आश्चर्य नहीं हो रहा था। लेकिन फिर भी उसे कुछ ऐसा दिखायी दे गया कि उसे देख कर वह आश्चर्य में पड़ गया। वह उसे कुछ समझ नहीं सका।

उसने देखा कि वैसे तो जैसे जैसे पहिया गोल गोल घूमता था तो उसकी पिन उसमें से बाहर नहीं निकलती थी पर जब गाड़ी एक बड़े से पत्थर के ऊपर से हो कर निकली तो एक "क्लिर्र" की आवाज के साथ पिन ऐक्सिल से बाहर निकल कर जमीन पर गिर पड़ी।

देखने में तो उसको यह बड़ा अच्छा लगा पर लड़के की समझ में कुछ नहीं आया। वह मालिक से इस बारे में कुछ पूछना चाहता था पर मालिक ने तो उससे चुप रहने के लिये कह रखा था।

कुछ देर बाद उसका एक पेंच ढीला पड़ गया। जैक को लगा कि वह समझ गया कि ऐसा क्यों हुआ। वह फिर कुछ कहना चाहता था पर अपने मालिक की तरफ देख कर वह फिर चुप रहा गया। मालिक ने कहा था "एक शब्द और नहीं।"

पर एक बात उसकी समझ में आ गयी कि कील की वजह से अगर यह पेंच निकल गया तो इस पेंच के न होने की वजह से यह पहिया इस गाड़ी में से निकल जायेगा।

मुश्किल से अभी उसकी यह बात समझ में आयी ही थी कि "कैक"। पहिया गाड़ी से बाहर निकल कर धूल में जा पड़ा और गाड़ी के पीछे पड़ा रह गया।

गाड़ी कुछ दूर तक तो तीन पहियों पर चली फिर लड़खड़ा गयी। डंडे के दो टुकड़े हो गये। अब तो उनकी हालत बहुत खराब थी।

जैक डर के मारे चिल्लाया — "यह हो गया। क्या मैंने यह नहीं कहा था कि ऐसा ही होगा?"

अब हम इस बारे में कुछ और लिख कर अपना समय बरबाद नहीं करेंगे। किसान को इतना गुस्सा आया कि बस... सड़क के बीच में टूटे हुए डंडे के साथ रुकना कोई मजाक नहीं है।

किसान ने जैक को पकड़ा और उसको फिर मार लगायी और कहा कि वह वहॉ से भाग जाये ताकि वह उसको और ज़्यादा परेशान न कर सके।

किसान वास्तव में गलत था क्योंकि उसी ने तो जैक से बोलने के लिये मना किया था। पर इसमें जैक की भी गलती थी। अगर वह हमेशा कहा मानता तो वह यह बात बहुत पहले ही सीख गया होता कि इस बात को मालिक को उसे क्यों नहीं बताना चाहिये था। वह कुछ ज़रा ज़्यादा ही कहना मानने वाला हो गया था। और यह भी ठीक नहीं है।

जैसे भी वह रख सका किसान ने अपनी यात्रा जारी रखी पर जैक को वह सड़क के बीच में पैदल खड़ा छोड़ गया। पर बाद में उसे दुख हुआ। उसने सोचा कि वह तो उसने उससे मजाक में कहा था पर अब वह बेचारा वहॉ अकेला खड़ा क्या कर रहा होगा।

कहीं उसने कोई ऐसा रास्ता न ले लिया हो जिसे वह जानता न हो और वह सोचता हो कि वह उस रास्ते पर चल कर घर पहुॅच जायेगा।

जैक ने फिर से गलत रास्ता ले लिया था वह फिर से जंगल और मैदानों से हो कर चल दिया। वह बहुत दूर तक चलता रहा जब तक कि उसके पैर जवाब नहीं दे गये। इस बार वह एक सुन्दर से मैदान में बसे एक गॉव में निकल आया।

गॉव के बाहर एक आदमी अपनी भेड़ों की देखभाल कर रहा था। जैक ने उससे पूछा — "आप कैसे हैं?"

आदमी बोला — "मैं ठीक हूॅ तुम कैसे हो। जल्दी जल्दी बड़े हो मेरे बच्चे।"

आगे बात बढ़ती गयी और जैक ने उसे अपनी सारी कहानी बता दी – शुरू से ले कर आखीर तक। किसान उसकी कहानी सुन कर बहुत खुश हुआ क्योंकि उसी समय उसको एक गड़रिये की जरूरत थी जो उसकी भेड़ों को चरा लाये पानी पिला लाये और उनकी देखभाल करे जिससे वे किसी और के भेड़ों के झुंड में न मिल जायें या खो न जायें।

वे एक खास नस्ल की भेड़ें थीं और वह उनको किसी तरह की कोई तकलीफ नहीं पहुॅचाने देना चाहता था। ऐसा कहा जाता था कि ऐसी भेड़ें केवल एक बादशाह के पास ही थीं और उसी से इस किसान ने एक मेमना लिया था।

सो वे वे वाली भेड़ें थीं। कोई सोच सकता है कि वे कितनी सुन्दर भेड़ें होंगी क्योंकि वे एक बादशाह के मेमने की सन्तान थीं।

जैक बहुत खुश हुआ क्योंकि उसकी खुशकिस्मती से उसको यह जगह मिल गयी थी। उन लोगों का सौदा हो गया और जैक एक गड़रिया हो गया।

आदमी ने कहा — "तुम सारा दिन भेड़ों की देखभाल करना। उनको घाटी में नीचे नदी पर पानी पिलाने ले जाना और जब अॅधेरा

होने लगे तब तुम इनको वापस ले आना। अगर तुम्हें ठंडा लगे तो भेड़ों के बाड़े में घुसने वाले दरवाजे पर आग जला लेना ताकि भेड़ें ठंड में जम न जायें। उनको बाड़े में छत के नीचे ले जाना।"

किसान की ये हिदायतें साफ साफ थीं। जैक ने उसको विश्वास दिलाया कि वह जैसा उसने कहा है वैसा ही करेगा। अगले ही दिन से वह भेड़ों को बाहर ले जाने लगा।

सारा दिन उसने भेड़ों की देखभाल की। जब उसको खुद को प्यास लगी तो वह उनको नदी पर पानी पिलाने के लिये ले गया। जब रात को अँधेरा हो आया तो उसने उनको ला कर बाड़े में अन्दर कर दिया।

यह बाड़ा भी अजीब था। जैक ने ऐसा बाड़ा पहले कभी नहीं देखा था। उसका बाड़ा बुनी हुई विलो की टहनियों से बना हुआ था। उसकी छत झाड़ियों से छवाई हुई थी ताकि उसमें से बारिश अन्दर आ कर जानवरों को कोई नुकसान न पहुँचा सके।

पर उसके एक तरफ एक खुली जगह छूटी हुई थी जिसकी छत सरकंडे[47] की थी और वह लट्ठों पर टिकी थी। जैक ने अपनी खोज पर खुश होते हुए सोचा कि यही इस बाड़े के अन्दर घुसने का दरवाजा होगा।

[47] Translated for the word "Reed". See its picture above.

जब उसे ठंड लगी तो उसने आग जलाने की सोची। उसने सोच कि सरकंडे की छत के नीचे आग जलाना ठीक रहेगा। सो उसने आग वहीं जला ली। अब आग तो बहुत बढ़िया चीज़ है। ठंड में जैक उसके पास बैठ कर आग की गर्मी लेने लगा।

कि तभी उसे याद आया कि उसके मालिक ने कहा था कि अगर उसे ठंड लगे तो वह भेड़ों को भी छत के नीचे ही ले आये जिससे कि वे भी ठंड से बच जायें।

यह तो सच था। उसने सोचा कि इससे ज़्यादा अच्छी गर्म जगह और कौन सी होगी सो उसने वही किया जो उसके मालिक ने कहा था। उसने सबसे बढ़िया भेड़ को चुना पकड़ा जिसके गले में घंटी बॅधी हुई थी और उसे छत के नीचे धकेल दिया।

पर वहॉ तो आग जल रही थी सो वह भेड़ तो उसकी गर्मी नहीं सहन कर सका और उसके शरीर के ऊपर की सारी ऊन जल गयी।

यह देख कर जैक चिल्लाया — "ओहो अब मेरी समझ में आया कि हर भेड़ को आग में से जाना चाहिये ताकि वे ठंड में जम न पायें।"

उसने सोचा कि वह ठीक कर रहा था उसने सारी भेड़ों को उस छत के नीचे धकेल दिया।

अचानक उसने देखा कि बाड़ा छत सरकंडे की छत सबने आग पकड़ ली थी और वह सब जगह बड़ी खुश खुश जल रही थी। जैक चुपचाप शान्त खड़ा था। उसने कभी पहले ऐसा दृश्य देखा

नहीं था सो वह मालिक के हुक्म मान कर बहुत खुश हो रहा था। क्योंकि वह यह भी देख रहा था कि अब भेड़ें आग के पास ठंड महसूस नहीं करेंगी।

सो वह बड़े सन्तोष के साथ अपने काम को देखता रहा जिसे उसने अभी अभी पूरा किया था। बस उसकी एक ही इच्छा थी कि अगर उसका मालिक यहॉ होता... तो वह कहता कि मैंने कितनी अच्छी तरह से भेड़ों की देखभाल की।

और उसकी इच्छा पूरी हुई। उसका मालिक तभी मेज पर खाना खाने बैठा था – अपनी रोटी और प्याज। क्योंकि उस दिन उसके उपवास का दिन था।

उसकी निगाह अपनी खिड़की के बाहर गयी तो उसने देखा कि बड़े ज़ोर की आग लगी हुई है। कुछ पल तो वह उसे देखता रहा फिर उसे लगा कि यह आग तो उसके अपने बाड़े की तरफ है।

यह उसको बड़ा अजीब लगा। अपने मुॅह में भरे हुए कौर के साथ वह अपने घर से अपनी भेड़ों के बाड़े की तरफ भाग लिया। पहले वह जल्दी जल्दी चला फिर भागा और पहाड़ी पर ऊॅचे चलता चला गया।

हॉफता हॉफता वह अपने बाड़े पर पहुॅचा तो उसने देखा कि उसकी तो छत ही जल गयी है। उसकी शाही भेड़ों की नस्ल सब भुन गयी है। उसको लगा जैसे वहॉ सब जगह कटे हुए तरबूज पड़े हों।

यह तो बहुत बुरा काम हुआ। कितना बुरा काम था। जैक ने यह सब कितनी बदमाशी की थी। पर वह खुशकिस्मत था कि केवल पिट कर ही वहॉ से निकल भागने में कामयाब हो गया।

तो यह हुआ उसके साथ।

किसान ने उस चालाक गड़रिये को पकड़ लिया और इतना पीटा कि जैक को लगा कि वह तो अब मर ही जायेगा। किस्मत से वह उसके हाथ से फिसल गया और अपनी पूरी ताकत से वहॉ से भाग लिया। उसने तब तक पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा जब तक वह जंगल नहीं पहुँच गया।

लेकिन अब वह वहॉ क्या करे। जो लोग कुछ जानते नहीं हैं या कुछ सीखते नहीं है उनका यही हाल होता है। अगर वह ठीक होता तो घर में बैठा आराम से जौ खा रहा होता और दूध पी रहा होता।

जैक जंगल में चलता रहा चलता रहा। कभी वह दॉये मुड़ जाता तो कभी बॉये। कभी आगे चला जाता तो कभी पीछे। कभी इधर जाता तो कभी उधर। इसी तरह से वह बेचारा अपने घर का रास्ता ढूँढता रहा।

वह इतना भूखा और प्यासा था कि वह जमीन पर गिरे हुए ओक के फल खा लेता और पत्तियों पर पड़ी ओस पी लेता था। पर उसके बाद वह थक गया और कुछ डर भी गया।

भगवान उसका भला करे जो जंगल में रास्ता भूल जाये।

जंगल में चलते चलते उसे रात हो गयी। जंगल का अँधेरा उसको डराने लगा। जब वह भालू भेड़िये या किसी और जंगली जानवर की आवाज सुनता तो उसके शरीर के बाल खड़े हो जाते और डर के मारे उसके सारे शरीर में सिहरन दौड़ जाती।

अब यहाँ से तो वह कहीं बच कर भाग नहीं सकता था। तभी उसे एक बड़ा सा पेड़ दिखायी दिया। उसने देखा कि उसमे काफी गहरा एक गड्ढा सा बना हुआ है।

उसने सोचा यही ठीक है यहाँ वह जंगल के जंगली जानवरों से छिप कर अपनी रात गुजार सकता है। जब हम बड़े बड़े खतरों से गुजर जाते हैं तो फिर छोटे खतरे हमारे लिये क्या मानी रखते हैं।

सो वह उस खोखले तने में घुस गया और सो गया। जैक बहुत थका हुआ था उसने सपने में देखा कि वह घर में जौ और दूध माँग रहा है। कि तभी पिफ़ पैफ़ पफ़ की आवाज सुन कर वह चौंक कर उठा बैठा।

हुआ क्या था कि पास ही में बारह बड़े भयानक दिखायी देने वाले डाकू वहाँ आ कर इकट्ठे हुए थे। उन्होंने आग जलायी खाने के लिये एक बैल भूना और पीने के लिये बढ़िया शराब निकाली।

जब जैक ने बैल को आग पर भुनते हुए देखा तो उसकी खुशबू से उसकी भूख जाग गयी। उस समय वह बहुत खुश होता अगर

वह एक लकड़ी खाने वाला कीड़ा बन जाता और सारा पेड़ ही खा जाता।

वह बेचारा लड़का अपने अनुभवहीन जीवन में यह नहीं जानता था कि डाकू कितने खतरनाक होते हैं। सो वह पेड़ के खोखले से बाहर निकल आया और उनकी तरफ बढ़ गया। पर यह कोई अक्लमन्दी का काम नहीं था। डाकुओं से खिलवाड़ करना कोई अच्छी बात नहीं होती।

जैक ने उनसे कहा कि उसको भूख लगी है वह भी कुछ खाना चाहता है।

डाकुओं ने उसको घूर कर देखा और फिर अपने अपने चाकू और तलवारें निकाल कर उन्हें तेज़ करने लगे ताकि वे उसे इससे भी पहले मार सकें जितनी देर में कोई "जैक रोबिन्सन" कहे। डाकुओं का यही तरीका है। उनको यह सब करने के लिये किसी रस्म की जरूरत नहीं पड़ती।

अचानक एक डाकू बोला — "रुको दोस्तों। क्या यह लड़का हमारे लिये किसी फायदे का नहीं हो सकता?"

दूसरे ने पूछा — "कैसे।"

पहला डाकू बोला — "शायद यह सातवॉ बच्चा हो और अगर यह है तो यह आयरनवौर्ट[48] ढूँढने में हमारी मदद कर सकता है।"

सब चिल्लाये — "हॉ यह तो ठीक है।"

[48] Ironwort – a kind of plant native to Mediterranean region

सो उन्होंने जैक से पूछा और यह सुन कर बहुत खुश हुए कि वह अपने माता पिता के सात बच्चों में से सातवॉ बच्चा है।

इस सवाल से उनका मतलब यह था कि उनको यह मालूम था कि बादशाह ने एक सौदागर से सोने के रूप में बहुत सारी सम्पत्ति हासिल की है जिसको उसे बहुत दिनों से बादशाह को देना था। और ये नीच लोग उसको चुराना चाहते थे।

पर बादशाह ने अपने उस खजाने को सात लोहे के मजबूत दरवाजों के अन्दर रखा हुआ था। हर दरवाजे पर सात सात ताले लगे हुए थे जिनको कोई खोल नहीं सकता था। इसलिये यह एक असली और मुश्किल मामला था जिसे करने के लिये बहुत सावधानी की जरूरत थी।

इसी लिये डाकू लोग एक जादूगरनी के पास गये थे कि या तो वह उनको कोई तरकीब बता दे या फिर कोई ऐसा ताबीज़ दे दे जिससे ये लोग सात दरवाजों के अन्दर बन्द उस खजाने को लूट कर ला सकें।

जादूगरनी ने कहा कि सिवाय आयरनवौर्ट के और कोई चीज़ उन दरवाजों को नहीं खोल सकती। और यह आयरनवौर्ट एक ऐसा भोलाभाला बच्चा ही ढूँढ सकता है जो अपने माता पिता का सातवॉ बच्चा हो। वह यह काम सुबह सवेरे सूरज निकलने से पहले ही करेगा जब यह पेड़ दूसरे पेड़ों के बीच चमक रहा होगा।

जिस किसी के पास भी यह पौधा हो वह अपनी एक उँगली में कट लगाये उस पौधे को उस कट में रखे और उसे वहीं रखा रहने दे जब तक घाव भरे। ताकि वह उसकी उँगली में ही रहे। इसके बाद कोई भी लोहे की चीज़ – ताला जंजीर दरवाजा उसके कहने पर खुल जायेगा।

अब ऐसा पौधा तो डाकुओं के लिये केवल आनन्द की ही नहीं बल्कि बड़े फायदे की चीज़ थी। सो उन्होंने जैक का बड़े आदर के साथ स्वागत किया उसको खिलाया पिलाया उसके लिये मुलायम बिछौना बिछाया जहाँ वह आराम से और ठीक से सो सके। पर उन्होंने साथ में यह भी तय कर लिया कि अगर वह उस पौधे को न पा सका तो वे उसको मार देंगे।

जैक बेचारा सपने में सारी रात जंगल में उस पौधे को ढूँढता फिरा। सुबह सवेरे ही डाकुओं ने जैक को जगा दिया और उसे वह पौधा ढूँढने के लिये भेज दिया।

जैक सारे में अपने चारों हाथों पैरों पर चलता हुआ उस बूटी को ढूँढने लगा। इस हालत में जब वह उस बूटी को ढूँढ रहा था उसने तुरन्त ही एक पौधा देखा जो चमक रहा था। यह वही पौधा था जो उसको चाहिये था। वह आयरनवौर्ट था।

डाकुओं में एक डाकू काना था जिसको एक बार शाही तहखाने में बन्द कर दिया गया था। वह किसी तरह से वहाँ से भाग निकला था पर हथकड़ियाँ बेड़ियाँ अभी भी उसके शरीर पर थीं।

बाहर आ कर उसकी जंजीरें तो काटी जा सकीं पर उसकी हथकड़ी किसी खास लोहे की बनी थी जिसको आग गला नहीं सकी और कोई रेती भी नहीं घिस सकी।

जैक ने अपने हाथ में उस पौधे से उसकी हथकड़ी को छुआ तो उसकी हथकड़ी टूट कर जमीन पर गिर पड़ी। यह देख कर वह डाकू तो बहुत खुश हो गया बोला — "भगवान तुम्हें खुशकिस्मत बनाये। तुमने मुझे इस बेकार की चीज़ से आजाद कर दिया। भला हो तुम्हारा बेटा।"

पर जब डाकुओं के कप्तान ने उससे वह बूटी ले कर उस डाकू की दूसरी हथकड़ी खोलने की कोशिश की तो उससे कुछ नहीं हुआ। उसकी मेहनत बेकार गयी। वह लोहा उसका हुक्म ही नहीं मान रहा था। जादूगरनी ने उसको यह नहीं बताया था जो आदमी उसको ढूँढेगा केवल वही उसको इस्तेमाल कर सकता है।

इस तरह डाकुओं ने देखा कि आयरनवौर्ट उनके लिये तो किसी काम की नहीं। यह देख कर डाकू बहुत नाराज हुए और उस लड़के को मारने के लिये फिर से अपने चाकू और तलवारें तेज़ करने लगे।

तभी वह काना डाकू चिल्लाया — "रुक जाओ। तुम लोग कह रहे थे कि अगर उसने हमारे लिये पौधा ढूँढ लिया तो तुम उसे नहीं मारोगे। उसने वह पौधा ढूँढ लिया है तो अब हमें उसे क्यों मारना चाहिये।"

और उन्होंने उसको नहीं मारा क्योंकि डाकू अपनी बात के पक्के होते हैं चाहे वह कोई अच्छी बात हो या बुरी। जब उन्होंने कोई बात कह दी तो वे उसे करेंगे।

पर इस बात से डरते हुए कि जैक उनको कहीं बादशाह के सिपुर्द न कर दे उन्होंने उससे छुटकारा पाने का एक और रास्ता खोज लिया।

उन्होंने क्या किया? उन्होंने जैक को पकड़ लिया और एक खुले बक्से में रख दिया और फिर उसे बन्द कर दिया। उसको चारों तरफ से लोहे की पट्टियों से बॉध दिया और वहीं छोड़ कर चले गये। उन्होंने उसके साथ बहुत बुरा किया।

सो पहले तो जैक अच्छे से बुरी हालत में पहुॅचा था और अब तो बुरी से और बुरी हालत में पहुॅच गया। जब तक उसको किसी ने शराब के बक्से में बॅधा हुआ नहीं पाया गया। उस बेचारे के साथ पता नहीं क्या क्या होना था। ज़रा सोचो शराब के बक्से में बन्द।

यहॉ तो अब सब कुछ खत्म हो गया। जैक रोने लगा चीखने लगा जब तक कि भूखे भेड़ियों ने उसको नहीं सुन लिया। वे यह सोचते हुए वे तुरन्त ही दौड़े आये कि वे उसको मार कर खा जायेंगे। पर वे उसका कुछ न बिगाड़ सके बस होठ चाटते ही रह गये।

जैक तो बक्से में बन्द था। जैसे ही उसको लगा कि वहाँ भेड़िये मौजूद हैं उसने छेद में से बाहर देखा और बिल्कुल बिना हिले डुले चुपचाप बैठ गया।

यह देख कर भेड़िये बचे हुए बैल के टुकड़ों पर टूट पड़े। एक भेड़िये ने जो उन सबमें बड़ा और भयानक था एक हड्डी उठायी और जैक के बक्से के पास जा कर बैठ गया। जैक तो साँस भी मुश्किल से ले पा रहा था।

अचानक जैक ने देखा कि भेड़िये की बालों वाली पूँछ उसके छेद से हो कर अन्दर तक आ रही थी। यह देख कर तो वह बहुत ही डर गया। उसकी पूँछ और अन्दर तक आती जा रही थी और जैक और ज़्यादा परेशान होता जा रहा था।

आखिर भेड़िये ने अपने आपको हिलाया और वहाँ से कुछ दूर जा कर बैठ गया। पर इस तरह बैठने से उसकी सारी की सारी पूँछ अन्दर आ गयी और जैक की नाक छूने लगी। यह तो उसके साथ बहुत बुरा हो रहा था।

वह डर के मारे काँप उठा। इसी डर में उसने उसकी पूँछ अपने दोनों हाथों से अपनी पूरी ताकत के साथ पकड़ ली और पकड़े रहा। यह देख कर भेड़िया भी बहुत डर गया और वहाँ से भाग लिया। अब भेड़िया आगे आगे और बक्से में बन्द जैक उसके पीछे पीछे।

यह तो एक देखने वाला दृश्य था। भेड़िया तो अब बहुत ही भयानक हो गया था। उसके पीछे पीछे बक्सा पेड़ों से टकराता चल जा रहा था। भेड़िया पहाड़ी के ऊपर जा रहा था घाटी में नीचे जा रहा था बक्सा उसके पीछे पीछे जा रहा था और जा रहा था उसमें बैठा जैक। यह सब कुछ तो देखने लायक ही था न।

अचानक बक्सा एक दीवार से टकराया और खुल गया। भेड़िया तो भागता ही रहा पर जैक को अपना घर मिल गया था। वह अभी भी अपने हाथ में भेड़िये की पूँछ पकड़े थे हालाँकि वह अब टूट गयी थी।

तो माँ के लाड़ले जैक के साथ यह सब हुआ। कौन जानता है कि उसके साथ कुछ और भी हुआ हो जिन्होंने उसकी कहानी में कुछ और जोड़ दिया हो पर अभी हमें उसका पता नहीं।

List of Stories of “Sour Sweet Jack”

1. Lazy Jack
2. Jack and His Golden Snuff-box
3. Jack and the Beanstalk
4. How Jack Made His Fortune
5. Jack and His Wonderful Hen
6. Soap Soap Soap
7. Jack the Cunning Thief
8. Lazy Jack
9. I W'll Be Wiser Next Time
10. Jack and His Comrades
11. Jack and His Master
12. Body Without Soul
13. Mother's Darling Jack

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस करके एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स करके **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022